सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 9 ★ मूल्य : 10 रु.
10 सितम्बर, 2010 ★ भाद्रपद, 2067

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

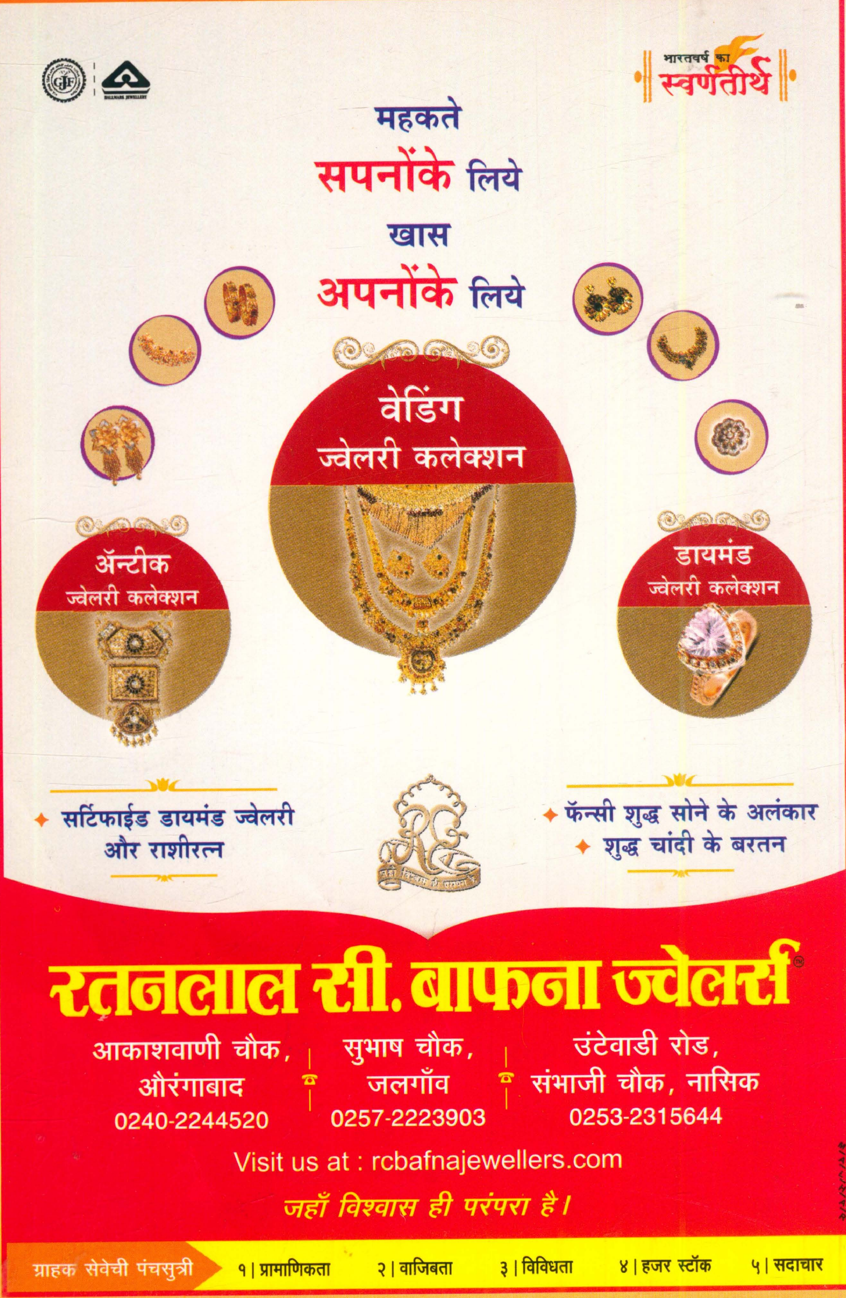

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636761

संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

जहा सागडिओ जाणं,
समं हिच्चा महापहं।
विसमं मग्गमोइण्णो,
अक्खे भग्गंमि सोयइ ।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.14

गाड़ीवान सुपथ छोड़ जिम,
कुपथ शकट को ले जाता।
विषम मार्ग में धुरी टूटने,
पर वह चिन्तित हो जाता ।।

सितम्बर, 2010
वीर निर्वाण संवत्, 2536
भाद्रपद , 2067

वर्ष 67 अंक 9

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	आत्म-साधना और आचार्य हस्ती	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	[illegible]	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	अहंकार नहीं, समर्पण हो	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	कैसा है विश्वास आपका?	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	19
	सन्तों की शरण से सुधरता जीवन	-श्री मनीषमुनि जी म.सा.	27
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (9)	-श्री सम्पतराज चौधरी	30
अंग्रेजी-स्तम्भ-	[illegible]esmen in Princely State of Rajasthan	*-Dr. A.L. Gandhi*	37
नारी-स्तम्भ-	रिश्तों का संसार : परिवार	-आचार्य महाप्रज्ञ	41
चिन्तन-	क्या दूध मांसाहार है?	-श्री धर्मेन्द्रमुनि जी म.सा.	47
तत्त्व ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (61)	-श्री धर्मचन्द जैन	51
उपन्यास-	सुबह की धूप (18)	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	55
युवा-स्तम्भ-	लक्ष्य बनाकर बढ़े आगे	- श्री दिलीप जैन	63
कथानक-	शेर बना शाकाहारी (3)	-श्रीमती पारसकंवर भण्डारी	66
विशिष्ट-प्रसंग-	तितिक्षाश्रीजी की तपस्या	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	70
श्रद्धा-संस्मरण-	गुरु हस्ती का सान्निध्य : एक बड़ा पुरस्कार	-श्री श्रीपाल देशलहरा	73
स्वास्थ्य-विज्ञान-	विधिवत् गुरुवंदन से स्वास्थ्य लाभ	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	76
बाल-स्तम्भ-	दो सार्थवाह	-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.	80
विचार-	दुरुपयोग-सदुपयोग	-श्री नितेश नागोता जैन	46
	अभिमान और स्वाभिमान	-श्री महेन्द्र तिल्लानी	50
	अनमोल वचन	-महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा.	69
	हावड़ा ब्रिज पर गुटखे का प्रभाव	-संकलित	87
	निन्दा-प्रशंसा से रहें अप्रभावित	-श्री दर्शन जैन	118
कविता/गीत-	कषायों को छोड़कर, सरलता अपनाइए	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	25
	मन की उलझन को सुलझा दो	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	26
	दृष्टिकोण	-डॉ. रमेश मयंक	36
	आचार्यप्रवर! तुमको प्रणाम	-श्री विजयमल मेहता	45
	दो क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.	62
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (26) का परिणाम		84
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (9)		88
साहित्य-समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	94
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		95
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		120

सम्पादकीय

आत्म-साधना और आचार्य हस्ती

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

हम सुख के साधनों से सदैव आकृष्ट होते हैं तथा दुःख के निमित्तों से दूर भागते हैं, क्योंकि हमें सुख अभीष्ट है, दुःख नहीं। सुख-दुःख का कारण हम बाह्य वस्तुओं, व्यक्तियों एवं परिस्थितियों को समझते हैं। इसलिए आत्म-साधना का प्रारम्भ नहीं हो पाता। जो सुख-दुःख का कारण अपने से भिन्न को मानता है, वह उनके ही संग्रह या वियोग की चिन्ता करता है, स्वयं में परिवर्तन लाने का तनिक भी प्रयत्न नहीं करता।

प्रायः मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपने पुरातन संस्कारों के कारण बाह्य वस्तु, व्यक्ति और परिस्थिति में सुख और दुःख समझता है। जब ये अपने अनुकूल होते हैं तो इन्हें सुख का साधन मानता है तथा जब ये प्रतिकूल होते हैं तो इन्हें दुःख का निमित्त समझता है। मनुष्य सुख के निमित्तों की खोज में रहता है। उनका संग्रह करता है और उनमें आसक्त हो जाता है। उनको सदैव अपने लिए सुरक्षित रखना चाहता है। वह उस समय इस सत्य को हृदय से अंगीकार करने के लिए तत्पर नहीं होता कि लाख प्रयत्न करने पर भी कोई वस्तु, व्यक्ति और परिस्थिति स्थायी नहीं रहती। इनकी नश्वरता और परिवर्तनशीलता अवश्यम्भावी है। यह जगत् का सत्य है। इस सत्य को स्वीकार करने पर सुखद समझी जाने वाली वस्तुओं, व्यक्तियों और परिस्थितियों में आसक्ति उत्पन्न नहीं होती। यदि पूर्व संस्कारों से उत्पन्न होती भी है तो उसे समाप्त करने की योग्यता का विकास व्यक्ति में उत्पन्न हो जाता है।

आत्म-साधना में स्वयं को ही साधन बनाया जाता है। बाह्य साधन भी उसी में सहायक बनते हैं। आत्मसाधक में यह समझ विकसित हो जाती है कि संसार के विषय-भोग के साधन एवं परिस्थितियों के प्रति आकर्षण भ्रान्त है। उसको यह अनुभव होता है कि अनुकूल परिस्थिति की अपेक्षा सत्य को समझने में प्रतिकूल परिस्थिति अधिक सहायक होती है। यह नियम है कि सुख की

अपेक्षा दुःख साधक के लिए अधिक हितकारी होता है, वह उसे सजग बनाये रखने में सक्षम निमित्त बनता है। प्रायः मनुष्य अनुकूल वस्तु, व्यक्ति और परिस्थिति को सुरक्षित रखना चाहता है और उसके विपरीत वह प्रतिकूल व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिति के शीघ्र वियोग की कामना करता है। संसार में या तो संयोग है या वियोग। संयोग अनुकूल और प्रतिकूल दोनों का होता है। इसी प्रकार वियोग अनुकूल का भी होता है और प्रतिकूल का भी। यह अनुकूलता और प्रतिकूलता विषय सुखों की अपेक्षा से है। अथवा हमारी प्रतिष्ठा और महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति से सम्बद्ध है।

साधक के लिए अनुकूलता और प्रतिकूलता समान महत्त्व रखती है। वह संयोग और वियोग दोनों को साधना का अङ्ग मानता है। जो गृहस्थ दुःख की स्थितियों से दूर भागता है, उनमें धैर्य और साहस का परिचय नहीं देता है वह आत्मयोग्यता का विकास नहीं कर पाता।

आज संसार में मनोवैज्ञानिक रीति से मनुष्य को यह प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि वह ऐन्द्रियक सुख के साधनों का संग्रह करे। उनके लिए अधिक से अधिक मूल्य चुकाए तथा अधिकाधिक अर्जन करे। इसके साथ ही यह भी भ्रामक समझ दी जा रही है कि जो इन सुविधाओं से रहित है उसका जीवन व्यर्थ है। यह समझ कोई नहीं देता कि भारत में कबीर एक जुलाहा था, किन्तु विचारों से वह कितना समृद्ध था। कबीर ने भारतीय चिन्तन की डावांडोल परम्परा को झकझोरा तथा सही दृष्टि प्रदान की। वह एक धोती और कुर्ते में भी उतना प्रसन्न था जितना आज कोई अरबपति भी नहीं। हम वस्तुओं से व्यक्तियों को समृद्ध बनाना चाहते हैं, जबकि यह समृद्धि वैचारिक समृद्धि के अभाव में स्थायी आनन्द का हेतु नहीं होती। ये परस्पर कलह, द्वेष और घृणा की भी निमित्त होती हैं।

गरीबी हटाने का नारा सरकार देती रहती है तथा गरीबों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाती है, किन्तु इसके साथ यह भी बात पहुँचानी चाहिए कि हम कम से कम आवश्यकताओं में किस प्रकार सुखी रह सकते हैं। श्री जौहरीमल जी पारख का कथन था- 'गरीबी अपनाओ।' अर्थात् कम से कम इच्छाओं एवं आवश्यकताओं के साथ जीओ।

जैन धर्म आवश्यकताओं को सीमित करने की शिक्षा देता है। इच्छाओं का परिमाण करने का परामर्श देता है, इसे परिग्रह-परिमाण व्रत में और उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत में भलीभांति प्रतिबिम्बित किया गया है। जैन धर्म की यह शिक्षा निर्धन और अमीर दोनों के लिए उपादेय है।

आत्मसाधना के लिए मन को संयमित करने की आवश्यकता होती है जो मन को संयमित कर सकता है वही आत्मविजय के मार्ग पर आगे बढ़ता है। स्वच्छन्द मन इस बात का द्योतक है कि अभी संयम का महत्त्व समझ में नहीं आया है।

आचार्य हस्ती आत्मसाधक थे, बाह्य-सामग्री की अपेक्षा से वे फक्कड़ थे। किन्तु वे आत्मबल, मनोबल और वचनबल के धनी थे। वे स्वयं आत्मसाधना के मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक चले तथा उसका संदेश उन्होंने जन-जन तक पहुँचाया। स्वयं को साधना ही आत्म-साधना है। हम दूसरों को कसते रहते हैं, स्वयं को नहीं। आत्म-साधक स्वयं को पहले कसता है तथा दूसरों में प्रेम बांटता है। आचार्य हस्ती का कथन है-''साधनाहीन विलासी व्यक्ति जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं करता, वह अपनी शक्ति को यों ही गवां बैठता है। आर्थिक दृष्टि से कोई व्यक्ति कितना ही सम्पन्न, इन्द्र या कुबेर के समान क्यों न हो, किन्तु उसका आन्तरिक परिष्कार नहीं हुआ तो निश्चय ही जीवन अधूरा ही रहेगा और उसे वास्तविक लौकिक एवं पारलौकिक सुख प्राप्त नहीं होगा।

पर्युषण पर्व हमें आत्मचिंतन का अवसर प्रदान करता है, हमारी भ्रान्त धारणाओं और मिथ्या विश्वासों को तोड़ने की प्रेरणा करता है। हम आठ दिन बाह्य धूमधाम के वातावरण को छोड़कर जब धर्म स्थान में सन्तों के वैराग्यपरक प्रवचन सुनते हैं अथवा स्वाध्याय करते हैं तो आत्मचिंतन के लिए मजबूर होते हैं कि आखिर हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? आजीविका प्राप्ति तो पशु-पक्षियों में भी दृष्टिगोचर होती है। तनाव और भागदौड़ में जीना क्या हमारा पागलपन नहीं है? भोगों की प्राप्ति ही क्या हमारे जीवन का लक्ष्य है? यदि इतना ही लक्ष्य है तो इनके प्राप्त हो जाने पर भी हमें स्थायी सुख एवं शांति की प्रतीति क्यों नहीं होती है? इस प्रकार स्वयं के सम्बन्ध में दुख के कारण की खोज भी हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

हम दुःख का कारण बाहर ढूंढते हैं। जबकि दुःख का कारण अपनी ही भ्रान्त धारणाएँ तथा अपने ही राग-द्वेष आदि विकारी भाव हैं। दुःख दूर करने के लिए मनुष्य को इस सोच को बदलना होगा कि दुःख का कारण कोई अन्य है। यह बात समझ में आने पर ही आत्मसाधना आरम्भ होती है और व्यक्ति बाह्य वस्तुओं के संग्रह और आसक्ति से विरत हो जाता है। वस्तुओं से विरत व्यक्ति वस्तुओं के संग्रहकर्ता से अधिक सुखी एवं शान्त होता है।

आत्म-साधना के अनेक सोपान हैं। उनमें प्रथम सोपान यही है कि दुःख का कारण कोई अन्य नहीं, अपितु मैं स्वयं हूँ, मेरी भ्रान्त मान्यताएँ मुझे दुःखी करती हैं। समस्त दुर्गुणों का आधार यही मान्यता है। भ्रान्त धारणा जब टूटती है तो दुर्गुणों की नींव हिलने लगती है। ज्ञान का प्रकाश जीवन का मार्गदर्शक बन जाता है।

द्वितीय सोपान में वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थितियों के प्रति आसक्ति कमजोर हो जाती है। तृतीय सोपान में प्राप्त वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थितियों का सदुपयोग होने लगता है। यह सदुपयोग आत्म-साधना का अंग है। धीरे-धीरे साधक प्रतिपल सजग बनता है। वह अशुभ एवं सावद्य प्रवृत्ति से बचता है तथा शुभ एवं निरवद्य प्रवृत्ति को अपनाता है। उसमें अप्रमत्तता का विकास होता है। आचार्य हस्ती के शब्दों में-" जो मुमुक्षु साधक अपने जीवन को क्षण भंगुर मानकर जीवन के स्वल्पकाल में अपना अधिकाधिक आत्मकल्याण करने के लिए प्रतिक्षण जागरूक रहते हुए साधनापथ पर अविराम गति से अग्रसर होता रहता है वह जीवन सुधार लेता है।"

आत्म-साधना के पथ पर अग्रसर साधक ध्यान, मौन, जप का आलम्बन लेकर आगे बढ़ता जाता है तथा पूर्व के कुत्सित संस्कारों का क्षय कर पूर्णतः दुःखमुक्ति की ओर अग्रसर होता है।

पर्युषण पर्व हमें आत्म-साधक बनाने के लिए उपस्थित हुआ है। हम राग-द्वेष की गांठों को तोड़कर मैत्री, प्रमोद, करुणा एवं माध्यस्थ भावना की सरिता बहायेंगे तो स्थायी आनन्द का अनुभव कर सकेंगे। आचार्य हस्ती ने हमें इसी ओर बढ़ने की प्रेरणा की है तथा आचार्य हीराचन्द्र जी भी इसी आनन्द का अनुभव कराने हेतु व्रती बनने की पुरजोर प्रेरणा कर रहे हैं।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

अधुवे असासयंमि, संसारंमि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाऽहं दोग्गइं न गच्छेज्जा।।

विजहित्तु पुव्वसंजोगं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेह सिणेहकरेहिं, दोस-पओसेहिं मुच्चए भिक्खू।।

सव्वं गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई।।

भोगामिस-दोसविसन्ने, हियं-निस्सेयस-बुद्धि-वोच्चत्थे।
बाले य मंदिए मूढे, बज्झई मच्छिया व खेलंमि।।

दुपरिच्चया इमे कामा नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह संति सुव्वया साहू, जो तरंति अतरं वणिया व।।

अर्थः-

यह नश्वर और अशाश्वत जग, जो प्रचुर दुःख का स्थानक है।
मैं करूँ यहाँ पर कौन कर्म, जो दुर्गति-दुःखनिवारक है।।

छोड़ पूर्वसम्बन्ध साधुजन, स्नेह किसी से करे नहीं।
स्नेहियों पर स्नेह रहित हो, दोष द्वेष से हो मुक्त यहीं।।

बाह्य और आभ्यन्तर ग्रन्थ सब, तजे तथाविध कलहों को।
सर्व कामगुण दोषयुक्त लख, त्राता मुनि दूर रखे मन को।।

भोगरूप आमिषरत प्राणी, हितपथ से उलटी बुद्धि धरे।
मूढ़ मन्दमति अज्ञानी, मक्खी-सम कफ में उलझ पड़े।।

दुस्त्यज हैं ये काम-भोग जो, न सहज त्याज्य कायरजन से।
पोतवणिक्‌सम साधु सुव्रत जो, तरते दुस्तर भवसागर से।।

-उत्तराध्ययन सूत्र : अष्टम अध्ययन, कापिलीय, सूत्र- 1, 2, 4-6

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

श्रावक-कर्त्तव्य

- आचार-पालन का आशय यह नहीं कि प्रजाजनों को निर्वीर्य होकर, राजकीय शासन के प्रत्येक आदेश को नेत्र बन्द करके शिरोधार्य कर लेना चाहिए। राज्य शासन की ओर से टिड्डीमार, चूहेमार या मच्छरमार जैसे धर्म-विरुद्ध आन्दोलन या आदेश अगर प्रचलित किये जाएं अथवा कोई अनुचित कर-भार लादा जाय तो उसके विरुद्ध सत्याग्रह या असहयोग करना व्रत भंग का कारण नहीं है। इस प्रकार का राज्य विरुद्ध कृत्य अतिचार में सम्मिलित नहीं होगा, क्योंकि वह छुपाकर नहीं किया जाता। इसके अतिरिक्त उसमें चौर्य की भावना नहीं, वरन् प्रजा के उचित अधिकार के संरक्षण की भावना होगी। इसी प्रकार अगर कोई शासन हिंसा, शोषण, अत्याचार, अनीति या अधर्म को बढ़ावा देने वाला हो तो उसके विरुद्ध कार्यवाही करना एक नागरिक के नाते उसका कर्त्तव्य है। इसमें कोई धर्म बाधक नहीं हो सकता। यह कार्यवाही विरुद्ध राज्यातिक्रम में सम्मिलित नहीं है।
- श्रावक-धर्म का अनुसरण करते हुए जो व्यापारी व्यापार करता है, वह समुचित द्रव्योपार्जन करते हुए भी देश और समाज की बहुत बड़ी सेवा कर सकता है।
- प्रत्येक जैन कुल में अमुक नियम अनिवार्य होने चाहिए। एक बार दिन में व्याख्यान नहीं सुन सकें तो भी धर्म-स्थान पर आकर मौन भाव से 10 मिनट के लिए ही सही, धर्म-ग्रन्थ का स्वाध्याय करना चाहिए। ऐसा समाज धर्म हो सकता है।
- प्रतिदिन के कार्य की प्राथमिकता श्रावक की इस प्रकार होती है- 1. देव-भक्ति, 2. गुरु-सेवा, 3. परिवार एवं समाज-सेवा, 4. आरोग्य संरक्षण, 5. व्यवसाय। जिस प्रकार व्यवसाय को आप आवश्यक समझते हैं, उसी प्रकार नियत समय पर स्वाध्याय और समाज-सेवा भी करें। दैनिक जीवन के कर्त्तव्यों में व्यवसाय को पाँचवा स्थान मिला है, पर आज उलटा हो गया। पहला स्थान व्यवसाय को, दूसरा स्वास्थ्य को, तीसरा परिवार को, और उसके बाद गुरुसेवा और देवभक्ति को आप स्थान दे रहे हैं। जबकि पहला स्थान देवभक्ति, दूसरा गुरुसेवा, तीसरा समाज-सेवा और चौथा आरोग्य संरक्षण को दिया गया था। आरोग्य नहीं रहा और पैसा मिल गया तो वह किस काम का? गुरुजनों की सेवा नहीं कर सका, शास्त्रों का अध्ययन नहीं कर सका तो चौबीसों घंटों कमाया गया पैसा किस काम आया? इसलिए मनुष्य को चाहिए कि पाँचों बातों को ध्यान में रखते हुए अपने जीवन का उद्धार करे।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

अहंकार नहीं, समर्पण हो

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा दिनाँक 8 अगस्त, 2010 को सुराना मार्केट, पाली-मारवाड़ (राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-**सम्पादक**

साधना से अजर-अमर पद को पाने वाले सिद्ध भगवन्तों को, कर्मों का क्षय कर अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन को प्रकट करने वाले अरिहन्त भगवन्तों को तथा संसार की ममता हटाकर, पापों का त्याग कर, महाव्रत-समिति-गुप्ति की आराधना करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर ने संसार को अनादि-अनन्त कहा है। जब संसार अनादि-अनन्त है तो जीव भी अनादि काल से था और अनन्त काल तक रहेगा। सिद्धों का आवागमन नहीं होता है। संसारी जीवों का आवागमन होता है। सांसारिक जीवों का जन्म-मरण चलता रहता है। जीव जन्म-मरण कब से कर रहा है? भगवती सूत्र में आया है कि पहले मुर्गी हुई या अण्डा? जीव के साथ कर्म कब से है, इसकी कोई आदि नहीं। शास्त्रकारों ने दृष्टान्त दिया- सोने का मिट्टी के साथ मेल कब से? सोना खदान में कब से? सोने के साथ मिट्टी के संयोग की आदि नहीं, इसी तरह जीव के साथ कर्मों के मेल की आदि नहीं है।

यह जीव अनन्त काल से जन्म-मरण कर रहा है। जीव ने सिवाय जन्म-मरण के अलावा किया ही क्या है? कितने जन्म-मरण किए हैं कोई गणना? जीव का किस नाम से परिचय कराऊँ? अभी आप मुनिश्री (यशवन्त मुनि जी महाराज) से सुन गये कि शादी के डोरे-कंकण एकत्रित किए जायं तो क्या उनकी गिनती संभव है? जीव ने कितनी बार शादी की कब-कब शादी की? है कोई हिसाब? जब शादी विवाह की गणना नहीं तो जन्म-मरण की गणना कैसे की जा सकती है? शायद हमारी-आपकी गणना जन्म-मरण की संख्या नहीं बता सकती। क्योंकि जन्म-मरण अनन्त काल से है।

न जन्म का महत्त्व है, न मरण का। मैं तो ताज्जुब करता हूँ जब आने वाली बहन के मुँह से सुनता हूँ- ''बाबजी! आपरे एक श्रावक और

आइगियो।'' एक बहन जन्म की सूचना करने पर खुशी मान रही है तो एक बहन की वह सूचना कि- ''बाबजी! आपरा श्रावक जी चली गया।'' अर्थात् उनका स्वर्गवास हो गया। इस जीव ने न जाने कितने जन्म लिए, कितने मरण किए। आदि कब से है? गणना कब से? लौकिक व्यवहार की भाषा में एक जीव की गणना उपकार करने से की जा सकती है, पर शास्त्र की भाषा में समकित प्राप्ति से गणना की जाती है। कीड़ियाँ कितनी जन्मती हैं, मरती हैं। मक्खी-मच्छर जन्मते-मरते रहते हैं, उनकी गणना नहीं की जा सकती, किन्तु गायें कितनी जन्मी, कितनी मरी, गणना की जा सकती है। गायों की गणना क्यों? गाय उपकारी है, उपकार के कारण उसकी गणना की जाती है। पशु हो या आदमी गणना उपकारी की होती है। शास्त्र की भाषा में समकित प्राप्ति से गणना होती है। लोग बोलते हैं तीर्थंकर भगवान महावीर का जीव सत्ताईस भव पहले था। ऋषभ देव का जीव तेरह भव पहले था।

तीर्थंकर भगवन्तों के भवों की गणना समकित प्राप्ति के पश्चात् से की गई। तीर्थंकर भगवान की ही नहीं, जिन्होंने भी समकित प्राप्त की, उनकी गणना होने लगी। उम्र की कोई गणना नहीं पर, जिस जीव ने अपनी उम्र के वर्ष, दिन या महीने धर्म के लेखे में लगाये, उनकी गणना है। इन्दौर के सेठ साहब हुकमीचंद जी भण्डारी से एक बात पूछी गई। आपकी पूँजी कितनी? इन्दौर के सेठ साहब रूई के व्यापार के किंग थे, वे चाहते तो भाव बढ़ा देते, चाहते तो भाव नीचे कर देते। फिर भी जवाब में 27 लाख की पूँजी बताई। तो पास बैठे भाई ने कहा- सेठ साहब! अपनी पूँजी गलत बता रहे हैं। करोड़ों में खेलने वाले कह रहे हैं मात्र 27 लाख। यह उस जमाने की बात है जब एक पैसे में पेट भरता था। मेरी सांसारिक नानीजी कहती थी कि एक पैसे में इतनी जलेबी आती कि आराम से पेट भर जाता। आज एक पैसे की कीमत नहीं। किसी भिखारी को भी दो, तो वह देखने लग जायेगा। शायद वह फेंक कर चल दे। सेठ साहब ने अपनी पूँजी सत्ताईस लाख बताई। उत्तर सुनने वाले को विश्वास नहीं हुआ। सेठ साहब से दूसरा सवाल पूछा- आपके लड़के कितने हैं? सेठ साहब ने कहा- अन्नदाता एक। पास में बैठा भाई जानता था इनके अनेक लड़के हैं और ये कह रहे हैं मात्र एक। लेकिन सेठ साहब की गणना धर्म के आधार पर थी। जो धर्म के कार्य में लगे वह मेरा लड़का, पाप कार्य में संलग्न है उसकी क्या गणना करना। पूँजी के

लिए भी जो हाथ से दिया है वह मेरा है। संचित है वह मेरा नहीं। संचित धन तो आँख बन्द होते ही लूट लिया जायेगा, उस धन का बंटवारा हो जायेगा। मेरा क्या? जो मैंने दान में दे दिया, वही मेरा है, उसी की गणना है।

आपसे पूछूँ- आपकी उम्र कितनी? आप उम्र की गणना बाल देखकर मत करना। जो लकड़ी लेकर चलते हैं उसे भी गणना में सम्मिलित मत करना। आपने शायद उस बहू की बात सुनी होगी जो कहती है कि मेरा बेटा पाँच साल का है, धणी पालने में झूलता है, ससुर जी की बात कही तो कहा वे अभी पेट में हैं। ये बातें आश्चर्यकारी लगती है, पर बहू ने जो पाँच साल, पालने झूलने और पेट में है की बात कही वह धर्म में कब से रत है, इस आधार पर कही।

कई महापुरुष गर्भ से धर्मी होते हैं। गर्भ में आने के साथ चौसठ इन्द्र उनका गुणगान करते हैं, अपना आसन छोड़कर तीर्थंकर भगवन्तों का जन्म कल्याणक मनाने आते हैं। ऐसे कई महापुरुष हैं जो जन्म से पूज्य हैं, महान हैं, ज्ञानी हैं। कुछ जन्म से महान हैं तो कुछ कर्म से महान होते हैं। कर्म से महान् नामों में आप चाहे भामाशाह का नाम लें, झगडूशाह का नाम लें, खेमा देवराने का नाम लें, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी जैसे कई-कई नाम हैं जो कर्म से महान् बने। कुछ विशिष्ट आत्माएँ हैं जो जन्म से महान हैं। कुछ धर्म से महान् बनते हैं। शील पालने के लिए जीभ खींच जाते हैं, पर शील खण्डित न हो इसका ध्यान रखते हैं। जो धर्म में जीवन समर्पित करने वाले हैं वे शरीर भले ही छोड़ दें, किन्तु धर्म को आंच नहीं आने देते। मैं आज एक ऐसे महापुरुष का आपको परिचय करा रहा हूँ जो समाधिमरण से महान बने। उनका लोढ़ा कुल में जन्म हुआ। किशनगढ़ के जौहरी खानदान में जन्मे। पत्थरों का परीक्षण करते-करते संतों की संगति से अपने आपका निरीक्षण करने में लग गये।

संगति आपने भी पाई है। उन्होंने थोड़ी पाई, आपको शायद संगति करते-करते वर्षों निकल गये। आप आज भी उसी बैठके पर बैठे हुए हैं। पूज्य गुरुदेव (आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज) ने बहुत सुन्दर बात कही- एक व्यक्ति पाठशाला में सबसे पहले आता है और सबसे बाद में जाता है, दूसरा आता तो बाद में है पाठशाला से निकलता पहले है। जो बाद में आता है पाठशाला में पढ़ते-पढ़ते स्तानक बन जाता है, जबकि चपरासी सबसे पहले आता है, वह झाड़ू लगाता है, क्लास रूम में बेंचें ठीक करता है, सबके जाने के

बाद जाता है उसे दस साल बाद भी पूछो वैसा का वैसा है। चपरासी कुछ विकास नहीं करता, लेकिन पाठशाला में पढ़ने वाला छात्र कुछ वर्षों में आगे बढ़ जाता है।

मैं पूज्य सागरमल जी महाराज की बात कह रहा हूँ। वे संतों की संगति में कम आए, संतों के पास भले ही कम बैठे, पर जितने बैठे उन्होंने जीवन का निष्कर्ष निकाल लिया। एक बार सम्पर्क हुआ और दृढ़ निश्चय कर लिया। बंशीलाल जी कोचेटा! आप भी किशनगढ़ के हैं, संतों की सन्निधि में आते हैं, लेकिन अभी जहाँ के तहाँ हैं। पूज्य सागरमल जी महाराज के लिए कहूँ- एक वचन जो सद्गुरु केरो। संगति पाई, विरक्ति आई और उन्होंने दीक्षा ले ली। आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज के चरणों में वे दीक्षित हो गये।

पढ़ने वाले बहुत होते हैं, नम्बर मिलाने वाले विरले मिलते हैं। धर्म-साधना में जो समर्पित हो जाते हैं, वे गाए जाते हैं। आप जानते हैं कि एक पराये घर से आने वाली बहू समर्पित भाव से आती है तो कुछ समय बाद वह घर की मालकिन बन जाती है।

लोढ़ा कुल के उस श्रावकरत्न ने जिस श्रद्धा, वैराग्य और समर्पण के साथ दीक्षा ली उसे उसी निष्ठा से निभाया तथा बड़ों के रहते हुए भी गुरु का विश्वास प्राप्त कर लिया। पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज ने अपना उत्तराधिकारी (पूज्य हस्तीमल जी म.सा.) मनोनीत कर दिया, पर कहा- किसी को कुछ पूछना हो तो सागरमल जी महाराज से पूछ लेना। दीक्षा में बड़े बहुत संत मौजूद हैं, अच्छे प्रवचनकार हैं, ज्ञानी हैं पर विश्वास किन पर था?

पूज्य सागरमल जी महाराज में अहंकार नहीं, समर्पण था। उन्हें जिस काम के लिए कहा जाता, वे उस काम को भावना पूर्वक करते। आपने सुना होगा पुराने जमाने में दास प्रथा थी। राजा की राजकुमारी होने पर भी चंदनबाला को भरे बाजार में बेच दिया गया। कभी तूफान में जहाज डूब जाता तो जो आदमी बच जाते उन्हें लोगों के बीच में बेच दिया जाता। ऐसे ही एक आदमी बेच दिया गया। उसे जो भी काम करने को कहा जाता, वह उस काम को करता। राजा ने उसकी भावना देखी तो प्रसन्न होकर पूछा- तुम्हारा नाम क्या?

हजूर! आप जिस नाम से पुकारें वही मेरा नाम। पूछा- तुम्हें क्या खाना

अच्छा लगता है? उसने बताया- हजूर! जो आप खाने को दें वही अच्छा लगता है। आपको क्या खाना पसन्द है पूछा जाय तो.........! मगर वह बोला आप खाने को जो दें, उसे मैं खीर-खांड का भोजन मानता हूँ।

खाने की तरह पहनने के लिए कौनसा वस्त्र अच्छा लगता है, पूछा गया। पहनने के लिए मलमल है, लट्ठा है और न जाने कितने-कितने तरह के कपड़े हैं। पर उसका जवाब था- आप जो पहनने को दे दें वह अच्छा लगता है।

फिर पूछा- कहाँ रहना चाहते हो? (आपने यह उदाहरण सुन रखा है इसलिये आप लोग आगे-आगे बोल रहे हैं।)

राजा ने पूछ लिया- तेरी कोई इच्छा?

दास का उत्तर था- मालिक! नाराज मत होना, मेरी इच्छा होती या मैं कोई इच्छा रखता तो दास क्यों बनता?

राजा एक के बाद एक उत्तर सुनकर विचार करने लगा कि मैं भगवान का ऐसा दास बन गया होता तो मेरी कोई इच्छा नहीं रहती।

समर्पण कैसा होता है, मैं उसकी झांकी आपके सामने रख रहा हूँ। ऐसे समर्पित पूज्य सागरमल जी महाराज के लिए कहा जाता था कि उन्हें कहीं ढूढ़ने की जरूरत नहीं, वे उपाश्रय में हैं तो गुरु चरणों में मिलेंगे ही। आवश्यक कार्य निवृत्ति के अलावा वे गुरु चरण छोड़कर कहीं न तो बैठते, न कहीं जाते। उनके परिवार का कोई सदस्य दर्शन-वन्दन के लिए आता और उनके पास बैठना चाहता तो कहते मेरे पास बैठकर क्या करोगे, बैठना ही है तो गुरु चरणों में बैठो। उन्होंने कभी परिवारजनों के साथ बात नहीं की। उनके परिवार के लाभचन्द जी लोढ़ा जो इस संघ के कभी अखिल भारतीय अध्यक्ष भी रहे उनसे भी कहते- मुझ जैसे छोटे संत के पास बैठकर क्या करोगे, आचार्य भगवन्त के श्रीचरणों में बैठो।

वे साधक थे, सेवा में उनका समर्पण था। गुरु आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज का श्रावणी अमावस्या को वि.सं. 1983 में स्वर्गवास हो गया। पूज्य आचार्य श्री जयमल जी महाराज ने जैसे आड़े आसन का त्याग किया, परम्परा के मूलपुरुष पूज्य श्री कुशलचन्द जी महाराज ने भी आड़े आसन का त्याग किया। पूज्य सागरमल जी महाराज ने एक सूंठ के गांठिये के अलावा कोई दवा

नहीं लेना, यह संकल्प कर लिया। बीमारी पहले भी आती थी, आज भी आती है, किन्तु उस महापुरुष ने दवा नहीं लेने का जो संकल्प किया उसे जीवन पर्यन्त निभाया। आज तो थोड़ा-सा जुकाम हो गया, सर्दी लग गई तो डॉक्टर लाने में आप तत्पर रहते हैं, किन्तु पूज्य श्री सागरमल जी महाराज ने दवा नहीं ली, सो नहीं ली। जब तक सहन होता है साधु सहन करे दवा नहीं ले और जब समाधि भाव टूटने लगे, ध्यान छूटने लगे वैसी स्थिति में दवा ली जाय, वह अलग बात है, पर दवा ताकत बढ़ाने के लिए नहीं हो। रोग निवारणार्थ दवा ली जा सकती है, लेकिन बलवर्धन के प्रयोजन से दवा लेना ठीक नहीं है।

पूज्य श्री सागरमल जी महाराज से तपश्चर्या नहीं होती थी। वे एक उपवास करते उसमें भी गले में गाँठे पड़ जाती थी। दूसरे दिन आहार-पानी निगलने में कठिनाई होती थी। हर संत तपस्वी नहीं होता। कुछ ज्ञानी होते हैं, कुछ तपस्वी, तो कुछ सेवाभावी। हर व्यक्ति में हर बात नहीं होती। अलग-अलग व्यक्तियों के अलग-अलग गुण होते हैं। पूज्य श्री सागरमल जी महाराज को कभी मजबूरी में उपवास करना पड़ता तो शरीर की प्रकृति ही कुछ ऐसी थी कि उनके गले में गाँठे पड़ जाती।

पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज के स्वर्ग-गमन के पश्चात् वे किशनगढ़ पधारे। उनके मन में आया कि जब यह शरीर मांगता ही नहीं तो इसे जबरदस्ती क्यों दिया जाय। यह बात कहने में जितनी सरल है, पार लगाने में उतनी ही मुश्किल है।

गुण सागर के गा प्राणी, संथारे की दिल ठानी।
लोढ़ा कुल के नंदन हैं, सौम्य शांत मन चंदन है।
रत्नों सम आत्म जाणी, संथारे की दिल ठानी।।
तन बुद्धि बल सीमित था, ज्ञान-ध्यान भी परिमित था,
छंद निरोध बने ज्ञानी, संथारे की दिल ठानी।।

"ज्ञान-क्रियाभ्याम् मोक्षः।" "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।" मोक्ष-मार्ग में ज्ञान-क्रिया है, तो ज्ञान-दर्शन-चारित्र भी हैं। मोक्ष मार्ग में ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप का समावेश है तो अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह ये पांचों भी मोक्ष के साधन हैं। पर तीर्थंकर भगवन्तों ने एक सरल मार्ग

बताया- छंदनिरोहेणं..... ।

अपनी इच्छाओं का निरोध करके गुरु के वचनों के अनुसार चलो। सागरमल जी महाराज के इस एक गुण ने गुरु का विश्वास जीत लिया। उन्होंने समझ लिया कि शरीर आहार की मांग नहीं करता तो साधक संथारे की ओर बढ़ जाय। उस समय साथ के सब संत छोटे थे, इसलिये सन्तों ने कहा जब तक बड़े संत नहीं आते, संथारा नहीं करना। जवाब क्या था? उन्होंने कहा- काल बड़ों की राह नहीं देखता। पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज उस समय रिंया विराज रहे थे। स्वामी जी सुजानमल जी महाराज नागौर विराज रहे थे।

पूज्य गुरुदेव रिंया से पीपाड़ पधारे। पीपाड़ में एक वैद्य थे धूलचन्द जी सुराना। वे प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी नाड़ी वैद्य तो थे ही, अच्छे घड़ीसाज भी थे। घड़ी का एक-एक पुर्जा खोलकर वापस लगा देते। वे ज्योतिष के अच्छे ज्ञाता भी थे। पीपाड़ में पूज्य गुरुदेव पधारे तो प्रज्ञाचक्षु श्रावक धूलचन्द जी दर्शन-वन्दन की भावना से आये। उन्होंने सुना कि किशनगढ़ में पूज्य श्री सागरमल जी महाराज के संथारे की भावना के कारण पूज्य श्री जल्दी विहार करके वहाँ पहुँचना चाहते हैं। वे ज्योतिषाचार्य तो थे ही, शास्त्रों के ज्ञाता भी थे। कभी कोई संत व्याख्यान में बोलते-बोलते कभी भूल जाता तो वे कहते- बाबजी! वापस फरमाओ। उनकी बात का संत भी अपमान नहीं मानते। उन्होंने गृह-नक्षत्र आदि का विचार करके कह दिया। आप तो आराम से पधारो, पैंतालीस दिन पहले संथारा सीझने वाला नहीं है। आचार्य भगवन्त पीपाड़ से किशनगढ़ पधारे और संथारे में सम्मिलित हुए।

वैद्य धूलचद जी अनुभवी थे। एक संत बीमार हो गए। उन्होंने तीन पुड़िया दी और कहा इससे बुखार ठीक हो जायेगा। और फिर से कभी बुखार नहीं आयेगा। वे दवा देने के साथ ही अपने अनुभव से बता देते कि इनका जीवन कितना है? पूज्य गुरुदेव की माताश्री महासती रूपकंवर जी महाराज भोपालगढ़ विराज रहे थे, वैद्यजी ने खंखार की आवाज सुनकर कह दिया अब सतीजी का आयुष्य नहीं रह गया, इसलिये संथारा करवा दो।

पूज्य श्री सागरमल जी महाराज का संथारा चल रहा था तब कुछ विद्वेषी लोगों ने राजा के यहाँ शिकायत कर दी कि महाराज को भूखों मारा जा रहा है

प्रवचन

कैसा है विश्वास आपका?

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा दिनाँक2 जुलाई, 2010 को जैन स्कूल, महामन्दिर, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-सम्पादक

यह अध्यात्म चेतना वर्ष है। अध्यात्म शब्द क्या सूचित करता है? शब्द व्युत्पत्ति को देखें- आत्मनि इति =अध्यात्मम्। आत्मा में या आत्मा पर का अर्थ है अध्यात्म। कौन जायेगा आत्मा में? जिसे विश्बास हो। जो विषयों को विषवत् तिलांजलि दे, विषयों से विमुख हो। अनुभवियों की वाणी में पढ़ा- विश्वास कैसा होना चाहिये? हमने सामान्य रूप से सुन रखा है कि विष खाने से मृत्यु हो जाती है। इस बात पर कैसा विश्वास है? हमें पता चल जाय कि इस चीज़ में थोड़ा सा ज़हर मिल गया फिर उस भोजन को खाने के लिए कौन तैयार होगा? कोई दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति हो , मजबूर भी हो, लोभी भी हो और उसे कहा जाय कि तुझे एक लाख रुपये दिये जायेंगे तू एक तोला ज़हर खा ले तो क्या वह तैयार होगा?

श्रोता- नहीं,

क्यों? वह दरिद्र है, लोभी भी है, पैसों की उसको आवश्यकता है फिर भी तैयार नहीं। कदाचित् पैसों की आवश्यकता में बेटे को बेचने वाला तो फिर भी कोई मिल सकता है। बदले में सोना मिलने के लालच में अमरकुमार को बेच दिया गया था। किन्तु लाख रुपये में भी कोई ज़हर खाने के लिए तैयार नहीं। क्यों? उसे विश्वास है ज़हर खाने से जीवन लीला समाप्त हो सकती है। हमने शास्त्र में पढ़ा है- **सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा। कामे तु पत्थेमाणे अकामा जंति दोग्गइं।**

काम शल्य है, काम विष है, काम आशीविष है। ऐसा आशीविष जिसे मुँह में रखते ही शरीर नष्ट हो जाता है। साइनामाइट की तरह है जो खाते ही मार

देता है। विष तो कदाचित् प्राण ले, न भी ले, मनुष्य ज़हर खाकर बच भी सकता है, लेकिन विषय का सेवन करने वाला भव-भव में दुःख पाता है, बार-बार दुर्गति में जाता है, एक जन्म नहीं जन्म-जन्मान्तर बिगाड़ता है। विष खाने वाला बार-बार मरता है, पर विषय का भोगी तो 84 लाख योनियों में भटकता है, बार-बार जन्मता मरता है।

संतों से सुन रखा है, ग्रन्थों में पढ़ा है, प्रत्यक्ष में देखा है कि विषय का सेवन करने वाला लोक में कैसी फज़ीती पाता है? एक स्त्री के अपहरण के कारण हर वर्ष रावण का पुतला जलाया जाता है। ऑफिस में अभद्र व्यवहार की शंका में अमेरिका के राष्ट्रपति को बदनामी का सामना करना पड़ता है। लोक व्यवहार में कइयों की रास्तों में दुर्दशा देखी जा सकती है। संतों से सुना और प्रत्यक्ष में देखा, फिर भी मन विषयों से हटता है क्या? इससे बड़ी और मूर्खता क्या?

इस भव पर भव में संकट देने वाले विषय से विमुखता नहीं हो, आत्म सम्मुखता न हो तो भगवान का जप करने से भी शांति नहीं मिलती है। नवकार मंत्र का स्मरण भी करते हैं। बोलते हैं- ऐसो पंच नमोक्कारो, सव्व पावपणासणो। सारे पापों का नाश करने वाला है। कथाओं में सुनते हैं। अंजना की जंगल में भी रक्षा करने वाला, सीता को वनवास में और अशोक उद्यान में शांति दिलाने वाला, सुभद्रा आदि न जाने कितनी सन्नारियों की रक्षा करने वाला महामंत्र प्रवचन में सुनते हैं, भजनों में गुनगुनाते हैं। कभी "नवकार मंत्र है महामंत्र इस मंत्र की महिमा भारी है।" कभी 'एक सौ आठ बार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार' भजन बोलते हैं। कभी 'अरिहन्त जय-जय सिद्ध प्रभु जय-जय' की धुन लगाते हैं, कितनी-कितनी बार बोलते रहने पर भी माला में मन नहीं लगता। जान रहा है, बोल रहा है फिर भी शान्ति का अनुभव नहीं। कारण है विषयों से विरक्ति नहीं।

"दुनिया में देव अनेकों हैं, अरिहन्त देव का क्या कहना।" आप सब बोलते हैं, किन्तु अभी हाथ खड़े कराए जाएँ कि अरिहन्तों के सिवाय दूसरे-दूसरे देव तो आपके यहाँ नहीं है? घर में, आले में, फोटो कलेण्डर आदि में सरागी देव तो नहीं, आप बोलते हैं-

कोई पूजे देव सरागी को, कोई सीस नमावे भोगी को।
अरिहन्त देव ही देव मेरे, देवाधिदेव का क्या कहना ।।

आप आत्मा से बोल रहे हैं या खाली जुबान से? घर में पर कितने-कितने देवी-देवता की तस्वीरें लगी हैं? गुरु भगवन्तों की अनन्त कृपा से इस भव में इस जीव (प्रवचनकार) को कभी किसी की द्रव्य पूजा करने की नौबत नहीं आई। यह जीव किसी भी देवी-देवता की पूजा से परिचित नहीं। दीपावली पर भगवान महावीर की माला और होली पर चौबीस घंटे नवकार मंत्र का जाप ही देखा है और किया है। यह भाव पूजा है।

'अरिहन्त देव ही देव मेरे' - इसका उच्चारण करें और मन भटक जाए। यही नास्तिकता है। आश्चर्य इस बात का है कि कोई महामूर्ख होकर भी अपने को बुद्धिमान समझे और नास्तिक होकर भी माने कि हम आस्तिक हैं। विश्वास कैसा होना चाहिये? विषयों का सेवन करने पर जीव बार-बार संसार में परिभ्रमण करता है, जीव के जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। इस पर विश्वास हो। परिस्थिति में जीवन बुद्धि मानना मिथ्यात्व है, परिस्थिति में जीवन-रस अनन्तानुबंधी है। किन्तु अनादिकाल के संस्कारों से जुड़े तादात्म्य सम्बन्ध के कारण बाहर की परिस्थिति से यह जीव शीघ्र प्रभावित हो जाता है। इन्द्रियों के विषयों का गुलाम बना परिस्थिति से उबर नहीं पाता।

परिस्थिति की कामना आर्त है।
परिस्थिति से सामना रौद्र है।
परिस्थिति को साधना धर्म है।
परिस्थिति को लांघना शुक्ल है।

प्रभु पर विश्वास नहीं होने से, प्रभु की वाणी पर विश्वास नहीं होने से, आत्मा पर विश्वास नहीं होने से पौद्गलिक परिस्थिति से आकुल-व्याकुल हो जाता है, यह जीव। मात्र शरीर को मैं और मेरा समझने से आह भरता है। मौसम को, गर्मी को कोसता है, त्राहि मां, त्राहि मां करता है। वर्षा नहीं आने पर तरह-तरह की व्यर्थ चर्चा, व्यर्थ चेष्टा करता है। यह नहीं खोजता कि यह परिस्थिति मिली कैसे। साधना के मार्ग पर चरण बढ़ाने के लिए परिस्थिति से अतीत की

ओर जाना होता है। देह से अतीतता का अनुभव करना होता है। अनुभवियों ने गहरी बात बताई- अनित्य की ओर गतिशील होने पर विवेक 'भाव' में, भाव 'कर्म' में और कर्म 'परिस्थिति' में बदल जाते हैं। कभी सुना था- अजीव की ओर देखने से पाप, आस्रव व बंध होता है, पर गहराई में जाने पर यह बात सही नहीं लगती। अजीव को सच्चाई से देखने पर जीव, अजीव से मुक्त भी हो सकता है। परिस्थिति आर्त्त, रौद्र एवं धर्म ध्यान में सहयोग कर सकती है। परिस्थिति अच्छी नहीं है, इसलिये कामना करना आर्त्तध्यान है। लेकिन यह समझना है कि जैसे यह परिस्थिति अच्छी नहीं है वैसे दूसरी भी अच्छी नहीं होती। परिस्थिति परिवर्तन की कामना, अमनोज्ञ का वियोग का चिन्तन एवं मनोज्ञ के संयोग का चिन्तन आर्त्त है। परिस्थिति परिवर्तन क्या है? संसार क्या है? तीन बटा चार (3/4) को पिचहत्तर बटा सौ (75/100) करना है। तीन बटा चार में तीन चीजें हैं। एक का अभाव है। पिचहत्तर बटा सौ में पिचहत्तर चीजें हैं, पच्चीस का अभाव है तो क्या फर्क पड़ा? इसी भाग-दौड़ में जीव रात-दिन एक जीवन झौंक रहा है। घर में कूलर है, ए.सी. है, वाशिंग मशीन है, और न जाने क्या-क्या है? कितने साधन बढ़ चुके हैं, आपके अपने देखते-देखते आपके घर में कितनी सामग्री बढ़ चुकी है। फिर कौन है जो कह सके कि घर में अभाव मिट गया? किसकी ऐसी अनुभूति है?

हर परिस्थिति अभाव युक्त है, अपूर्ण है। राजनैतिक व्यवस्था खराब है, समाज की स्थिति ठीक नहीं, हर गाँव में, हर जगह पैसे वालों का बोलबाला हो गया। बड़े खराब हैं ये पैसे वाले, ऐसा कहने वालों से पूछा जाय कि तुम्हारे मन में तो पैसे वाले बनने की भावना नहीं है? यदि है तो इसका मतलब पैसे वाले बनकर तुम भी खराब बनना चाहते हो? किसी के दोष देखना स्वयं के लिए दोष को निमंत्रण करना है। विषयों का लोलुपी विषय साधनों को जुटाने के लिए अर्थ की आवश्यकता अनुभव करता है। अनित्य की ओर गतिशील होने पर पाँच इन्द्रियों के तेबीस विषय पर दो सौ चालीस विकार उत्पन्न होते हैं। यह 12 वां बोल है इसके बाद सबसे बड़ा पाप सबसे मुख्य दोष इसके तुरन्त बाद में रागद्वेष की तीव्रता अनन्ताअनुबंधी प्रकृति है जो मिथ्यात्व का बंध कराती है।

हॉकी के खेल में सेंटर फारवर्ड होता है, आज हॉकी-फुटबॉल के खेल

कम ध्यान में आते हैं, क्रिकेट पर ध्यान अधिक है। पर हॉकी में सेंटर फारवर्ड होता है, लेफ्ट इन,लेफ्ट आउट, राइट इन, राइट आउट, 3 हॉफ 2 बेक, 1 गोलकीपर होता है। इनमें मुख्य बीच में सेन्टर फारवर्ड कर खेल शुरू करने वाला खेल का मुखिया, खेल का प्रधान होता है। संसार में खेल का प्रमुख भी बीचों-बीच है, 12 पहले, 12 पीछे। पच्चीस बोल में तेरहवां बोल सेंटर फारवर्ड है। बारह बोल इधर, बारह बोल उधर, बीच में है तेहरवां बोल। पांच इन्द्रियों के तेईस विषय और दौ सौ चालीस विकार अनित्य की ओर गतिशील होने पर विवेक भाव में बदल जाता है। आत्मा के उपयोग गुण से जो करण्ट आता है श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय आदि पांचों भाव इन्द्रियाँ ज्ञानावरण के क्षयोपशम से प्राप्त होती हैं। यह अन्दर का करंट है। बिजली की फिटिंग नाम कर्म करता है, अन्दर का करंट आत्मा से आता है। कान बाहर के शब्द ग्रहण करता है। कान में शब्द आये। शब्द जीव, अजीव और मिश्र तीन प्रकार के हैं। यहाँ तक का काम विवेक ने कर दिया। अगर जीव यहाँ पर रुक जाय, कदम बढ़ाना बंद कर दे तो कोई हानि ही नहीं। यह शुभ, यह अशुभ, यह अच्छा, यह बुरा शब्द, यह है अनित्य की ओर गतिशीलता। विवेक राग या द्वेष में बदल गया। राग-द्वेष खंभे में, पाटे में, किताब आदि में नहीं होता। राग-द्वेष विवेक के अनादर से जीव में ही परिणत होता है। यदि वहाँ समभाव रखा, समता की साधना में रहे, सामायिक में रहे, परिस्थिति में जीवन-बुद्धि नहीं प्राप्त की, विषय की चाहना अचाहना नहीं की, दृश्य से सम्बन्ध नहीं जोड़ा, जागते हुए सोते के समान रहे तो यह साधना है। जैसा कि कहा गया-

आँखें मूंदो नींद लगेगी, जगने पर है जग जंजाल।
आँखें बंद हो, चित्त जगे तो ध्यान दशा प्रकटे तत्काल।।

क्या ही सुन्दर कहा। जाग्रत सुषुप्ति, मूक सत्संग, सामायिक, समभाव, स्थित प्रज्ञता किस नाम से कहा जाए?

जागृति में, स्वप्न में सुख-दुःख की अनुभूति क्यों होती है? दृश्य से सम्बन्ध जुड़ने के कारण। नींद में स्थूल रूप से दृश्य से सम्बन्ध टूट जाता है, अतः वैसी अनुभूति नहीं होती। जागृति में चेतना जागृत है, पर दृश्य से सम्बन्ध जुड़ने पर परिस्थिति की कामना रूपी आर्त्त उत्पन्न होता है। उससे सामना होने

पर व्यक्ति वस्तु को बुरा मान उसके प्रति दुर्भाव दुश्चिन्तन रूपी द्वेष से रौद्रध्यान उत्पन्न होता है। इसी जागृति में सातवीं नरक का बंधन होता है। आयु को छोड़ 7 कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति जागृति में ही तो बंधती है, नींद में किसी भी कर्म की उत्कृष्ट स्थिति नहीं बंधती, नींद में किसी भी कर्म का उत्कृष्ट अनुभाग नहीं बंधता। क्योंकि दृश्य जगत् पुद्गल की माया से नींद में सम्पर्क टूट जाता है, पर नींद दर्शनावरणीय कर्म की सर्वघाति प्रकृति है। पाँचवाँ कर्मग्रन्थ इसे दर्शन गुण को आच्छादित करने वाली, दर्शन गुण का सर्वघात करने वाली प्रकृति कह रहा है। इसलिये नींद में सम्यक् दर्शन की प्राप्ति भी नहीं होती, नींद में आत्मविकास भी नहीं होता, नींद में जीव गुण श्रेणि भी नहीं चढ़ सकता। फिर साधना क्या?

परिस्थिति को लाँघ जाना शुक्ल ध्यान है। वह शुक्ल लेश्या एवं अप्रमत्त अवस्था में, 8 वें गुणस्थान से ही प्रारम्भ हो जाता है। उसके पहले, उस शुक्ल ध्यान के लिये परिस्थिति को साधना होगा, विषयों से विमुख होना होगा, आत्मविश्वास जगाना होगा, धर्म ध्यान में आना होगा। नींद का गुण दृश्य से विमुखता और जागृति का गुण चिन्मयता है। इन दोनों के लिए जागृति का उपयोग जागृति पूर्वक दृश्य से विमुख हो आत्मा में रहने में करना है। ममता, अहंकार, संग और गारव छूटने पर सब जीवों पर समभाव आने पर ही यह संभव है। उत्तराध्ययन के 19 वें अध्याय में कहा-

निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो।
समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा।
समो निंदा पंसासु तहा माणावमाणओ॥

मेरी भावना में आप बोलते भी हैं। होकर सुख में मग्न न फूलें.... ।

कवि ने आगम के सार को सरल भाषा में कह दिया- आँखे मूंदो नींद लगेगी। आँखें बंद करने पर नींद की विडम्बना। जगने पर है जग जंजाल। जागते ही दृश्य से सम्बन्ध, भारी कर्म-बंध। 5 इन्द्रियों के 23 विषय-विकार-अनित्य की ओर गतिशीलता, अनन्तानुबंधी, मिथ्यात्व। आंख बंद चित्त जगे तो ध्यान दशा धर्म ध्यान, साधना, सामायिक, दृश्य विमुखता आत्मसम्मुखता।

विषय के सेवन से जीव को बार-बार मरना पड़ता है, सुनकर भी विश्वास नहीं होता। विष खाने से जीव मर जाता है, इस पर कैसी आस्था है? हमारा विश्वास कैसा होना चाहिये? अनित्य की ओर गतिशील होने पर विवेक भाव में परिणत होता है। यह विश्वास का, आस्था का प्रसंग है। आस्था कैसी होनी चाहिये? विष खाने से मृत्यु हो जाती है, उसे खाँने को कोई तैयार नहीं होता। विषय सेवन करने से बार-बार मरना होता है। विषय-कषायों का त्याग करने वाले संघ शिरोमणि आचार्य भगवन्त महामन्दिर पधार गये हैं। आप उनके मुखारविन्द से सार ग्रहण कर जीवन को सफल बनायें, इन्हीं भावों के साथ....।

कषायों को छोड़कर, सरलता अपनाइए

श्री मोहन कोठारी "विनर"

कषायों को छोड़कर, सरलता अपनाइये,
फिर अपनी ज़िदगी को, स्वर्ण सा चमकाइये।
कषायों को छोड़कर, सरलता अपनाइये।

क्रोध, मान, माया, लोभ, शत्रु ये हमारे हैं,
इनके आगे ही तो सब, ज़िंदगी को हारे हैं।
शत्रुओं पे तुम सदा, विजय शीघ्र पाइये,
कषायों को छोड़कर, सरलता अपनाइये।। 1।।

न राग हो किसी के संग, न द्वेष हो किसी के संग,
प्रेम का व्यवहार हो, ज़िंदगी में सभी के संग।
राग, द्वेष त्याग कर, पवित्र बन जाइये,
कषायों को छोड़कर, सरलता अपनाइये।। 2।।

सरलता ही सिद्धि को, पाने का सोपान है,
महापुरुषों ने सदा, किया हमें आह्वान है।
सरलता की सीढ़ियों पर, आगे बढ़ते जाइये,
कषायों को छोड़कर, सरलता अपनाइये।। 3।।

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

कविता

मन की उलझन को सुलझा दो

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

एक विनंति प्रभु आप से, दो मुझको ऐसा वरदान।
मन की उलझन को सुलझा दो, कर लूँ अब खुद की पहचान।।

दोष पराये जल्दी दिखते, निज दोषों से अनजाना,
पर की उन्नति सह नहीं पाता, कैसे सद्गुण सरसाना,
सुनके प्रशंसा कभी न फूलूं, छूटे मेरा ये अभिमान।।
मन की उलझन.......।

कभी द्वेष की ज्वाला जलती, कभी मोह में मन मरता,
कर्मों के फल सम्मुख दिखते, फिर भी ये मन नहीं डरता,
अहंकार में सत्य भुलाया, मेटो मेरा ये अज्ञान।।
मन की उलझन.......।

इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, चित्त आकुल-व्याकुल बनता,
सुख-दुःख के इस चक्रव्यूह में, मन उलझा-उलझा रहता,
शाश्वत सुख की राह दिखा दो, जहाँ द्वन्द्व का हो अवसान।।
मन की उलझन.......।

धर्म साधना की चर्या में, क्यों उत्साह नहीं जग पाता,
इन्द्रिय सुख और पुद्गल सुख में, ये मन हरदम खुश रहता,
कदम न फिसले धर्म मार्ग से, दृढ़ मानस का दो वरदान।।
मन की उलझन.......।

मिले प्रसिद्धि इस चाहत में, किया दिखावे का व्यवहार,
बाहर मीठा अंदर गाँठें, भिन्न रहा आचार-विचार,
प्रभु से गौतम करे प्रार्थना, दूर करो सारे व्यवधान।।
मन की उलझन.......।

-संकलनकर्त्ता- धीरज जैन, चैन्नई

प्रवचन

सन्तों की शरण से सुधरता जीवन

श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.

श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. द्वारा गुरुवार, दिनाँक 1 जुलाई, 2010 को घोड़ों का चौक स्थानक, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-**सम्पादक**

संसार के संसरण को समाप्त कर, अविनाशी पद को प्राप्त करने वाले, अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्तों के चरणों में वन्दन! आगमज्ञाता, रत्नत्रय दाता, जीवन-निर्माता, मम भाग्य-विधाता, अनन्त-अनन्त उपकारी श्रद्धास्पद पूज्य आचार्य भगवन्त एवं रत्नत्रय की साधना में लीन रहने वाले रत्नाधिक मुनि पुगंवों के चरणों में भावभरा कोटिशः वन्दन!

धर्मानुरागी सज्जनों!

विश्व में सन्तों के चरणों की शरण का महत्त्व ही निराला है। भौतिक वाद के चक्कर में फँसी हुई दुनियाँ के अंधकारमय वातावरण में संत का जीवन नीले आसमान में सितारों की तरह चमका करता है। जिससे ज्योत्सना प्राप्त कर भटकता मानव-मन अपना पथ प्रशस्त कर लेता है। सन्त का जीवन विश्व-प्राणियों के लिये वरदान स्वरूप होता है। पाप के भयंकर दावानल से झुलसती हुई दुनियाँ को शांति-प्राप्ति का मार्ग सन्त भगवन्तों के चरणों की शरण से ही प्राप्त होता है। सन्त शान्ति के देवदूत होते हैं, वे उजड़े और अशान्त जीवन के मरुस्थल में शांति की निर्मल मंदाकिनी प्रवाहित करने वाले अक्षय स्रोत हैं। संत शान्त होता है, इसलिए शांति का साम्राज्य सन्त भगवन्तों के आभा-मण्डल पर छाया रहता है।

सन्त का जीवन विनाश की ओर तेजी से भागने वाली दुनियाँ को सावधान करने वाला प्रकाश-स्तम्भ होता है। सन्त का जीवन अज्ञान रूपी दल-दल से घिरी प्राणि-जाति के लिए एक हरी-भरी मुस्कान है। सन्त का जीवन फूलों की लाली है, झरनों का कलरव है, परिन्दों का संगीत है, अस्तित्व की पुलक है, धर्म की धरोहर है, चेतन की चिन्मयता है, अन्तर का अनहदनाद है, वीतरागता का संगान है, आनन्द का आवास है, साधना की सुवास है, ज्ञान

और आचार का भास है, व्यष्टि से समष्टिमय बनने का प्रकाश है, और संत का जीवन अनादिकालीन भूल की धूल को झाड़ने का सार्थक प्रयास है। सन्त का जीवन मैना का सरगम है, रतन का जतन है, चन्द्रकला सम वार्धक्य है, दर्शन का अन्तर्दर्शन है, शशि सम सौम्य है, विनीत का गीत है, समता का परिचायक है, उषा की लालिमा है, निरंजन की चमक है, और संत का जीवन सुव्रत बनने का पुरुषार्थ है।

बन्धुओं! संत जीवन के मुख्य तीन लक्ष्य होते हैं- (1) आत्म-शान्ति, (2) आत्म-शुद्धि और (3) आत्म-मुक्ति। आत्म-शान्ति सन्त जीवन का निर्णय है, आत्म-शुद्धि सन्त का प्रयास है और आत्म-मुक्ति शान्ति और शुद्धि का मंगल परिणाम है। संतधर्म के व्याख्याकार ही नहीं होते, अपितु वे स्वयं एक व्याख्या है। संत धर्म का मूर्तिमान रूप होता है, **(सन्तो हि मूर्तिमान् धर्मः)** संत का जीवन धर्म का जीता जागता स्वरूप है। इसीलिए धर्म-प्राण भारतीय संस्कृति का शीर्ष-पुरुष 'संत' होता है। सन्त एक हाड़-माँस के पुतले के रूप में व्यक्ति ही नहीं, अपितु धर्म, सदाचार, सत्य, अहिंसा, विश्व-प्रेम और विश्व-मैत्री का एक प्रतिष्ठान होता है।

जगत् की अनन्यतम विभूति, परमात्मा की अनुभूति, सर्वानुभूति की धड़कन को सुनकर स्वानुभूति की अभिव्यक्ति करने वाला संत होता है। सन्त की कृपा की एक किरण, ज्ञान की एक रश्मि, करुणा की दो बून्द हमारे जीवन को नौनिहाल कर सकती है।

सन्त का आहार-निवास आदि निश्चित नहीं होता, फिर भी वे निश्चिन्त नजर आते हैं, जबकि गृहस्थ का यह कार्य निश्चित होता है, पर वहाँ पर निश्चिन्तता का अभाव ही दिखाई देता है। सन्तों की शरण में जाने से अशरीरी बनने की राह मिलती है, संतों की शरण संसार रूपी समरांगण में कर्मों का हरण कर मोक्ष-रूपी लक्ष्मी को वरण कराने में सहयोगी बनती है।

बन्धुओं! संत का कोई निश्चित देश नहीं होता, उनका तो सिर्फ एक उन्मेष होता है- अन्तः चेतना का स्फुरण। उनका तो एक संदेश होता है- जीवन में दिव्यता का दर्शन।

संत शत्रुता के शूल नहीं चुभाता, कलह के काँटें नहीं बोता, षड़यन्त्र के यन्त्र नहीं बेचता, अपितु संत तो समाधि-करण का बीज देता है और

आचरण का आशीष देता है। जबकि संत भगवन्तों का जीवन, पाप, ताप और अभिशाप तीनों का नाश करने वाला है।

धन्य है जोधपुर नगर, भाग्यशाली हैं जोधपुर वासी, जिन्हें संत ही नहीं, संतों के शिरोमणि संघनायक आचार्य भगवन्त के चरणों की सन्निधि प्राप्त हो रही है। आचार्य भगवन्त की सन्निधि को पाकर हम स्वयं की निधि से परिचित हो जायें तो सन्निधि पाना सफल और सार्थक हो जायेगा।

बन्धुओं! जैसे, प्राची में सूर्य का उदय होने पर प्रकृति ही नहीं, समस्त जगत हर्ष विभोर हो उठता है, केतकी का फूल जब खिलता है, तब कुञ्ज ही नहीं समस्त मधुवन मधुर सुवास से महक उठता है। वैसे ही गुरु-हीरा के जोधपुर पदार्पण पर समस्त नगरवासी श्रावक प्रसन्नचित्त, प्रमुदित हैं। विशेष आनन्दित भी हैं- साध्वी प्रमुखा जी एवं महासती वृन्द, क्योंकि लम्बे समय के अन्तराल परश्चात् गुरु-भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं सन्निधि को प्राप्त किया है।

प्रमुखा किसे कहते हैं? ज्ञानीजनों ने समाधान फरमाते हुए कहा- प्रमुखा अर्थात् प्रगति की ओर मुख है जिनका। साध्वी प्रमुखा जी का जीवन निरन्तर प्रगति के आयामों को छू रहा है। शारीरिक अस्वस्थता में भी मन से मस्त नजर आते हैं, वचन से व्यस्त हैं, और तन में व्याधि होते हुए भी तुष्ट हैं।

सज्जनों! गुरु हीरा का कथन है कि आपकी कथनी और करणी एक बने। गुरु हीरा की भावना है कि आप लोगों के मन में भव-परम्परा को मिटाने के भाव बनें। गुरु हीरा का मानना है कि आप लोगों के जीवन में मान न रहे। गुरु हीरा का चेहरा ही नहीं, चारित्र भी बोलता है। गुरु हीरा का मुख ही नहीं, मुस्कान भी बहुत कुछ कहती है।

अन्त में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आचार्य भगवन्त के पदार्पण पर अरिहन्त नहीं बन सको तो कम से कम कर्मों का अन्त करने की कला जरूर सीख लेना, सिद्ध न बन सको तो कम से कम साधना को शुद्ध कैसे करना, इसके गुर गुरु से जरूर प्राप्त कर लेना, आचार्य नहीं बन सको तो कम से कम आर्य जरूर बन जाना, उपाध्याय नहीं बन सको तो कम से कम स्व का अध्ययन जरूर कर लेना, जिससे जीवन स्वस्थ होगा और साधना शुद्ध हो जायेगी और साधु नहीं बन सको तो कम से कम सीधे और सादे जरूर बन जाना। मंगल पदार्पण पर यही है मंगल भावना।

अमरत्व का वह उपासक (9)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली नेअपने शब्दों में धारावाहिक रूप में किया है।

अहो आश्चर्यम्! (2)

मुनिवर,

आचार्यपद ग्रहण के समय आचार्य हस्ती की वय कितनी थी?

पथिक,

पदारोहण के समय वे केवल उन्नीस वर्ष नौ मास और उन्नीस दिन के थे।
इतनी कम वय में विगत आठ शताब्दियों में भी
जैन जगत में नवकार-मंत्र के तीजे पद पर
प्रतिष्ठित होने वाला शायद ही कोई अन्य हो।

मुनिवर,

यह घटना तो स्वप्नलोक की कोई कल्पना लगती है।

पथिक,

महापुरुषों का जीवन ऐसी ही असाधारण और
अद्भुत घटनाओं का कोश होता है।
आचार्य हस्ती केवल गुरु से जुड़े ही नहीं,
उनके गुरुत्व को भी प्राप्त किया,
वीतराग देव से वे एकनिष्ठ ही नहीं हुए,
उनके देवत्व को भी प्राप्त किया एवं

उन्होंने धर्म की सम्यक् पालना ही नहीं की,
उसके स्वरूप्र को भी आत्मसात् किया।
आचार्यपद ग्रहण के पश्चात्
उस श्रमणसूर्य ने अप्रमत्तता के प्रोज्ज्वल प्रकाश में
एक श्रेष्ठ नायक के नये कीर्तिमान स्थापित कर दिये।
उनका इकसठ वर्ष का लम्बा आचार्य-काल
नर में नारायणत्व का आधान करने वाला गुरुकुल बन गया,
जिसमें संयम, शील और शुभ भावों की त्रिवेणी बहने लगी।
परिग्रह से उन्होंने अपना पद कभी बोझिल नहीं किया,
आत्मदर्शन से कभी ओझल नहीं किया।
उनमें प्रदर्शन की गंध नहीं, आत्मदर्शन की महक थी।

पथिक,

वे अमृत की ऐसी बूंटी बन गये
जिसको पीने से मानवीय मूल्य पुनर्जीवित हो जाते हैं।
वे इतने सरल थे कि धर्म भी उनके लिए सरल हो गया और
धर्म की पालना भी उनके लिये सरल हो गई।
शायद ही कोई ऐसा मानवोपयोगी मंगलमय पथ होगा
जो उनकी साधना की संजीवनी से अनुप्राणित नहीं हुआ।
जन-जन को छाया प्रदान करने वाले
वे एक वटवृक्ष बनकर धूप में चलते थे
ताकि कोई संत्रस्त प्राणी उनके सान्निध्य में आकर
अपूर्व शान्ति का लाभ ले सके।
कलियुग में सतयुग की सृष्टि करने वाले
वे श्रमण चेतना के अन्यतम प्रहरी बन गये।

मुनिवर,

मैं तो उनकी गुणगाथा की महक से ही प्राणवान हो रहा हूँ।

पथिक,

जैसे सागर को पैरों से नहीं मापा जा सकता, वैसे ही

मैं उनकी महानता का बखान अपनी
सीमित बुद्धि से नहीं कर सकता।
वे एक ऐसे प्रकाशपुंज थे, जहाँ
अंधविश्वास, आडम्बर, अविवेक, संशय आदि,
दुरभिसंधि रूप अंधकार टिक नहीं सकता था।
वे एक ऐसे गुरु थे,
जिनकी गुरुता से धर्म का गौरव बढ़ा।
उन्होंने अपने जीवन को ऐसे जिया कि
आने वाला युग उनसे प्रेरणा ले सके।
उन्होंने समय की भित्ति पर ऐसे चित्र उकेरे कि
जिन्हें देख-देखकर आने वाली पीढ़ी निहाल हो सके।

पथिक,
चाँद की चाँदनी के साथ उष्णता हो तो आश्चर्य,
आदित्य की उष्णता के साथ शीतलता हो तो आश्चर्य,
सागर में गहराई के साथ ऊँचाई हो तो आश्चर्य और
पर्वत की ऊँचाई के साथ गहराई हो तो आश्चर्य।
परन्तु गुरुदेव में तो इन सभी आश्चर्यों का समावेश था।
उनमें तप की उष्णता के साथ समता की शीतलता भी थी और
ज्ञान की गहराई के साथ चारित्र की ऊँचाई भी थी।

पथिक,
संसार के होकर जीना तो जन्म का आधार है, पर
संसार से ऊपर उठकर जीना मुक्ति का आधार है।
गुरुदेव संसार के होकर नहीं जिये,
संसार से उठकर जिये।
उनकी संसार से उठकर जीने की चरम परिणति तब हुई, जब
उन्हें मृत्यु की पदचाप सुनाई दी।
अन्त समय नजदीक जानकर वे पूर्ण समाधिस्थ हो गये।

पथिक,

साधना तो प्रेरणा से भी हो सकती है, परन्तु
समाधि तो स्वयं को ही लानी होती है।
समाधिअवस्था में जब तक उनकी श्वास बही,
उसे बहने का अवसर दिया और
जब वह डूबने लगी, तो
तेरह दिन तक उसे सम्मान देकर
समाधिमरण से उसका शृंगार किया।
पूर्ण चैतन्य भाव में उनका निष्काम समाधिमरण
आगमकालीन कथाओं को जीवन्त कर गया।
किसी जैनाचार्य का ऐसा समाधिमरण
विगत दो शताब्दियों में भी देखने में नहीं आया।
धरती से विदा होने के बाद भी
वे अपने प्रभामंडल से हमें आलोकित कर रहे हैं।
वस्तुतः रोम-रोम से अपने संतत्व की धारा बहाने वाले
वे एक शलाका पुरुष बन गये हैं।

पथिक,

तुमने ठीक ही कहा था कि
माँ रूपा ने एक रत्न को जन्म दिया और
शोभा गुरु के रूप में एक शिल्पी ने उस रत्न को तराशा।
आज वही शिल्पी अपने शिष्य को देखकर मानो कह रहा होगा-
"अहो आश्चर्यम्! अहो आश्चर्यम्!! अहो आश्चर्यम्!!!"

मुनिवर,

मेरा परम सौभाग्य है कि
मैं उनके कथामृत और गुणानुवाद का पान कर रहा हूँ।
ऐसे ही संतों के लिये कहा गया है-
मुख दीखत पातक हरै, परसत कर्म बिलाहिं।
वचन सुनत मन मोह गत, पूरुब भाग मिलाहिं।।

जिनका मुख दिखते ही पाप नष्ट हो जाते हैं,
जिनका स्पर्श होते ही कर्म विलीन हो जाते हैं,
जिनके वचन सुनते ही मन का मोह चला जाता है,
ऐसे संत तो पूर्व-जन्म में अर्जित भाग्य से ही मिलते हैं।

पथिक,
भले ही आज वे स्थूल रूप से हमारे मध्य नहीं है, पर
उनकी पदचाप अभी भी मुझे सुनाई दे रही है।
वे आते हुए मानो कह रहे हैं-
"मैं निशा बनकर तुम्हें सोने न दूँगा,
मैं उषा बनकर जगाने आ रहा हूँ।
आज अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा,
अरुण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।।"

मुनिवर,
उनका तो स्मरण ही अतिपावन है,
उसके साथ स्तुति का समावेश तो
मन को पावनधाम बना देगा।

पथिक,
स्मरण, समर्पण और स्तुति की त्रिवेणी में नहाओगे तो
इष्ट की प्राप्ति होगी ही-
"बेखुदी छा जाय इतनी, दिल से मिट जाये खुदी,
उनसे मिलने का तरीका, उनमें खो जाने में है"
श्रद्धा की इस त्रिवेणी में तुम भी मेरे साथ नहालो,
अपने मन की वीणा के तार साधकर
मेरे स्वर में स्वर मिलालो-

हे नाथ!
मेरा बोलना तेरा जाप हो जाये,
मेरी चेष्टाएँ तेरी उपासना हो जाये,

मेरा चलना तेरी प्रदक्षिणा हो जाये,
मेरा शयन तुझे प्रणाम हो जाये एवं
मेरी समस्त क्रियाएँ
तेरी आज्ञा का पारायण हो जाये

हे परम आत्मार्थी!

तुमने आत्मा को जाना, यही तुम्हारा सम्यग्ज्ञान था,
तुमने आत्मा में अपनापन माना, यही तुम्हारा सम्यग्दर्शन था और
तुम आत्मा में ही रहे, यही तुम्हारा सम्यक् चारित्र था।

हे गुरुवर!

तेरी प्रेरणा का पय
मेरे मन उपवन को सदा हरा-भरा रखकर
उसे पल्लवित और पुष्पित करता रहे।
जब मेरी बुद्धि मोहित हो जाये,
प्रज्ञा तिरोहित हो जाये, तब
तेरा आश्चर्य भरा जीवन
प्रकाशदीप की तरह मेरा पथ आलोकित करता रहे।

हे प्रभो!

मेरे नयनों में तेरे उपकारों के प्रति अश्रुजल है,
बस, इसे ही तू मेरा अर्घ्य समझना।
मेरे हृदय में तेरे उपकारों का नाद गुंजायमान हो रहा है,
बस, इसे ही तू मेरी प्रार्थना समझना।
इसके अतिरिक्त एक अकिंचन शिष्य तुम्हें दे ही क्या सकता है?
"जगहित निज सर्वस्व दान कर, तुम तो हुए अशेष।
क्या देकर प्रतिदान करूँ मैं, पास नहीं लवलेश।।"

(क्रमशः)

किसी का बुरा मानना छोड़ दें, हम बुरे नहीं बनेंगे।
किसी पर अहसान लादना छोड़ दें, हम हलके रहेंगे।।

कविता

दृष्टिकोण

डॉ. रमेश "मयंक"

सरल नहीं है
मन को साधना
मन दौड़ता विकारों की ओर
उलझता कषायों में
भागता अनादि प्रवृत्तियों के
संचालन के पीछे-पीछे।
नहीं होती जिनके पास
उमंगें, संकल्प-शक्ति
वहाँ बसती-
वासना में आसक्ति
साधना से विरक्ति।
साधना-पथ को
कठिन माना तो
डर सिर पर बैठ जाएगा
और यदि
सरल जाना तो
खोया साहस भी लौट आएगा
कठिन से कठिन मार्ग भी
सुगम नज़र आएगा।
साहसी ही सोचता है-
यह मार्ग तो अभी पार होता है
विधेयात्मक संकल्पवान
गतंव्य के सपने संजोता है
राग-द्वेष को नकारो
संकल्प, जोश, साहस को स्वीकारो
बिना थके, हारे, अविराम
गतिवान, ऊर्जावान प्राणवान बनो
गति को अंजाम दो
मंजिल तक पहुँच कर
विजय-पताका थाम लो।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

Tattva bodha

OSWAL JAIN STATESMEN IN PRINCELY STATE OF RAJASTHAN

Dr. A.L. Gandhi (M.A.,LLB, Ph.D)*

Almost every princely State of Rajasthan and every Jagir was served by Oswal Ministers & Officers for a long period of time before independence. They are too numerous to be described and discussed but a bare outline of the life of some of the important ones who have made a mark in the history of Rajasthan is given herein below.

JODHPUR

In Jodhpur State, the name of Teja Gadahiya is well known. He was a great warrior and faithful officer of Maharaja Maldeva. In about 1541 A.D. Shershah Suri attacked Jodhpur with large forces but he could not defeat the brave Rajputs so easily, He, therefore, took recourse to treachery and became successful in capturing Jodhpur and appointed his deputy Hamaja to govern Jodhpur. According to Oswal Vansavali, Teja Gadahiya restored the kingdom to Jodhpur to Maharaja Maldeva after putting Hamaja to death. It shows his bravery as well devotion towards his master.

Mohnot Jayamal- Mohnot Jayamal was another great Oswal warrior and philanthropist. The Mughal Emperor gave districts of Jalore and Sanchore to Maharaja Gaj Singh of Jodhpur who appointed Mohnot Jaymal as their Governor. He carried on their administration very successfully and defeated 500 Marathas who invaded Sanchore. When a dreadful famine broke out in 1630 A.D. he distributed grains free of charge among the needy and distressed. Besides he spent his entire property in charitable activities.

Mohnot Nainsi- Mohnot Nainsi, the son of mohnot jayamal was also an able administrator and a historian of repute. He

*Dr. Amrit Lal Gandhi sent this article before his demise.

acted as Diwan of Maharaja Jaswant Singh. He introduced the census system in Marwar and improved the administration by removing many lags and beggars. He compiled a history of Marwar on the lines of Abul Fuzl. Mohnot Nainsi was a devout Jain and possessed spotless character. He led an extremely simple life strictly according to the tenets of Jainism.

Ratan Singh Bhandari- Ratan singh Bhandari was another great warrior and administrator who served maharaja Abhay Singh with great zeal and devotion in 18th Century. Professionally a soldier and statesman, Ratan Singh was almost a Sadhu in his private life. Naturally, therefore, he was held in high esteem by all.

Samasera Bahadura- Samasera Bahadura who was commander-in-chief of Maharaja Vijay Singh, participated in several battles. In recognition of his gallantry and heroism in the Godwan battle in 1792 A.D. Maharaja Vijay Singh conferred upon him the unique honour of Rao Raja and a Jagir. He was a very piousman and stories about his charity and purity are still current in Marwar.

Dhan Raj- Another notable Oswal who sacrificed his life for his master was Dhan Raj who was appointed Governor of Ajmer when Maharaja Vijay Singh conquered Ajmer from Marathas in 1787 A.D. But after a few years, Maratha General De Boighe made efforts of regain it back. Brave warrior Dhanraj stood the siege successfully for a long period of time. Considering the situation to be dangerous. Maharaja Vijay Singh issued orders to Dhanraj to surrender the place to the enemies and return to Jodhpur. But it was too exacting a demand on brave and chivalrous nature of Dhanraj. He would neither consent to a disgraceful surrender nor would he be guilty to disobedience to his master. He was thus placed in a dilemma & eventually ended his life with these words, "Go and tell the Prince, thus only I could testify my obedience and over my dead body alone, could a Maratha enter Ajmer."

Inder Raj Singhi- Inder Raj Singhi was another Oswal Diplomat who played his role when Jagat Singh, the ruler of Jaipur invaded upon Jodhpur ruler Mansingh with a large army and also assisted by Maharaja Sultan Singh of Bikaner and Pindarl Amir Khan. Jaipur forces took possession of large areas of Marwar. At this time Singhi Inder Raj and Bhandari Gangaram requested Maharaja Mansingh to let them out through the secret path of the fort. Thereafter, they collected large forces and won Amir Khan Pindari to their side by offering him Rupees One Lakh bribe and thereafter Singhi Inder Raj and Pindari Amir Khan routed Jaipur Forces.

Maharaja Mansingh, therefore, honoured Inder Raj Singhi and appointed him Chief Minister. After that Inder Raj Singhi besieged Bikaner and compelled the Maharaja to pay four lakhs of rupees as a price of raising the siege. He also saved his master from the serious plot of Pindari Amir Khan. When Inder Raj Singhi invaded Bikaner, Amir Khan, in his absence got pattas of the Districts of Parbatsar, Maroth, Didwana and Sambhar in his favour from the Maharaja. Soon, the Pathans of Amir Khan reached jodhpur and demanded their salaries as well as the possession of these districts. When the original pattas of these Districts were produced before Inder Raj Singhi he swallowed them up. But this act infuriated the pathans who killed Singhi Ji on sport. When these news reached Maharaja Mansingh, he expressed deep sorrow and ordered his royal funeral. He also gave jagir and Divangirl to his son Fateh Raj Singhi who also made a mark as an able administrator.

UDAIPUR

Udaipur state has also been served by a large number of Oswal Statesmen, administrators and soldiers with singular devotion and loyalty. One of them was ASASHAHA who was kiledar of Kumbhalmer. He afforded asylum to the infant Prince Udai Singh against the clutches of Banavira abd treated him as his nephew. It was with great

pursuation that he handed over Udai Singh to Panna Dhai. When Udai Singh become major, ASASHAHA along with handful of chiefs installed him on the throne and saved the dynasty from ruin.

Another Oswal officer who proved loyal to Udai Singh in the hour of crisis was Mehta Chilaji. Though he was the kiledar of the Chittor Fort under Banavira his real desire was to restore the fort to the rightful claimant Udai Singh. Hence when Banavira besieged the fort, he conveyed all secrets to Udai Singh and thus helped him in capturing the fort of CHITTOR.

Bhamashaha- The Saviour of MEWAR was most notable noble Oswal, who as Diwan of Maharana Pratap set high example of Patriotism and loyalty. When Pretap was in desperate need of money to continue the struggle with Mughals. BHAMASHAHA the embodiment of truth and loyalty came to his help and disclosed the secrecy of hidden treasure with him. This enabled the Maharana to collect forces and renew war against Akbar. The result was that Maharana Pratap regained Mewar from the Mughals.

Singhvi Dayalshah- As Diwan of Maharana Raj Singh, he was greet General and Philanthrophist. When Mewar was attacked by Aurangzeb in 1679 A.D. Dayalshah fought on the side of maharana and set an example of undaunted heroism. He was deeply religious minded devout jain who constructed a beantiful Jain Temple in Shape of a fort on the mountain, just near Raj Samand.

Mehta Agarchand- He also proved himself to be a very successful Diplomat and able statesman of the 18th century A.D. in the reign of Maharana ARI SINGH and BHIM SINGH. Another notable name in the reign of Maharana Bhim Singh is that of Metha Devichand, who was also a very far sighted statesman.

(Continue)

- 738, Nehru Park Road, Jodhpur(Raj.)

नारी-स्तम्भ

रिश्तों का संसार : परिवार

आचार्य महाप्रज्ञ

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज के साथ जीता है। समाज की सबसे छोटी इकाई है परिवार। परिवार सामंजस्य का एक प्रयोग है। यदि व्यक्ति दो-चार व्यक्तियों के साथ शांतिपूर्ण जीवन जी सकता है तो वह बड़े समूह के साथ भी शांतिपूर्ण जीवन बिता सकता है। यदि परिवार में कलह, लड़ाई-झगड़ा, रोना-रुलाना- यह सब चलता है तो उसका जीवन नारकीय जैसा बन जाता है। शांतिपूर्ण जीवन के लिए यह जरूरी है कि व्यक्ति परिवार के साथ शांतिपूर्ण ढंग से रहे। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का एक सूत्र दिया गया- एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ शांतिपूर्ण ढंग से रहे और सह-अस्तित्व को स्वीकार करे। जब परिवार में ही शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व नहीं है तब समाज, राष्ट्र या अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वह कैसे संभव है? प्रशिक्षण का पहला पाठ है- व्यक्ति परिवार के साथ शांतिपूर्ण ढंग से रहे। प्रत्येक व्यक्ति ऐसा चाहता है, पर चाहते हुए भी वह ऐसा नहीं कर पाता। प्रश्न होता है- ऐसा क्यों नहीं होता? जीवन शांतिपूर्ण क्यों नहीं बनता? इसका कारण क्या है?

हम कारणों पर विचार करें। कारण की समीक्षा किए बिना इस समस्या को मिटाया नहीं जा सकता। अशांति का कारण है-चेतना का अपरिष्कृत होना। आदमी शरीर, वाणी और मन के साथ जीता है। इन सबसे आगे है हमारी चेतना। जब तक चेतना का परिष्कार नहीं होता, शरीर भी गंदला-गंदला सा रहता है, वाणी भी अपवित्र और गंदी सी रहती है, मन भी निर्मल नहीं बनता। ये सब चेतना के द्वारा संचालित हैं। चेतना परिष्कृत होती है तो ये सारे निर्मल बन जाते हैं। चेतना अच्छी नहीं होती है तो ये भी अच्छे नहीं बनते। चेतना का परिष्कार नहीं है, विवेक जागृत नहीं है, बुद्धि इतनी विकसित नहीं है कि हम सच्चाई को ठीक से समझ सकें इसीलिए परिवार में संबंधों का जोड़-तोड़ चलता रहता है।

व्यवहार में हम अनुभव करें कि दस-बीस लोग एक हैं। इसका परिणाम होगा कि परिवार में होने वाले संघर्ष कम हो जाएँगे। कठिनाई तब होती है, जब परिवार का एक सदस्य सोचता है कि मैंने यह कहा और उसने नहीं माना। वह कुपित हो जाता है। कलह प्रारम्भ होने का यह आदि बिंदु है। क्योंकि वह मान बैठा है कि इस

परिवार का मैं सबसे बड़ा सदस्य हूँ। मेरी बात सबको माननी चाहिए। जब ऐसा नहीं होता, समस्या खड़ी हो जाती है। यदि यह सत्य उसके अनुभव में रहे कि मैं उसे जितना मेरा मानता हूँ, उतना ही वह मेरे से भिन्न भी है। मैं भी उससे उतना ही भिन्न हूँ। मैं अकेला भी हूँ। वह मेरा नहीं भी है। यह बात स्मृति-पटल पर बनी रहती है तो संतुलन नहीं बिगड़ता, कलह उत्पन्न नहीं होता। निश्चय और व्यवहार-दोनों दृष्टियों का यदि संतुलन बना रहता है तो पारिवारिक कलहों में बहुत बड़ा अंतर आ जाता है।

शांतिपूर्ण जीवन का रहस्य

यदि हम दूसरे के साथ रहना चाहते हैं तो हमारी सबसे पहली आवश्यकता होगी-अध्यात्म की चेतना का विकास। 'हम अकेले हैं,' 'अकेले आए हैं,' 'अकेले जाना है'- हमारे भीतर यह संस्कार, यह भावना जितनी जल्दी परिपक्व होगी, हम उतना ही परिवार या समूह के साथ शांतिपूर्ण जीवन जी सकेंगे। अध्यात्म का यह सूत्र शांतिपूर्ण सहवास का भी महत्त्वपूर्ण सूत्र है। अध्यात्म की उपेक्षा कर, धर्म की उपेक्षा कर कोई भी व्यक्ति शांतिपूर्ण जीवन नहीं जी सकता। सामुदायिक जीवन के प्रयोग साम्यवादियों ने किए, किन्तु वे विफल हो गए। अध्यात्म साथ में होता तो साम्यवाद विफल नहीं होता। इस सच्चाई के आलोक में हम अध्यात्म का मूल्यांकन करें, अध्यात्ममय जीवन जीने का प्रयोग करें, शांतिपूर्ण पारिवारिक एवं सामुदायिक जीवन का रहस्य हमारे हाथ में होगा।

आचार्य तुलसी ने समाज के दो चित्र प्रस्तुत किये थे- स्वस्थ समाज और बीमार समाज। क्या उस समाज को स्वस्थ समाज कहा जा सकता है, जिसमें व्यवस्थागत बहुत तरह के दोष हैं? अगर समाज की व्यवस्था त्रुटिरहित हो तो कोई व्यक्ति दहेज की माँग नहीं कर सकता। दहेज प्रथा को मैं नम्बर एक की समस्या मानता हूँ। भ्रूणहत्या का स्थान नम्बर दो पर है। पहली बीमारी है दहेज की। दहेज के डर से ही भ्रूणहत्या हो रही है। लड़की पैदा हुई तो दहेज की व्यवस्था करनी पड़ेगी। लड़का हुआ तो उससे वंश परम्परा चलेगी और वह बुढ़ापे का सहारा भी बनेगा। यह सोच है आज के आदमी की।

वृद्धों की उपेक्षा

माता-पिता का लड़के के प्रति विशेष मोह होता है, लड़की के प्रति कम। लेकिन आज तो ऐसी घटनाएँ भी हो रही हैं कि बड़े लड़के ने आर्थिक स्थिति सुदृढ़

होते ही माता-पिता को किनारे कर दिया। जीवन-यापन के लिए एक निश्चित राशि की व्यवस्था कर दी और अपनी अलग दुनियाँ बसा ली। अनेक लोग मेरे पास आँसू बहाते हुए कहते हैं- 'सोचा था पढ़-लिखकर लड़का बुढ़ापे का सहारा बनेगा, किंतु उसी ने जीवन का सबसे बड़ा दर्द दिया। अब हम उसे एक भार की तरह लग रहे हैं। हमारे साथ उसका व्यवहार अमानवीय है। हम उपेक्षित जीवन जी रहे हैं।'

पता नहीं क्यों यह धारणा बना ली गई कि बेटा कमा कर खिलाएगा, आराम देगा। लोग बेटे में सुख और बेटी में चिंता और दुःख देखते हैं। मेरे पास एक वृद्ध व्यक्ति आया। मैंने देखा- उसकी आँखों से आँसू टपक रहे थे। उसने कहा- 'महाराज! बेटों ने घर से निकाल दिया। एक बेटी है, अब वह मेरी सेवा कर रही है। उसी के घर में रह रहा हूँ।'

बेटी-बेटे में अंतर करने का दृष्टिकोण बदलना चाहिए। ऐसे भी परिवार देखने को मिले कि पाँच-सात बेटे हैं और अकेली माँ किसी तरह बचे हुए जीवन के दिन काट रही है। व्यक्तिवादी सोच के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, समाज में एक अकल्पित बदलाव आया है।

सांस्कृतिक संक्रमण की समस्या

संस्कृति के संक्रमण ने इसमें अपनी भूमिका निभाई है। आज के ग्लोबलाइजेशन के युग में दुनिया सिमट कर बहुत छोटी हो गई है। एक ही दिन में आदमी कई देशों का भ्रमण कर लेता है। स्वाभाविक है कि इससे उसकी विचारधारा प्रभावित होगी। भिन्न परिवेश में रहकर वह अपनी संस्कृति और सभ्यता को कब अपनाए रख सकेगा?

बहुत जरूरी है कि सकारात्मक परिवर्तन के लिए धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में भी क्रांति हो। अहिंसा भी क्रान्ति का विषय है। हिंसा का संबंध केवल मारने और न मारने से ही नहीं है। प्रचलित सामाजिक बुराइयों से कैसे छुटकारा मिले, इस पर भी ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। इसके लिए परिवार में प्रशिक्षण का क्रम चले। विद्यालय और संस्थानों में जो प्रशिक्षण चलता है, वह कार्य-दक्षता बढ़ाने का प्रशिक्षण है, बुद्धि को और कुशाग्र बनाने का प्रशिक्षण है। आदमी के सोच-विचार से उसका संबंध नहीं है। पारिवारिक जीवन में सौहार्द कैसे बढ़े, उस प्रशिक्षण का कोई प्रावधान नहीं है, कोई कोर्स नहीं है। यह प्रशिक्षण तो एक अलग

तरह का प्रशिक्षण है, जिसमें जीवन के मूलभूत तत्त्वों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

लक्ष्य और मार्ग

जीवन के लिए दो चीजें बहुत जरूरी हैं-लक्ष्य और संकल्प। जीवनयात्रा के लिए ये दोनों बहुत आवश्यक हैं। जिसने जीवन का न तो कोई लक्ष्य बनाया, न कोई संकल्प किया, वह जीवन भर भटकता रहेगा। कहाँ जाना है? अगर यही पता नहीं है तो फिर व्यर्थ में चलते रहने से फायदा क्या?

लक्ष्य है शांति। मुझे शांति के साथ जीना है। लड़ाई-झगड़ा करते हुए नहीं जीना है, तनाव के साथ नहीं जीना है। रोते-रोते नहीं जीना है। गालियाँ देते-देते नहीं जीना है। जो दिन-रात कलह और तनाव का जीवन जी रहे हैं, उनके बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन का कोई लक्ष्य नहीं बनाया।

शांति और सामंजस्य का सूत्र

विवाह सामाजिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। यहाँ से भविष्य का एक निर्धारण होता है। विवाह को व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा के लिए आश्वासन मानता है। बड़ी आशाओं और उम्मीदों के साथ वह घर बसाता है। किंतु उसके साथ प्रायः कोई गंभीर चिंतन नहीं होता। केवल रंग-रूप देख लिया, क्वालिफिकेशन देख ली और बात पक्की हो गई। जिसके साथ पूरा जीवन व्यतीत करना है, क्या उसकी योग्यता के मापदंड में सिर्फ रूप और सौंदर्य ही पर्याप्त हैं?

हर व्यक्ति का भाव और इमोशन्स अपना-अपना है। पति का अपना और पत्नी का अपना। जहाँ संवेगों का इतना बड़ा भेद है, वहाँ एकरूप होना बड़ा कठिन काम है। पहले से अगर लक्ष्य हो कि हमें शांति के साथ रहना है तो शादी जैसे मामले में लोग अपने जीवन साथी का चुनाव बहुत गंभीरता से करेंगे।

सुखी और सामंजस्यपूर्ण जीवन का सबसे बड़ा सूत्र है सहिष्णुता। अगर विवाह के पूर्व कोई यह लक्ष्य बना लेता है कि वैवाहिक जीवन के प्रथम क्षण के साथ ही मुझे शांति, समता और सहिष्णुता का विकास करना है तो उसका जीवन शांतिपूर्ण रहेगा। अगर सहन करने की शक्ति नहीं है तो जीवन भर पति-पत्नी में कलह चलती रहेगी। हमारे सामने इस तरह का दुःखी जीवन जी रहे कितने ही लोगों की राम कहानी आती रहती है। कारण एक ही मिलता है कि सहन करने की शक्ति नहीं है। सहिष्णुता का विकास करने को कोई तैयार नहीं है।

-'युवादृष्टि' से साभार

श्रद्धार्पण

आचार्यप्रवर! तुमको प्रणाम

श्री विजयमल मेहता

तप त्याग महोदधि संत प्रवर,
आध्यात्मिक क्षितिज के रवि ललाम,
आठ सम्पदाधारी गुरुवर,
गणि गजेन्द्र की तुम पहचान,
ज्ञान, साधना, धर्म
कर्म के मूर्त रूप ऋषिवर प्रणाम

हे सन्त प्रवर! तुमको प्रणाम,
आचार्य प्रवर! तुमको प्रणाम।।

तुम में साकार धर्म दर्शन
तुम जैन श्रमण की परिभाषा
तुम धर्म क्रान्ति के अग्रदूत
हो रत्नवंश की तुम भाषा
इसीलिये तो आज प्रभो
इस युग में ऋषियुग सा वितान

हे सन्त प्रवर! तुमको प्रणाम
आचार्य प्रवर! तुमको प्रणाम।।

गणि हस्ती सा ब्रह्म तेज
गुरु दिव्य भाल पर दमक रहा
जिनशासन के आलोक पुँज
तेरा यश चहुँ दिश फैल रहा
हम किस विध गायें गुण तेरे
हे गुणनिधान तुम हो महान्

हे सन्त प्रवर! तुमको प्रणाम
आचार्य प्रवर! तुमको प्रणाम।।

'विजय' आज गुरुशरण तुम्हारी
तुम मुझको कृतार्थ कर दो

आशीष और निज दर्शन से
हर तंत्री को झंकृत कर दो
रत्नवंश का सुदृढ़ संघ,
तव प्रेरित जिसका हृदय प्राण

हे सन्त प्रवर! तुमको प्रणाम
आचार्य प्रवर! तुमको प्रणाम।।

11/626, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008 (राज.)

दुरुपयोग-सदुपयोग

श्री नितेश नागोता जैन

अति दुर्लभ मानव जीवन को हम लगा रहे हैं....

1. पाप कर्मों का भार बढ़ाने में।
2. मोह-क्रोधादि कषायों की अभिवृद्धि में।
3. आपसी वैर-विरोध, झगड़ों और खींचतान में।
4. मिथ्यात्व और हिंसा की प्रवृत्तियों में।
5. गाड़ी-बाड़ी-लाड़ी को बसाने में।
6. लाभ-लोभ और हाय-लाय की अंधी दौड़ में।
7. फैशन-व्यसन और टेंशन के कार्यों में।
8. सुख-सुविधा और साधनों के विस्तार में।
9. अहम्, मान और नाम के प्रचार-प्रसार में।
10. अनर्थदण्ड करने में।

अति दुर्लभ मानव जीवन को हमें लगाना है....

1. धर्म-साधना एवं पुण्यवानी को बढ़ाने में।
2. मोह भाव को घटाते हुए कषायों के शमन में।
3. प्रेम-आत्मीयता से जीवन जीने में।
4. सम्यक् ज्ञान, अहिंसा एवं दिशाबद्ध पुरुषार्थ में।
5. संवर-निर्जरा की प्रवृत्ति में।
6. संतोष, आत्म-शांति के विचारों-व्यवहारों में।
7. सादा-जीवन उच्च विचार की सोच-समझ में।
8. सहजता, सरलता, विनम्रता से जीवन यापन करने में।
9. पापभीरुता जगाकर अनर्थदण्ड पाप से बचने में।
10. अल्प आरंभी, अल्प परिग्रही बनने में।
11. अपने सम्यक् पुरुषार्थ से अपना जीवन सफल एवं सार्थक बनाने में।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी-365502(राज.)

चिन्तन

क्या दूध मांसाहार है?

श्री धर्मेन्द्रमुनि जी म.सा.

कभी-कभी जिज्ञासु प्रश्न करते हैं कि -"क्या दूध मांसाहार है?" उनका तर्क है कि जिस प्रकार मांस पशुओं के शरीर से प्राप्त होता है। उसी प्रकार दूध भी पशुओं के शरीर से प्राप्त होता है। अतः दूध को भी मांसाहार मानना चाहिए। हमें जहाँ तक ज्ञात है यह तर्क पश्चिम से आया है। वहाँ कई लोग जो मांसाहार का त्याग कर रहे हैं वे यही तर्क देकर दूध का भी त्याग कर रहे हैं। कोई दूध त्यागे, इस पर आपत्ति नहीं, पर उसे स्वमति से मांसाहार कह कर त्यागे यह आपत्तिजनक है।

कई मांसाहारी लोग भी अमांसाहारी लोगों को यही तर्क देते हैं और कहते हैं कि आप अमांसाहारी होकर दूध क्यों पीते हो? वे मांसाहारी लोग स्वयं तो मांसाहार त्यागते नहीं और गैरमांसाहारी का मनोबल तोड़ने का प्रयास करते हैं।

मांस और मांसाहार

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय ये सभी त्रस जीव कहलाते हैं। इनमें पंचन्द्रिय जीवों (जैसे मनुष्य, गाय, बकरी, मुर्गी, हिरण आदि) के शरीर में स्पष्टतः एक प्रमुख अवयव मांस होता है। मांस सात धातुओं में से एक है। मांस को खाना तो मांसाहार है ही, परन्तु इसके अलावा मछली, अण्डा को खाना भी मांसाहार शब्द में गर्भित है। वस्तुतः त्रस जीवों के शरीर के उन सभी अंगों/अवयवों को खाना जो उनके छेदन-भेदन से प्राप्त होते हैं- मांसाहार में गर्भित है।

गलत शब्द प्रयोग

वर्तमान में मांसाहारियों के लिए मांसाहारी और गैर मांसाहारियों के लिए शाकाहारी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ये शब्द अंग्रेजी के नान वेजिटेरियन और वेजिटेरियन के हिन्दी अनुवाद हैं। आचार्य प्रवर पूज्य गुरुदेव फरमाते हैं कि हिन्दी में ये शब्द-प्रयोग गलत हैं। क्योंकि जो मांसाहारी लोग हैं वे भी शाक-भाजी और अन्न तो खाते ही हैं। वस्तुतः पुराने समय में क्रमशः सामिषभोजी

(मांस युक्त भोजी) और निरामिष भोजी (अमांसाहारी) शब्दों का प्रयोग होता था जो कि पूर्णतः उचित था।

दूध मांस क्यों नहीं है?

मादा पशुओं के शरीर से प्राप्त होने पर भी दूध मांसाहार क्यों नहीं है, इस पर विचार करते हैं।

1. शरीर से प्राप्त होने वाला हर पदार्थ मांस नहीं है। गाय, भैंस आदि के शरीर से प्रतिदिन गोबर और मूत्र प्राप्त होता है। ये पदार्थ दवाई के रूप में खाये-पीये भी जाते हैं। शरीर से प्राप्त होने के बावजूद आज तक किसी ने गोबर और मूत्र को मांस नहीं कहा। गोबर और मूत्र शरीर के अनावश्यक पदार्थ हैं, इनके निष्कासन पर ही शरीर स्वस्थ रहता है। मनुष्य भी कब्जियत होने पर दवाइयाँ लेता है। जैसे गोबर-मूत्र शरीर के अनावश्यक पदार्थ हैं वैसे ही दूध भी उन पशुओं के शरीर में अनावश्यक पदार्थ है। उसका गाय, भैंस आदि के स्वयं के लिए कोई लाभ नहीं। दूध के निष्कासन से उसके स्वास्थ्य पर कोई विपरीत असर नहीं होता।

   जैसे मूंगफली जमीन में से प्राप्त होने पर भी जमीकंद नहीं है, क्योंकि जमीकंद के लक्षण उसमें घटित नहीं होते हैं वैसे ही दूध भी पशु शरीर से प्राप्त होने पर भी मांस नहीं है।

2. दूध पशु के शरीर में मूत्र की तरह अनावश्यक पदार्थ कैसे है?

उत्तर- पुरुष शरीर को नौ द्वारों (दो आँख, दो कान, दो नाक द्वार, एक मुँह, एक मल द्वार, एक मूत्र द्वार) का तथा स्त्री शरीर की ग्यारह द्वारों (उपर्युक्त+दो स्तन द्वार) का पिंजरा कहा है। इन द्वारों से शरीर के अनावश्यक पदार्थ निकलते हैं। अनावश्यक पदार्थ निकालने के लिए ये प्राकृतिक द्वार हैं। ऐसे ही गाय, भैंस आदि के थनों में छेद होते हैं जो उसके शरीर के लिए अनावश्यक पदार्थ दूध के निष्कासन के लिए होते हैं। मांसाहार या खून निकालने के लिए शरीर पर सुई, छुरी आदि शस्त्र का प्रयोग किया जाता है, जबकि दूध के लिए ऐसा नहीं है। दूध मांस होता तो उसके निष्कासन के लिए प्राकृतिक द्वार नहीं होते। अतः दूध मांस नहीं है।

3. कई भैंसें आदि प्रतिदिन 15-20 लीटर तक दूध देती हैं। यदि किसी भैंस

आदि के शरीर से 15-20 लीटर खून निकल जाए तो क्या वह जीवित रह सकेगी? 15-20 लीटर दूध निकलने पर भी वह पूर्ण स्वस्थ रहती है। दूध उसके शरीर का अनावश्यक पदार्थ है, अतः वह मांस नहीं है। बछड़ों द्वारा पी लिए जाने के पश्चात् बचे हुए दूध का उपयोग मनुष्य कर सकता है।

4. किसी भी मनुष्य, गाय-भैंस में कभी अचानक खून की कमी हो जाए तो उसकी भरपाई में लंबा समय लग जाएगा। औषधियाँ लेनी पड़ेगी। आराम करना पड़ेगा। दूध के लिए ऐसा नहीं है। सुबह गाय-भैंस ने दूध दिया, शाम को फिर दूध तैयार। अतः दूध मांस नहीं है।

5. प्राणियों द्वारा जो आहार किया जाता है वह सात धातुओं के रूप में परिवर्तित होता है। ये सात धातुएँ- मांस, खून, हड्डी, मज्जा, वीर्य आदि हैं। इन धातुओं में कमी या असंतुलन होने पर प्राणी बीमार हो जाता है। दूध कोई धातु नहीं है। गाय-भैंस दूध नहीं भी दे तो वह बीमार नहीं कही जाती।

6. मनुष्य स्वयं जन्म के बाद कुछ माह तक अपनी माता का दूध पीता है। उसे कोई भी मांसाहार नहीं कहता। क्योंकि दूध मांस नहीं है।

7. संसार में तीर्थंकर भगवान अहिंसा का सूक्ष्म से सूक्ष्म स्वरूप बतलाते हैं। वे एकेन्द्रिय जीवों की भी हिंसा का मन से भी अनुमोदन करने की निषेध रूप आज्ञा देते हैं। ऐसे परम अहिंसक प्रभु ने कहीं भी दूध को मांसाहार कह कर त्यागने की बात नहीं की।

8. मांस, खून, हड्डी आदि शरीर के अंग जन्म से ही होते हैं। इसके बिना जीवन असंभव है। ये अंग जीवन पर्यंत रहते हैं। इनके अभाव में मृत्यु हो जाती है। दूध तो अमुक उम्र से ही प्राप्त होता है और कुछ वर्ष तक ही प्राप्त होता है। वह भी लगातार प्राप्त नहीं होता। बछड़े को जन्म देने के बाद ही दूध प्राप्त होता है।

उपर्युक्त कारणों से स्पष्ट है कि दूध को मांस कहना बिल्कुल अनुचित है।

कोई यह तर्क देते हैं कि दूध तो उस पशु के बच्चे के लिए होता है। मनुष्य

को उस पर कोई अधिकार नहीं है। वस्तुतः जो पशु जंगली हैं (जैसे नीलगाय आदि) या जिनके दूध से मनुष्य को मतलब नहीं (जैसे कुतिया आदि) उनके उतना ही दूध होता है जितना उनके बच्चों के लिए आवश्यक होता है। परन्तु जो गायें-भैंसे आदि दूध के लिए पाली जाती हैं उनको गर्भावस्था के बाद से विशिष्टि खाद्य पदार्थ दिए जाते हैं ताकि वे अधिक से अधिक दूध दें। गाय-भैंस को जैसा खाद्य पदार्थ दिया जाता है वैसा बैल या पाडे को नहीं दिया जाता है। दूसरी बात यह भी है कि बछड़े को दूध पिलाने के बाद बचा हुआ दूध गाय से नहीं दुहा जाए तो वह दूध उसके शरीर में रोग पैदा कर देता है।

कोई व्यक्ति दूध नहीं पीए, त्याग करे तो कोई बात नहीं, पर उसे अभक्ष्य कहना/समझना उचित नहीं है।

-सौभाग्य सूर्य संदेश, 10 जून से साभार

अभिमान और स्वाभिमान

श्री महेन्द्र तिल्लानी

आज चिन्तन के क्षणों में एक प्रश्न उपस्थित हुआ- 'अभिमान' और 'स्वाभिमान' में क्या अन्तर है? किंचित् मंथन करने पर उत्तर प्राप्त हुआ।

'अभिमान' वह है जो दुर्गुणों और दुराचारियों के समक्ष तो झुक जाता है किन्तु सद्गुणों और सदाचारियों के सम्मान में कभी नहीं झुकता। इसके ठीक विपरीत 'स्वाभिमान' सद्गुणों और सदाचारियों के सम्मान में झुकता है, किन्तु दुर्गुणों और दुराचारियों के समक्ष नहीं झुकता।

अभिमान, कठोरता/हठधर्मिता है, वहीं स्वाभिमान मृदुता और सुदृढ़ता। हठधर्मिता तोड़ती है, मृदुता जुड़ती और जोड़ती है। हठधर्मिता शक्ति का विनाश करती है, सुदृढ़ता शक्ति का संचय करती है। अभिमान दुर्बलता है, स्वाभिमान बल।

अभिमान का अन्तिम परिणाम है अपमान और संत्रास।

स्वाभिमान का अन्तिम परिणाम है सम्मान और सुख।

चिंतन-मनन-अध्ययन करें। 'मान' त्यागें, किन्तु स्वाभिमान बचाएँ।

-38, शांतिनगर, हरमाला रोड, रतलाम-4757001 (म.प्र.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 61)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(पुलाक-निर्ग्रन्थ)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- पुलाक प्रतिसेवी होते हैं अथवा अप्रतिसेवी?

समाधान- प्रतिसेवी का अर्थ है स्वीकृत गुणों, नियमों, मर्यादाओं में दोष लगाने वाला। अप्रतिसेवी का अर्थ है दोष नहीं लगाने वाला। जो पुलाक निर्ग्रन्थ होते हैं वे प्रतिसेवी होते हैं। वे मूलगुणों में भी दोष लगाते हैं तथा उत्तरगुणों में भी दोष लगाते हैं। मूल गुणों के प्रतिसेवी होते हैं तो पाँच महाव्रतों में दोष लगाते हैं तथा उत्तरगुण प्रतिसेवी हो तो अनागत, अतिक्रान्त आदि दस प्रकार के प्रत्याख्यानों में से किसी एक प्रत्याख्यान में तथा उपलक्षण से आहार, वस्त्र, पात्र, शय्या-संस्तारक आदि में दोष लगाते हैं।

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ में ज्ञान एवं शरीर कितने होते हैं?

समाधान- पुलाक निर्ग्रन्थ में दो अथवा तीन ज्ञान होते हैं। यदि दो ज्ञान हो तो मति व श्रुतज्ञान होते हैं। यदि तीन हो तो इन दो के साथ अवधिज्ञान भी होता है। अर्थात् पुलाक निर्ग्रन्थ में मनःपर्याय ज्ञान नहीं होता है।

पुलाक निर्ग्रन्थ में औदारिक, तैजस व कार्मण ये तीन शरीर पाये जाते हैं। अर्थात् पुलाकपने में वैक्रिय व आहारक लब्धि का प्रयोग संभव नहीं होने के कारण वैक्रिय व आहारक शरीर नहीं पाये जाते हैं।

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ किन-किन क्षेत्रों में पाये जाते हैं?

समाधान- पुलाक निर्ग्रन्थ कर्मभूमिज क्षेत्रों में ही पाये जाते हैं। अर्थात् उनका जन्म व सद्भाव दोनों ही पन्द्रह कर्मभूमियों में ही होता है। अकर्मभूमि क्षेत्रों में पुलाक नहीं मिलते हैं। संहरण की

अपेक्षा भी वे अकर्मभूमि में नहीं होते, क्योंकि पुलाक लब्धि वालों का देव आदि कोई भी संहरण नहीं कर सकते हैं।

जिज्ञासा- किन-किन का संहरण नहीं होता है?

समाधान- देवतादि के द्वारा कौतुकता, वैर भावना, दुःख देने आदि के निमित्त से किसी को जबरदस्ती उठाकर अन्यत्र ले जाना संहरण कहलाता है। निम्नांकित सात विशेषता वालों का संहरण नहीं होता है-

1. श्रमणी (साध्वी) का,

2. वेद रहित का (9 वें का उत्तरार्धभाग व 10 से 14 गुणस्थान)

3. परिहार विशुद्धि चारित्रवान का 4. पुलाक निर्ग्रन्थ का

5. अप्रमत्त संयत का (7 से 14 गुणस्थान)

6. चौदह पूर्वधारी का 7. आहारक **लब्धिमान का**

यद्यपि निर्ग्रन्थ एवं स्नातक का संहरण होने का उल्लेख भगवती शतक 25 उद्देशक 6 में मिलता है, किन्तु उसका तात्पर्य भूतकालीन पर्याय की अपेक्षा समझना चाहिए। अर्थात् संहरण प्रमादी साधु का होता है, बाद में वह प्रमादी साधु अपने विशुद्ध अध्यवसायों से संहरण क्षेत्र में ही निर्ग्रन्थ एवं स्नातक बन जाता है।

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ के कषाय, लेश्या, परिणामादि कौन-कौन से पाये जाते हैं?

समाधान- पुलाक निर्ग्रन्थ लब्धि प्रयोग के समय प्रमादी साधु होते हैं। छठे गुणस्थान वाले होते हैं अतः उनमें संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ कषाय पाये जाते हैं।

पुलाक निर्ग्रन्थ में तीन प्रशस्त लेश्याएँ ही पायी जाती हैं। क्योंकि वे पुलाक लब्धि का प्रयोग जिनशासन प्रभावना एवं शासन-रक्षा आदि प्रशस्त कारणों से करते हैं। अन्य उपाय संभव न होने पर ही करते हैं अतः उनमें तेजो, पद्म व शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएँ ही पायी जाती हैं।

पुलाक निर्ग्रन्थ में तीनों तरह के परिणाम होते हैं- 1. वर्धमान, 2. हीयमान, 3. अवस्थित। जिन परिणामों से संयम-विशुद्धि

बढ़ती रहे, वे वर्धमान परिणाम कहलाते हैं। जिनसे संयम-विशुद्धि में हीनता आती रहे, वे हीयमान परिणाम कहलाते हैं तथा जिनसे संयम-विशुद्धि स्थिर रहे, घट-बढ़ न हो, उन्हें अवस्थित परिणाम कहते हैं।

जिज्ञासा– पुलाक में पाये जाने वाले परिणामों की स्थिति कितनी-कितनी होती हैं?

समाधान– पुलाक निर्ग्रन्थ में पाये जाने वाले वर्धमान एवं हीयमान दोनों ही परिणामों की स्थिति जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की होती है। अवस्थित परिणामों की स्थिति जघन्य एक समय तथा उत्कृष्ट सात समय की होती है।

जिज्ञासा– क्या पुलाक निर्ग्रन्थ में परिणामों की जघन्य एक समय की स्थिति मरण की अपेक्षा घटित हो सकती है?

समाधान– पुलाक निर्ग्रन्थों में तीनों ही परिणामों की जघन्य एक समय की स्थिति जो बतलाई गई है वह मरण की अपेक्षा घटित नहीं होती है। क्योंकि पुलाक का पुलाकपने में मरण नहीं होता है। मरण के समय तो वह कषायकुशीलादि रूप में परिणत हो जाता है। क्रोधादि कषायों से बाधित होने की अपेक्षा से एक समय की स्थिति घटित होती है अर्थात् कषायों के उदय से प्रभावित हो जाने के कारण परिणामों में परिवर्तन एक समय बाद दूसरे ही समय में हो सकता है।

जिज्ञासा– पुलाक निर्ग्रन्थ कितने कर्मों की उदीरणा करते हैं?

समाधान– पुलाक निर्ग्रन्थ आयुष्य और वेदनीय कर्म को छोड़कर शेष छह कर्मों की उदीरणा करने वाले होते हैं। पुलाक निर्ग्रन्थ में आयुष्य व वेदनीय कर्म की उदीरणा के योग्य अध्यवसाय नहीं पाये जाने के कारण वे इन दोनों कर्मों की उदीरणा नहीं कर पाते हैं। किन्तु वे पहले इन दोनों कर्मों की उदीरणा करके बाद में पुलाकपने को प्राप्त करते हैं।

यद्यपि पुलाकपने में उदीरणा योग्य तीनों बातें (1. योगों की प्रवृत्ति हो, 2. सम्बन्धित कर्म का उदय चल रहा हो, 3.

सम्बन्धित कर्म की स्थिति एक आवलिका से अधिक शेष हो।) विद्यमान होते हुए भी योग्य अध्यवसाय न होने के कारण वे आयुष्य और वेदनीय कर्म की उदीरणा नहीं कर पाते हैं।

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ संज्ञा वाले हैं अथवा संज्ञा रहित होते हैं?

समाधान- आहारादि की अभिलाषा, आसक्ति वाले संज्ञा युक्त कहलाते हैं। जो आहारादि का उपभोग करने पर भी उनके विषय में आसक्ति नहीं रखते हैं वे संज्ञा रहित कहलाते हैं।

आहारादि के विषय में आसक्ति रहित होने के कारण पुलाक निर्ग्रन्थ संज्ञा रहित होते हैं। यह विशेष ध्यातव्य है कि संज्ञा छठे गुणस्थान तक रहती है। सातवें से चौदहवें गुणस्थान वाले संज्ञा रहित अथवा नो संज्ञा वाले कहलाते हैं। यद्यपि छठे गुणस्थान में संज्ञा होती है, किन्तु इसमें भी जो शुभयोगी-प्रशस्त योगी होते हैं, अप्रमत्तता के सन्मुख होते हैं, वे संज्ञा रहित होते हैं। पुलाक निर्ग्रन्थ छठे गुणस्थानवर्ती होते हुए भी शुभ-योगी होने के कारण आहारादि की संज्ञा से रहित, नो संज्ञी माने जाते हैं। नो संज्ञा अर्थात् ज्ञान संज्ञा। पुलाक निर्ग्रन्थ ज्ञान-प्रधान उपयोग वाले होते हैं, इसलिए भी वे नो संज्ञा वाले कहलाते हैं।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

Reader's Opinion

Sh. ChandanMal Palrecha

It gives me great happiness and satisfaction when I am in receipt of **JINWANI** on every 11th of the month. Howsoever, I may busiest on that day, I first go through each and every article contained in this exhaustive religious monthly Jinwani written by high talented persons, which go to enrich my Spiritual Knowledge at this juncture of age of 75 since 1985. It Suits to every taste Whether young or old, Male or Female. Interesting & Useful for all Categories. Long Live Jinwani.

-Patasa Gali, Kandoi Bazar, Jodhpur-342001 (Raj.)

उपन्यास (19)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- किशनलाल ने दीपक को टाटा हॉस्पिटल में दिखाया। फिर आरती को लेकर महादेव भाई के साथ कार में रवाना हुए तो रास्ते में एक मोड़ पर टक्कर हो गई। इस टक्कर से आरती की स्मृति पुनः लौट आई। टकराई कार के चालक अपने भाई विश्वास को देखकर आरती बहुत प्रसन्न हुई। इधर किशनलाल और विश्वास भी आपस में मिले। वे सब विश्वास के घर से उसकी पत्नी मीनाक्षी को लेकर पुनः महादेव भाई के घर लौटने लगे। तब रास्ते में........।

किशनलाल की प्रसन्नता का कोई पार नहीं है आज!

'आरती की व्यथा के कारण, मैं कितना परेशान था महादेव भाई!' कार की अगली सीट पर महादेव की बगल में बैठे किशनलाल ने अपनी आँखें मूँदकर, सीट से सिर टिकाते हुए कहा-'सच कहूँ तो दीपक का हाथ कट जाने से मुझे जितनी पीड़ा हो रही थी, उससे कई गुनी अधिक पीड़ा, आरती के गूँगेपन और स्मृति नष्ट हो जाने से हो रही थी। इस स्थिति में, विश्वास के अभाव की स्मृति, इस सारी पीड़ा को न जाने कितना गुना और बढ़ा रही थी। वस्तुतः, मैं अन्दर से एकदम टूट चला था। पर, संयोग देखिए, आज की दुर्घटना, हमारे लिए एक वरदान साबित हो गई। कभी-कभी, सामने खड़ी हुई विपत्ति भी, आदमी के लिए कितनी हितकारी बन जाती है, यह मैं आज अनुभव कर पाया हूँ।'

'इसी को तो समय का फेर कहते हैं किशनलाल!'- महादेव भाई ने सड़क पर से क्षण भर के लिए अपनी दृष्टि हटा कर किशनलाल की ओर देखा। और फिर गाड़ी चलाने में एकाग्रता बनाए हुए ही बोला-'अभी तक, तुम्हारी विवेक-बुद्धि पर, दुष्कर्मों का आवरण पड़ा हुआ था। जिसके कारण, तुम्हें एक के बाद एक, अनेक कष्ट उठाने पड़े। अब, तुमने अपनी भूलों पर पश्चात्ताप करना शुरू कर दिया, तो देख लो, धीरे-धीरे, सब ठीक होने लगा है।'

महादेव भाई, उसे कुछ और कह पाता, तब तक उसका घर आ गया। दोनों कारें, घर के सामने आकर रुक गईं।

विश्वास, मीनाक्षी और आरती, तीनों ही जब कार से बाहर आ गये तो, महादेव भाई बोले– 'आओ, ऊपर चलते हैं विश्वास!'

'माँ यहीं पर है क्या?'

'हाँ! दीपक भी यहीं है। आओ बेटे!' –किशनलाल ने उसे बतलाया।

सभी लिफ्ट से एक साथ, महादेव भाई के फ्लेट में पहुँच गये।

शान्ति और दीपक सामने ही, एक सोफे पर बैठे थे। किशनलाल ने कमरे में प्रवेश करके शान्ति को देखते ही कहा– 'शान्ति! आज तुम्हारे बहू–बेटे दोनों को ले आया हूँ।'

'भैया!' – विश्वास को देखते ही प्रसन्नता से भर उठा दीपक बोला।

'मेरे बेटे! कहाँ चला गया था तू? तेरी खातिर मैं कितनी परेशान थी? कम से कम एक खत तो डाल देना चाहिए था तुझे।' – शान्ति, विश्वास से लिपटती हुई सी बोली।

विश्वास की आँखों में आँसू छलछला आये। उसके मुख से एक भी शब्द नहीं निकल पाया।

इसी समय, मीनाक्षी ने आगे आकर शान्ति के पांव छुए, तो वह, विश्वास को छोड़कर, मीनाक्षी को अपने हृदय से चिपका कर रह गई।

'शान्ति! अपनी बेटी आरती से बात नहीं करोगी क्या?'

'आरती से बात?' –अविश्वसनीयता में भरकर कहा शान्ति ने।

'हाँ हाँ, आरती से।'

'क्या है पापा!'

'अरे! आरती बेटी तो सचमुच बोल रही है?' – शान्ति की प्रसन्नता कई गुनी बढ़ गई।

'क्यों, क्या हुआ था मुझे? मैं, गूँगी हूँ क्या? कैसी बातें कर रही हो माँ तुम भी!'

'मेरी बेटी! मेरी आरती।' – उसे अपनी गोद में छिपाती हुई सी बोली शान्ति– 'मैं यह सब स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ विश्वास बेटे!.... क्या आरती सचमुच बोलने लगी है?'

'क्या हुआ था माँ आरती को?' –विश्वास ने भी आश्चर्य और आशंका भरे स्वर में पूछा।

'विश्वास बेटे! तुझे घर से निकाल देने के बाद, हमारे ऊपर विपत्तियों के पहाड़ टूट पड़े थे। पहिले तो आलोक ही नाराज होकर घर छोड़ कर चला गया। फिर, रेल-दुर्घटना में दीपक व आरती, दोनों ही बुरी तरह प्रभावित हो गये। आरती की स्मरण शक्ति गायब हो गई थी और गूँगी भी हो गई थी यह' -माँ ने उसे बतलाया।

'क्यों आरती?' -विश्वास ने पूछा।

'मुझे कुछ नहीं मालूम है भैया!'

'दीपक भी था दुर्घटना में?'

'हाँ बेटे! दुर्घटना में इसका एक हाथ कट गया।' - किशनलाल ने दीपक के हाथ पर पड़ा चादर हटा कर दिखलाया उसे।

'दीपक!' -विश्वास उसके ऊपर एक दम झुककर उसे छाती से चिपकाता हुआ बोला।

'भैया!'

'इन्हीं दोनों की चिकित्सा कराने के लिए हम यहाँ आये थे। दीपक का कल टाटा-हॉस्पिटल में चैक-अप कराया था। डॉक्टर ने उसके हाथ का घाव सुखाने की दवा दी है। फिर आज सोचा था कि किसी अच्छे मनोचिकित्सक से आरती की जाँच करवा लें। इसी उद्देश्य से हम घर से निकले थे। पर, रास्ते में ही एक्सीडेन्ट हो जाने से जो कुछ घटा, उसे तुमने स्वयं देखा ही है।' -किशनलाल ने उसे जानकारी दी।

'अब, दीपक का क्या होगा बेटे?'

'इसका तो माँ एक उपाय है कि हाथ का घाव भर जाने के बाद, इसे कृत्रिम हाथ लगवा दिया जाये।'

'मुझे डर लग रहा है कि इसका घाव नासूर न बन जाय।'

'यह चिन्ता आप बिल्कुल मत कीजिए पिताजी।'

'कृत्रिम हाथ से, पहिले की ही भांति काम किया जा सकेगा क्या?-शान्ति ने अपने मन की चिन्ता प्रकट की।

'नहीं माँ! यह तो सिर्फ दिखावटी होता है। लगवाया इसलिए जाता है कि व्यक्ति देखने में कुरूप न लगे।'

'यहीं पर लग जायेगा यह हाथ?' - एक और प्रश्न पूछा शान्ति ने।

'क्यों नहीं? जयपुर में हाथ और पांव दोनों बनते हैं माँ! विदेशों तक को वहाँ से ये भेजे जा रहे हैं। पर ये सब होते हैं लकड़ी के। यदि प्लास्टिक का हाथ लगवाना हो, तो उसे लन्दन से ही मंगवाना पड़ेगा।'-विश्वास ने माँ को स्पष्ट बतला दिया।

'आलोक तो वहाँ पर है ही। उसे पत्र लिख दें, तो वह स्वयं लेकर आ जायेगा।

'वह हमसे नाराज होकर गया है। वह आयेगा या नहीं, निश्चित नहीं कहा जा सकता है।'

आप खत में सारी परिस्थितियाँ लिख दें। फिर देखना, वह दौड़ा चला आयेगा।'- शान्ति के मातृत्व ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

'अरे! आप सब कब तक खड़े रहेंगे?'- महादेव भाई ने कहा- 'हाँ तो डॉक्टर साहब! आपके लिये क्या मंगवाऊँ? गर्म या ठण्डा?'

'आप की जो इच्छा हो?'

'अरे भाई! इस घर की मालकिन किधर चली गई?'-महादेव भाई ने दरवाजे की ओर झांकते हुए कहा।

'अब तो वे आने ही वाली होंगी। यहाँ स्थानक में मुनि श्री पधारे हैं। उनका प्रवचन सुनने गई हैं।'- शान्ति ने बताया।

'और तुम नहीं गई शान्ति?'

'दीपक के पास भी तो किसी का रहना आवश्यक था।'

'मैने कहा था माँ से, पिताजी! ये बोलीं, बाद में दर्शन कर लूँगी।'- दीपक ने कहा।

इसी समय, दरवाजा खोलकर अन्दर आई सुलोचना ने, सबको एक साथ देख कर पूछा- 'आप लोग आ गये। क्या हुआ?'

'वही, जो हम चाहते थे। आरती बिल्कुल ठीक हो गई है।

'क्या कह रहे हो?'

'आरती बेटी! ये है तुम्हारी आन्टी। हमारे मित्र महादेव भाई की धर्मपत्नी।

आरती ने दोनों हाथ जोड़ कर कहा- 'नमस्ते आन्टी जी!'

सुलोचना, हैरत भरी आँखों से आरती को देखने लगी।

'यह है विश्वास, और इनकी पत्नी मीनाक्षी।' - महादेव भाई ने पत्नी से परिचय कराया।

'ये कहाँ मिल गये आपको?' -फिर आश्चर्य से पूछा सुलोचना ने।

यही सब तो आश्चर्यजनक उपलब्धियाँ हैं आज की। हम लोग, आरती को ले कर जा रहे थे। अचानक वी.टी. रोड़ के मोड़ पर, हमारी कार इनकी कार से जा टकराई। दोनों कारों की भिड़न्त में, आरती पीछे की सीट से उछलकर आगे आ गई। इसके सिर में चोट लगी तो यह आँखें मूंदकर व सिर थामकर बैठ गई। थोड़ी देर बाद जब इसने आँखें खोलीं, तो सबको पहिचानने के साथ-साथ बोलने भी लग गई।' -महादेव भाई ने पत्नी को किस्सा सुनाया।

'भगवान की माया बड़ी विचित्र है।'

'बिल्कुल यदि विश्वास की कार से टक्कर नहीं होती, तो न तो इनका पता चल पाता, न ही आरती इतनी जल्दी ठीक हो पाती। एक ही एक्सीडेन्ट से दोनों काम साथ-साथ हो गये। अरे भाई! किस्सा ही सुनती रहोगी या कुछ नाश्ता-पानी भी कराओगी?

'तीर्थराम से कह देना चाहिए था।'

'बातों-बातों में ध्यान ही नहीं रहा। अब तुम्हीं तीर्थराम बन जाओ न।'

'जैसी आपकी इच्छा' - कहती हुई सुलोचना अन्दर गई, और थोड़ी ही देर में, नाश्ता और काफी, साथ-साथ लेकर आ गई। फिर सबके सामने प्लेटें और प्याले सजाकर रख दिये।

'विश्वास बेटे!' नाश्ता करते-करते, किशनलाल ने अपने मन की सारी व्यथा, सबके सामने प्रकट करते हुए कहा- 'मेरा विचार है कि तुम कुछ दिनों के लिये आगरा आ जाओ। मैं मीनाक्षी बहू के आने की खुशी में एक पार्टी देना चाहता हूँ। आलोक को भी मैं बुला लूँगा। यह काम, मैं एक महीना देर से कर रहा हूँ, इसका बुरा तो नहीं मानोगी मीनाक्षी बेटी!'

'आपकी प्रसन्नता में ही हमारी प्रसन्नता है पिताजी!' - मीनाक्षी ने नम्रता के साथ जवाब दिया।

उत्तर सुनकर, किशनलाल का मन गद्गद हो गया। वह, अब उत्साह में

भरकर बोला–'तब शान्ति! हम कल ही आगरा लौट चलें। दीपक, यहाँ विश्वास के साथ रह जायेगा। पार्टी की तिथि निश्चित कर लेने पर यह बहू को और दीपक को साथ लेकर आ जायेगा।'

'आरती भी हमारे ही साथ आ जायेगी पिताजी!'

'क्यों बेटी! क्या राय है तुम्हारी?'

'हाँ पापा! आपका पत्र आने पर हम दोनों भैया-भाभी के साथ आ जायेंगे।'

अब, किशनलाल ने महादेव भाई की ओर मुँह करके कहा–'हमारे कारण आपको बहुत कष्ट उठाना पड़ा, महादेव भाई!'

'अभी तक तो मैं अपना फर्ज अदा करता रहा हूँ किशनलाल! इसलिए, मैं तुम्हें, अभी कम से कम एक सप्ताह तक नहीं जाने दूँगा।'

'लेकिन वहाँ.........

'लेकिन-वेकिन कुछ नहीं लाला! यदि इन लोगों की चिकित्सा चल रही होती, तब तो तुम्हें यहाँ रुकना ही पड़ता। फिर, अब जल्दी क्यों मचा रहे हो?'–महादेव भाई ने उसे जोर देकर कहा।

'महादेव भाई! मेरे मन में इस समय अत्यन्त खुशी भरी हुई है। उसे जल्दी प्रकट कर लेने दो। कहीं ऐसा न हो, यहाँ रुक जाने पर मेरा उत्साह ठण्डा पड़ जायें।'

'हाँ हाँ, ठीक है। आप इन्हें इस समय न रोकिये। जल्दी जाने दीजिए। कुछ दिनों पहिले, इन्हें एक सुनहरा सपना आया था। वह सपना, देखते ही देखते चकनाचूर हो गया। अब, इन्हें स्वप्न लोक से उतरकर यथार्थ के धरातल पर चलने का अहसास हो गया है। यानी कि जिस लोभ-पाश में ये अब तक बँधे हुए थे, उससे इन्हें मुक्ति मिल गई है।'

'शान्ति! सच कह रही हो तुम?'

'सच ही तो कह रही हूँ। जब सिर पर विपत्तियों के पहाड़ टूट पड़े– तभी तो आपको आत्मबोध हुआ है।'

'क्यों लाला?'– महादेव भाई बोला।

किशनलाल की आँखों में आँसू उमड़ आये। वह बोला– 'मैंने आत्म-

मन्थन कर लिया है महादेव भाई! वास्तव में, मैं बहुत गलत रास्ते पर चला गया था। मेरे बच्चों ने मुझे भटकने से रोक लिया। वरना, आज का सारा समाज मेरे मुँह पर थूकता। ....इस समय, मैं पूरे होश में हूँ। दहेज की दानवी परछाई ने मुझे पूरी तरह से ढंक लिया था। वह दूर हट गई है। और अब मेरे चारों ओर सचमुच सुख की सुगन्ध फैल गई है। मेरे जीवन में, जो भयावनी रात अनायास आ गई थी, वह आज ढल चुकी है। और अब, **सुबह की धूप** ने निकलकर मेरे अंधेरे अन्तर के कोने-कोने को आलोकित कर दिया है।'

'यह सब मुम्बई की उपलब्धि है लाला! इस खुशी में कुछ हो जाये?'

'आगरा जाकर यही मैं तो करना चाहता हूँ।'

'और आरती की पार्टी कब कर रहे हो?'

'जब कोई अच्छा सा लड़का मिल जायेगा।'

'लड़का तो है' -शान्ति ने कहा।

'कहाँ पर?'

'यहीं पर! महादेव भाई का बेटा अनुपम। आपने देखा तो है ही।'

'मेरे देखने से क्या हो गया शान्ति! लड़के को राजी होना चाहिए। क्यों महादेव भाई! आपकी क्या राय है?'

महादेव भाई, तिरछी नजरों से अपनी पत्नी की ओर देखने लगे।

'ऐसी बहू तो बड़ी भारी तपस्या के बाद मिलती है। जब यह गूँगी और स्मृतिहीन थी, अनुपम तो तभी इसे अपनाने को तैयार हो गया था। मैंने उससे चर्चा कर ली थी।' -सुलोचना ने अपनी राय प्रकट की।

'सच कह रही हो भाभी!' -किशनलाल ने हर्ष विभोर होकर पूछा।

अनुपम को दरवाजे से अन्दर आता देखकर, सब एकदम से चुप हो गए।

'आप लोग चुप क्यों हो गये?' -अचानक सन्नाटा छाया देखकर पूछा अनुपम ने।

'तुम्हारी ही प्रतीक्षा थी' - किशनलाल ने उसे बतलाया।

'मेरी प्रतीक्षा अंकल! मुझ से क्या काम पड़ गया?'

'सबसे परिचय कराना है मुझे। यह देखो, मेरा बेटा है विश्वास। यहीं पर डॉक्टर है सेठ पूसाराम किरोड़ीमल धर्मार्थ औषधालय में। उसी के बगल में

बैठी है- बहू मीनाक्षी, विश्वास की धर्मपत्नी।'

'नमस्ते' - अनुपम ने हाथ जोड़कर कहा।

'और, यह है आरती। मेरी बेटी!'

'इसे जानता हूँ मैं। क्या हुआ इसका? किसी डॉक्टर को दिखलाया आपने?'

'नमस्ते' - अनुपम को चौंकाती हुई बोली आरती।

'नमस्ते' - तुम बोल रही हो। कमाल है?' -आश्चर्य से बोला वह।

'हाँ बेटे! बोल भी रही है, और सब समझ भी रही है। अब, यह बिल्कुल ठीक हो चुकी है। मैं चाहता हूँ कि महादेव भाई से हमारे जो सम्बन्ध हैं, वे और मजबूत हो जायें।......आरती तुम्हें कैसी लगी ?'

'अच्छी है। क्यों, कोई खास बात है क्या?'

'हाँ, तुम्हारा सम्बन्ध इससे जोड़ने की बात मैं सोच रहा हूँ।'

अनुपम, अपने माता-पिता की ओर कनखियों से झांक कर, धीमे से मुस्कराता हुआ, घर के अन्दर चला गया। (समाप्त)

दो क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.

सहना

जो
सहता है
बड़ों की
डाँट,
उसके खुल
जाते हैं
उन्नति के
कपाट।

दोष

मत
देखो
किसी के
दोष
दिख भी
जाय तो
रहो
खामोश।

युवा-स्तम्भ

लक्ष्य बनाकर बढ़ें आगे

श्री दिलीप जैन

वर्तमान में विषाद, अशान्ति, घृणा, द्वेष, तृष्णा, हिंसा आदि के दावानल से प्रायः हर व्यक्ति जल रहा है। वह मानसिक एवं शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त है। शत्रु के भय से संत्रस्त है। आध्यात्मिकता से अलग हटकर भौतिकता का आलिंगन करने में सुख समझ रहा है। परम्परा एवं परिवार के परकोटे को लांघकर, बड़ों के प्रति विनय को विसरकर एवं छोटे के प्रति विवेकभाव से परे होकर मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा हेतु नये-नये दाव-पेंच खेल रहा है।

स्वयं की सुख-साता एवं अनुकूलता हेतु सामने वाले को असाता-दुःख एवं प्रतिकूलता उत्पन्न कर देना, स्वयं की शांति हेतु घर-परिवारवालों के लिए अशांति उत्पन्न कर देना, स्वयं की मान-प्रतिष्ठा एवं रुतबे को कायम रखने हेतु अपने से छोटे लोगों का तिरस्कार या अपमान कर देना, बस ये सब बातें ही तो हमारे वर्तमान एवं भविष्य को बिगाड़ने वाली होती हैं।

इस बात को मैं चारित्रात्माओं द्वारा कही हुई पंक्ति से जोड़ना चाहूँगा कि "हम सब जानते हैं, पर मानते नहीं, कर सकते हैं पर करते नहीं, इसी का नाम प्रमाद है।" अर्थात् हम सब कुछ जानते हैं क्या गलत है, क्या सही है? पर फिर भी हम भ्रमणा में जी रहे हैं। वर्तमान में बैठे-बैठे अदृश्य भविष्य की कल्पना कर रहे हैं।

मित्रों! हमें जागना होगा, इस वर्तमान के परिदृश्य में अपने आप को आंकना होगा कि कहीं ऐसी स्थिति में हम विषाद वैमनस्य में तो नहीं फँस रहे? इन प्रवृत्तियों को देखकर लोग हम पर हँस तो नहीं रहे ?

मित्रों! हमें सुव्यवस्थित एवं सम्यक् रूपेण जीवन शैली, उत्तम आचरण तथा आध्यात्मिकता की ओर कदम बढ़ाना होगा, जिससे कि हमारा जीवन सार्थक हो सके तथा हम इहलोक एवं परलोक के सुख को प्राप्त कर सकें।

इस हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण जीवन-सूत्रों को जानें जो हमें एक नई राह की ओर अग्रसर होने में सम्बल प्रदान करेंगे-

1. मैं अच्छा हूँ, मुझे और अच्छा बनना है, मुझे सबसे अच्छा बनना है।

2. लक्ष्य बनाओ, कदम बढ़ाओ, मंजिल पाओ।

3. सही निर्णय करो और अच्छा परिणाम प्राप्त करो।

1. मैं अच्छा हूँ, मुझे और अच्छा बनना है, मुझे सबसे अच्छा बनना है–

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के श्रीमुख से सदैव ये शब्द सुनने को मिलते हैं। जो भी व्यक्ति दर्शन–वन्दन–सेवा हेतु जाता है उन्हें सद्सीख रूप में मुनि श्री यह प्रेरणा करते हैं। श्रावक के रूप में हमारी आत्मा अच्छी है। मुझे और अच्छा बनना है अर्थात् श्रावक के तीन मनोरथ में दूसरा मनोरथ कि मैं महात्मा (श्रमण–श्रमणी) बनूँ। मुझे सबसे अच्छा बनना है अर्थात् सबसे अच्छी व उत्तम स्थिति है परमात्मा (सिद्ध) बनना है। अगर संक्षिप्त में कहें तो–

मैं अच्छा हूँ → मुझे और अच्छा बनना है → मुझे सबसे अच्छा बनना है

आत्मा → महात्मा → परमात्मा

इन्सान की सही सोच उसे सत्पथ अर्थात् सद्राह दिखाती है। प्रत्येक समय सद्प्रवृत्ति करते हुए इस सूत्र को अपने जीवन का ध्येय बनाएं, जिससे कि अध्यात्म मार्ग पर प्रशस्त होकर आदर्शोन्मुख जीवन बन सकता है।

इस सूत्र को जीवन में अपनाने से निम्नलिखित बातों का सुखद आभास होगा एवं हम समस्या रहित हो सकेंगे–

(1) घृणा, निन्दा एवं प्रतिस्पर्धा के अनर्गल भावों से बच सकेंगे।

(2) आत्मविश्वास में अभिवृद्धि होगी।

(3) तनाव एवं संघर्ष रहित जीवन यापन कर सकेंगे।

(4) प्रगति के कदम निरन्तर बढ़ते रहेंगे।

(5) अध्यात्म की ओर अभिमुख हो स्वयं के कल्याण हेतु अग्रगामी हो सकेंगे।

2. लक्ष्य बनाओ, कदम बढ़ाओ, मंजिल पाओ–

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा मुखरित यह सूत्र एक व्यवस्थित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। अर्थात् किसी भी राह पर चलता हुआ राहगीर यदि बिना लक्ष्य के चलेगा तो सफलता (मंजिल) को प्राप्त नहीं कर पायेगा। लेकिन लक्ष्य को लेकर चलने वाला व्यक्ति अपनी मंजिल को अवश्य पाता है। अतः सर्वप्रथम किसी भी कार्य को करने से पूर्व हमारा लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए, तदुपरान्त इसी के अनुसार हमारा पुरुषार्थ होना चाहिए, तभी हम मंजिल को प्राप्त कर सकते हैं।

लक्ष्य बनाओ ⟶ कदम बढ़ाओ ⟶ मंजिल पाओ

परमात्मा का ⟶ महात्मा बनकर के ⟶ आत्मा की शुद्ध अवस्था

कहा भी गया है जहाँ चाह है वहाँ राह है। मित्रों! हमें भी इस आदर्श सूत्र को जीवन में अपनाकर आत्मकल्याण के मार्ग की ओर आगे बढ़ना है। वर्तमान सांसारिक जीवन को भी इस सूत्र में ढाल लिया तो भी हम व्यवस्थित जीवन शैली अपना सकेंगे। इस सूत्र को जीवन में अपनाने से निम्नलिखित लाभ प्राप्त हो सकेंगे-

1. लक्ष्यहीन जीवन से बच सकेंगे।
2. प्रति समय लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु मेहनत एवं पुरुषार्थ में कदम बढ़ते रहेंगे।
3. उत्साह, ऊर्जा एवं विशिष्ट गुण प्रकट हो सकेंगे।
4. बिखरी हुई (अव्यवस्थित) जीवनचर्या से छुटकारा पा सकेंगे।
5. समय का नियोजन होगा एवं अनर्गल चर्याओं से विमुक्त हो सकेंगे।

3. सही निर्णय करें एवं अच्छा परिणाम प्राप्त करें-

कहावत है कि "**बीता हुआ समय वापस नहीं आता**" कई लोगों के मुख से हमने सुना है कि काश! वो दिन, वो बचपन, वो जवानी या वो बीता हुआ समय वापस आ जाय, परन्तु यह सब कपोल कल्पित कल्पनाएँ मात्र हैं। आप और हम सब यह भलीभाँति जानते हैं कि "कमान से निकला हुआ तीर और मुख से निकले हुए शब्द वापस नहीं आते"। अतः यही समय है जब हमें उचित निर्णय लेकर अच्छी स्थिति को प्राप्त करना है। हमने सुन भी रखा है "**अभी नहीं तो कभी नहीं।**" यह सूत्र हमें यही प्रेरणा प्रदान कर रहा है कि समय थोड़ा ही है। इसे व्यर्थ मत जाने दो। इसी समय अच्छा निर्णय लो और अच्छी स्थिति को प्राप्त करो।

सारांशतः यही कहना उचित होगा कि सही आचरण, सही निर्णय, सही सोच, सही प्रवृत्ति ही व्यक्ति को प्रगति एवं विकास के नये आयामों तक पहुँचाती है। चाहे वह आध्यात्मिकता की बात हो या फिर सांसारिक जीवन की। अन्त में मित्रों! सबसे यही कहना चाहूँगा कि-

बीत गया सो बात गई, अब वर्तमान को वर्तो।
लक्ष्य बनाकर बढ़ो आगे, पर मंजिल को ना भूलो॥

-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

कथानक (3)

शेर बना शाकाहारी

श्रीमती पारसकंवर भण्डारी

पूर्ववृत्त– राजा जितशत्रु शेर को पाकर बहुत खुश थे। वे अपना खाली समय उसी के साथ व्यतीत करते थे। एक बार राज्य-कार्य से राजा को पन्द्रह दिन के लिए नगर से बाहर जाना था। पीछे से शेर का ध्यान उनका मित्र सेठ सुदत्त रखेगा, ऐसा विचार कर उन्होंने मना करने पर भी सेठ जी को यह उत्तरदायित्व सौंप दिया और प्रस्थान कर गए। अहिंसा व्रती सेठ के लिए यह बड़ी विकट स्थिति थी। मांसभोजी को मांस न देकर उसे कैसे जीवित रखा जाए? फिर भी सेठ ने हार नहीं मानी और शेर के समक्ष कढ़ाई में खीर का भोजन तीन दिनों तक प्रस्तुत किया। शेर ने भी क्रुद्ध होकर वह खीर जमीन पर गिरा दी और तीन दिनों तक भूखा रहा। अब आगे....

चौथे दिन सवेरे वही खीर और वही कढ़ाई लेकर सेठजी दरबार में पधारे, सेठजी के भी तीन दिन का तेला हो गया और शेर भी तीन दिन से भूखा था। वह एक टक सबको देख रहा था, मानो इशारे में कह रहा हो कि, मुझे भूख लगी है, शीघ्र मुझे खाना दो। इतने में सेठजी ने आदमियों से कहा कि इस कढ़ाई को अन्दर रख दो। वे आदमी जानते थे कि आज भी यह खीर ढुलने वाली है और सिंह भूखा रहेगा। किन्तु, सब विवश थे, मुख से कुछ नहीं बोल पा रहे थे। वे खीर की कढ़ाई को अन्दर सरकाने लगे कि साथ में सेठजी भी पिंजरे में घुस गये। यह देखकर सब चिल्लाने लगे– सेठजी! आप यह क्या कर रहे हो? आप पिंजरे से बाहर आ जाइये। शेर तीन दिन का भूखा है। यह आपको जिन्दा नहीं छोड़ेगा। सेठजी यह आप क्या कर रहे हैं? आइये, जल्दी से बाहर आजाइये। पर सेठजी तो शान्त मन से निडर होकर खड़े रहे और शेर से कहने लगे– अगर तुमको भूख लगी हो तो यह सामने खीर पड़ी है खा लो, इसे नहीं खाना चाहते हो और तुम्हें माँस ही चाहिए तो मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ मेरा मांस खाकर अपनी भूख मिटालो। किन्तु मैं दूसरों की हिंसा करके तुम्हारे लिए मांस नहीं मंगवा सकता। सोचो, पूर्व जन्म में तुमने कौनसे कार्य किए, जिससे तुमको तिर्यंच की योनि मिली। अब इस भव में अपनी भूख मिटाने के लिए दूसरों की हिंसा करते जाओगे तो अगला भव नरक ही मिलेगा। शेर चुपचाप खड़ा था, न तो दहाड़ रहा था और न ही पूंछ फटकार रहा

था। वह सेठ की बातें ध्यान से सुनता रहा और धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हुआ सेठ के नजदीक आने लगा। बाहर जितने भी लोग खड़े थे सबने अपनी आँखें बन्द कर ली और मन में सोचा अब सेठजी को शेर धर दबोचेगा। अब सेठजी की जान बचने वाली नहीं है। फिर भी कुतुहलता पूर्वक थोड़ी-थोड़ी आँख खोल कर देखते हैं तो वहाँ का नज़ारा ही अलग दिखाई दिया। सबने सावचेत होकर देखा, शेर सेठ के पास आया। उनको एकटक देखा और उनके पांवों को चूमा, सिर झुका कर नमस्कार किया, फिर कढ़ाई के पास आकर सारी खीर पी गया। सेठ साहब ने भी उसके सिर पर अपना हाथ फिराया, पूरा शरीर सहलाया और उससे बातें करने लगे। सेठ साहब बाहर आये तो सब सेठ साहब का जय-जयकार करने लगे। अहिंसा की जय-जयकार करने लगे। सबके मुंह से निकला- "सेठजी! आपने तो कमाल कर दिया, एक मांसाहारी जानवर को आपने शाकाहारी बना दिया। धन्य है आपकी दृढ़ता और धन्य है आपकी अहिंसा की भावना।" सेठ साहब के तप के प्रभाव और उनकी दृढ़ता के समक्ष पशु को भी झुकना पड़ा। तप और निर्भयता में बहुत ताकत होती है। सुदर्शन सेठ अर्जुन माली के पास पहुँचे तो, उसके शरीर में रहा हुआ मुद्गरपाणि यक्ष उनको मारने के लिए नजदीक पहुँचा, पर उनके दृढ़ पराक्रम और निडरता को देखकर अर्जुन के शरीर को छोड़कर भाग गया। दृढ़ता में ऐसी ताकत होती है कि दानव, पशु आदि सब वश में हो जाते हैं। सेठजी! अपने घर गये और तेले का पारणा किया।

अब हमेशा सेठजी खीर बनवाकर लाते और स्वयं पिंजरे में जाकर उसे सहलाते, खीर खिलाते और उससे धार्मिक बातें करते। शेर भी सेठजी की बातें ध्यान से सुनता, उनके पैरों को चूमता और एक दम शान्त बन कर रहने लगा। अब ज्यादा दहाड़ भी नहीं लगाता, और कभी लगाता तो धीरे से, कहीं कोई डर न जाय। इस प्रकार प्रतिदिन कार्य होता रहा।

दस-पन्द्रह दिनों के बाद राजा साहब लौट कर आ गये। आते ही पहले शेर के पास गये। उसे पुचकारने, सहलाने लगे तथा बातें करने लगे। दोस्त तेरे बिना मेरा वहाँ मन नहीं लगता था, हरदम तुम्हारी याद आती थी, पर क्या करूँ मजबूर होकर मुझे वहाँ रहना पड़ रहा था। लेकिन अब मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा। बातें करते-करते राजा साहब ने सेवकों से पूछा- क्या सेठ ने इसकी अच्छी तरह देखभाल की थी? हाँ राजा साहब! बहुत अच्छी तरह से उन्होंने

इसको सम्हाला है। राजा खुश हो गया, मुझे भरोसा था कि वे मेरी बात कभी टालने वाले नहीं हैं। इतने में राजा साहब ने उन आदमियों को आदेश दिया, अरे इसके खाने का बन्दोबस्त करो, जाओ इसके लिए मांस लेकर आओ। तब उन आदमियों ने कहा- इसका खाना सेठजी लाते ही होगें। अब सेठजी को क्यों तकलीफ देते हो, जाओ तुम लेकर आओ। राजा का आदेश सुनकर वे लोग चुपचाप मांस लाने के लिए जंगल में चले गये। इतने में सेठजी खीर से भरी कढ़ाई लेकर दरबार में पहुँच गये। राजा साहब को आया देखकर, सेठ साहब ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया और कुशलक्षेम पूछी। राजा साहब ने सेठजी को सम्बोधित करते हुए कहा- मित्र! तुमने शेर की अच्छी तरह सम्हाल की, इसलिए मैं बहुत खुश हूँ। राजा साहब यह तो मेरा कर्तव्य था, जो काम हाथ में लेऊँ तो उसे अच्छी तरह निभाऊँ। अरे! इस कढ़ाई में क्या है? खीर? यह किसके लिए लाए हो? क्या यहाँ सब को दावत दे रहे हो। नहीं, राजा साहब! मै। कोई दावत नहीं दे रहा, यह खीर तो इस शेर के लिए है। राजा साहब हँस पड़े। क्या शेर खीर खायेगा? हाँ राजा साहब! यह खीर ही खायेगा। नहीं-नहीं, मैं नहीं मानता। इतने में वे आदमी भी किसी जानवर को मारकर ताजा मांस शेर के लिए ले आये। राजा ने कहा- इसका भोजन अन्दर रख दो, इतने में सेठजी ने कहा- यह खीर अन्दर रख दो। तब राजा ने कहा- देखते हैं यह मांस खाता है या खीर? सेठ ने कहा - "हाँ राजा साहब जरूर देखिये।" वे पिंजरे के पास जाकर शेर को सहलाने लगे। दोनों वस्तु अन्दर सरका दी गई। आज सेठजी अन्दर नहीं गये। शेर चुपचाप सब देख और सुन रहा है। वह धीरे-धीरे टहलता आया और जहाँ मांस रखा था वहाँ गया, उसको सूंघा और वापस पलट गया। अब जहाँ खीर की कढ़ाई रखी थी वहाँ पहुँच कर सारी खीर पी गया, पर मांस में से कुछ भी मुंह में नहीं डाला। खीर पीकर जीभ से मुंह साफ करके राजा और सेठ को देखने लगा। सेठ ने उसकी पीठ थपथपाई और कहा- आज तुम परीक्षा में सफल हुए हो, साथ में मेरी लाज भी रख ली। उन आदमियों ने खाली कढ़ाई और मांस का भरा बरतन बाहर निकाल लिया। राजा तो आश्चर्य चकित हो गया और मंद-मंद स्वरों में कहने लगा- मित्र! तुमने तो कमाल कर दिया, एक मांसाहारी को शाकाहारी बना दिया। यह चमत्कार कैसे हो गया? तब वहाँ पर जितने भी व्यक्ति खड़े थे उन्होंने सारी पिछली घटना राजा साहब को कह सुनाई। सेठ साहब पिंजरे में चले गये थे। यह

भी कह सुनाया। राजा साहब एकदम भाव विभोर हो गये और सेठ साहब को गले लगाते हुए कहा- ''धन्य है तुम्हारा धर्म और धन्य है अहिंसा के प्रति तुम्हारी दृढ़ता। तुम अहिंसा के लिए मर मिटने को तैयार हो गये, पर अपना व्रत भंग नहीं किया। ऐसे मित्र पर मुझे नाज है।'' राजा साहब ने उनका खूब आदर-सत्कार किया और बहूमूल्य वस्तुएँ भेट में दीं। किन्तु सेठजी ने भेंट स्वीकार नहीं की, बस इतना ही कहा- आपकी कृपा से मुझे कोई कमी नहीं है। अब आप भी हिंसा करने का त्याग कीजिए। राजा ने उसी समय हिंसा करने का त्याग कर लिया और साथ-साथ नगर में ढ़िढ़ोरा भी फिरा दिया कि आज से कोई भी इस शहर में किसी भी प्राणी की बिना कारण हिंसा नहीं करेगा। जो राजाज्ञा को भंग करेगा उसको कड़ा दंड़ दिया जायेगा। एक व्यक्ति की दृढ़ प्रतिज्ञा से मांसाहारी पशु भी शाकाहारी हो गया। राजा भी अहिंसा व्रत में आ गये। राजा की अहिंसा से पूरे गांव में अहिंसा व्रत का पालन होने लगा।

इसलिए दृढ़ धर्मी श्रावक को चंदन की उपमा दी गई। चंदन के वृक्ष में तो खुशबू है ही, किन्तु उसकी संगति से जितने वृक्ष हैं सब में खुशबू आने लगती है। यह है अच्छी संगति का फल। **(समाप्त)**

-128, मिण्ट स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई (तमि.)

अनमोल वचन

1. जो बाहर के सुख में मशगूल रहता है वह भीतर के सुख से महरूम रहता है। जो बाहर के सुख का त्याग करता है वह भीतर के सुख से सराबोर रहता है।
2. धर्म तो गुलाब है और पाप तेजाब है।
3. मन अगर मजबूत है तो वासना की हार है, मन अगर मजबूर है तो उपासना की हार है।
4. उपासना के आगे वासना को झुकना पड़ता है।
5. संसार में माली बनकर रहना है, मालिक बन कर नहीं।
6. गुरु सावधान करते हैं तो समाधान भी करते हैं।

-श्री प्रमोद हीरावत, जयपुर द्वारा

महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा. के प्रवचनों से संकलित

विशेष-प्रसंग

तितिक्षाश्रीजी की तपस्या

श्री पी. शिखरमल सुराणा

(1) नागौर संघ की प्रबल विनति को ध्यान में रखते हुए पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म. सा. ने विदुषी महासती श्री इन्दुबाला जी म. सा., श्री मुदितप्रभा जी म. सा. और तीन नवदीक्षित महासतीवर्याओं सहित ठाणा पाँच का चातुर्मास नागौर श्रीसंघ को प्रदान करके महती कृपा की। मेरी जन्मभूमि नागौर का भाग्य पुनः जाग उठा। पिछले वर्ष महासती श्री इन्दुबाला जी म. सा. आदि ठाणा-7 का जयपुर में ऐतिहासिक चातुर्मास हुआ था। रत्नसंघ के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द्र जी हीरावत का पूरा प्रयास रहा कि वे महासतीजी का एक भी व्याख्यान नहीं छोड़ें। यह आचार्य प्रवर की कृपा व महासतीजी का प्रभाव था।

(2) 15 मई 2010 को आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म. सा. के मुखारविन्द से और उनकी आज्ञा से रत्नसंघ में एक ही दिन जो दस दीक्षाएँ हुई थीं, उनमें-से दो दीक्षाएँ महासती श्री इन्दुबाला जी के सिंघाड़े में हुईं। दोनों मुमुक्षु बहिनें थीं - सुश्री ट्विंकल सालेचा तथा सुश्री वर्षा सालेचा। ये दोनों सगी बहिनें बालोतरा के प्रतिष्ठित जागीरदार श्री हनुमानचन्द जी सालेचा की सुपौत्रियाँ और श्री महावीर चन्द जी सालेचा की सुपुत्रियाँ हैं। समस्त सालेचा जागीरदार परिवार का धर्मप्रेम, गुरुभक्ति और संघनिष्ठा सराहनीय है। अपने परिवार की दोनों वैरागिन बहिनों सहित बालोतरा में हुई कुल पाँच दीक्षाओं के महोत्सव में सालेचा परिवार ने लाभार्थी बनकर सुयश पाया। साथ ही सम्पूर्ण सालेचा परिवार और श्रीसंघ ने आत्मीयता और अपनत्व के साथ स्वधर्मी वात्सल्य का अनुपम आदर्श उपस्थित किया।

(3) सुश्री वर्षा ने अपने तीन वर्षीय वैराग्यकाल में पर्युषण में स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ भी दीं। उस अवधि में उन्होंने अनेक थोकड़ों के साथ एक दर्जन से अधिक आगम कण्ठस्थ कर लिये। किन्तु बड़ी बहिन सुश्री ट्विंकल का वैराग्यकाल सिर्फ आठ माह का ही रहा एवं वे स्वाध्यायी के रूप में पर्युषण

में भी सेवाएँ नहीं दे पाईं। लेकिन उनका भी वैराग्य गहरा था। दोनों की दीक्षा धूमधाम से हुई। 22 मई 2010 को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करते समय आचार्यश्री ने सुश्री ट्विंकल को महासती तितिक्षाश्री तथा सुश्री वर्षा को महासती वर्षाश्री नाम प्रदान किये। चातुर्मासार्थ ये दोनों नवदीक्षित साध्वियाँ महासती श्री इन्दुबाला जी के साथ नागौर पधारीं।

(4) नागौर में अपने चातुर्मासिक प्रवेश से पूर्व ही साध्वी तितिक्षाश्रीजी ने तपस्या शुरू कर दी। किसी ने सोचा भी नहीं था कि जिन्होंने अपने जीवन में कभी तेला भी नहीं किया, वे मासखमण की बड़ी तपस्या भी सानन्द पूर्ण कर लेंगी। अल्प वय और अल्प दीक्षा पर्याय में ऐसी दीर्घ तपस्या का उदाहरण मैंने पहली बार देखा है। वस्तुतः धर्म और गुरु कृपा का फल अचिंत्य और अनोखा होता है।

(5) जब मैं और मेरी धर्मसहायिका महासतियाँ जी के दर्शनार्थ नागौर पहुँचे, तब साध्वी तितिक्षाश्रीजी के मासखमण का अन्तिम चरण चल रहा था, जो संभवतः सर्वाधिक परीषहपूर्ण होता है। दिन में किसी भी समय जब भी हम दर्शनार्थ गये, हमने देखा कि तरुण-तपस्विनी महासती तितिक्षाश्रीजी गत्ते के पुट्ठे पर विराजित हैं और मालाजाप में संलग्न हैं। गुरुणीजी के कहने पर भी लेटने की बजाय बैठे-बैठे ही तप के साथ जप की साधना कर रही हैं। सुबह-शाम प्रतिक्रमण के समय विधिवत् प्रतिक्रमण भी उन्होंने नियमित रूप से किया। तपस्या के दौरान भी उन्होंने मौन रहते हुए ज्ञान और विवेक के साथ श्रमण जीवन की सारी क्रियाएँ अप्रमत्त भाव से सम्पन्न कीं। लम्बी तपस्या के बावजूद ऐसा अप्रमाद और स्वावलम्बन अनुकरणीय और उदाहरणीय है।

(6) सम्यक्त्व में ऐसे पराक्रम के लिए प्रचुर पुण्य के साथ-साथ प्रबल पुरुषार्थ और प्रखर मनोबल की जरूरत होती है। छोटी बहिन को देख बड़ी ने भी दीक्षा ले ली। दीक्षा लेने के दो माह के उपरान्त ही बड़ी तपस्या शुरू कर दी। 18 अगस्त 2010 को उन्होंने 31 उपवास सम्पन्न किये। उनकी तप-सम्पूर्ति के अवसर पर गणमान्य उच्च पदाधिकारियों सहित विशाल जनसमूह की उपस्थिति से वातावरण अध्यात्म से सराबोर हो गया। जिस प्रकार 15 मई 2010 को एक ही दिन दस दीक्षाएँ रत्नसंघ के लिए

कीर्तिमान रहा, उसी प्रकार संभवतः तितिक्षाश्रीजी की यह दीर्घ तपस्या भी उल्लेखनीय घटना है। युवक-युवतियों, श्रावक-श्राविकाओं तथा साधु-साध्वियों सभी के लिए यह तपाराधना एक अद्भुत प्रेरणा है। पंच परमेष्ठी से उनके निर्मल स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में निरन्तर उत्कर्ष की हार्दिक मंगल-भावना है।

(7) नागौर की धर्मधरा इन पाँच महासतियाँ जी के चातुर्मास तथा तितिक्षाश्रीजी की तपस्या से पावन हो गई। नागौर के श्रावक-श्राविकाओं में एक नया जोश, नई उमंग और नई धर्म-जागृति आई है। वहाँ त्याग-तपस्या, व्रत-प्रत्याख्यान, धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। नागौर में देश और प्रदेश के कई नगरों व गाँवों से दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। पूज्य आचार्यश्री की कृपा से नागौर श्रीसंघ और नागौरवासियों में अभिनव धर्म चेतना जाग उठी है। नागौर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री भँवरलाल जी कांकरिया, मंत्री श्री प्रकाशचन्द जी सुराणा सहित सभी नागौरवासी धर्म-ध्यान और संघ-सेवा में समर्पित भाव से लगे हुए हैं। बधाई!

अध्यक्ष : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

61-63, डॉ. राधाकृष्णन मार्ग, मैलापुर, चेन्नई-600004

प्रश्न पुस्तिका में संशोधन

'प्रश्नव्याकरण सूत्र' पर आयोजित प्रतियोगिता की प्रश्नपुस्तिका में कतिपय त्रुटियों का संशोधन किया गया है, यथा-

1. प्रथम भाग प्रश्नावली 8 में- प्रश्न 24 में चार की संख्या गलत है, वहाँ पाँच पढ़ा जाए।
2. प्रश्नावली 14 (कमल का फूल) में- प्रश्न 8 में अन्तिम संख्या 6 के स्थान पर 16 पढ़े जाएं।
3. द्वितीय भाग प्रश्नावली 7 में (जय गुरु हीरा) के शब्द में भा, ज्या मां गलत है, उसके स्थान पर- भ, ज्य, र्पा पढ़े जाने चाहिए तथा जी, थुं, न्द्री अक्षर छपे नहीं हैं ये अक्षर भी रहेंगे।

जितने अक्षर काम में आते हैं वे ठीक हैं उसके अलावा ज्यादा को छोड़ दीजिये।

-पारसकंवर भंडारी

श्रद्धापुंज का संस्मरण

गुरु हस्ती का सान्निध्य : एक बड़ा पुरस्कार

श्री श्रीपाल देशलहरा

छोटा सा गाँव अरटिया खुर्द में तृतीय कक्षा पूर्ण कर चतुर्थ कक्षा हेतु श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय भोपालगढ़ में 1984 में दाखिला हुआ। पूर्व से मेरे अग्रज भाईसाहब कैलाशजी देशलहरा वहाँ पर विद्याध्ययन कर रहे थे। इससे पूर्व मेरे पिताश्री सुश्रावक श्री मोहनलाल जी देशलहरा वहाँ के विद्यार्थी रह चुके हैं।

प्रकृति की छटाओं से आच्छादित श्री जैन रत्न छात्रावास एवं विद्यालय का प्रदूषण मुक्त वातावरण जीवन को नई रोशनी प्रदान कर रहा था। मेरा वह 13 वर्षीय बाल स्वभाव नटखट एवं बेवजह शरारत करने में अव्वल था। मेरी शरारत के कारण मेरे सहपाठियों, मित्रों, विद्यार्थियों को काफी नुकसान पहुँचा। जब कभी उन मित्रों से मिलना होता है, उनकी देह पर अंकित चिह्नों की ओर इशारा जाता है... मन कम्पायमान हो उठता है। मेरे शरारती स्वभाव के कारण घर वालों को भी कोप का भाजन बनना पड़ा.........यह सत्य है।

सन् 1985 में बडलू (भोपालगढ़) भू धरा पर धवल वस्त्रधारी योगी महात्मा, जगत् की ज्योति, अलमस्त, छोटा सा कद, पदयात्रा से मैत्री का झरना बहाता हुआ आचार्य हस्तीमल जी महाराज का 6 मुनिवृन्दों के साथ पदार्पण हुआ। महान् संत के दर्शन पाकर चण्डकौशिक सर्प की भाँति इस जीव का क्रोधी स्वभाव कुछ पलों में ही गायब हो गया। भोपालगढ़ श्री संघ की अनन्त पुण्यवानी से 1985 का चातुर्मास मिलने से समस्त नगर में हर्षोल्लास का वातावरण था।

चातुर्मास की पावन वेला में प्रत्येक रविवार को छात्रावास के सभी विद्यार्थी प्रवचन-दर्शन-वंदन का लाभ अर्जित करते थे। विद्यालय की ओर से प्रातःकालीन प्रार्थना, तत्पश्चात् कतारबद्ध होकर दर्शन-वंदन एवं मांगलिक श्रवण कर उसी शृंखला में विद्यालय वापस आना, इस प्रकार चार मास तक अनोखा अद्भुत दृश्य आज भी मन को झंकृत कर देता है। बड़ी संख्या में जैन-

जैनेतर छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिदिन उस योगी आत्मा के दर्शनों का दृश्य था, जो आज भी मन के विचारों, अंतर्मन की ग्रंथियों को हिला देता है। भावुक मन अनेक बार विचार करता है मेरा बचपन फिर से लौटा दो......... ।

चातुर्मास के दौरान विश्व शांति की प्रतिमूर्ति महामनीषी आचार्य हस्ती को कुछ मनीषियों के साथ वार्तालाप, प्रश्नोत्तर व विचार-विमर्श करते एक नहीं अनेक बार देखता। सायंकाल होते ही एक लम्बे एवं मोटे मनीषी रात्रि विश्राम हेतु छात्रावास प्रतिदिन आते थे। साथ में और भी एक मनीषी रहते थे।....ठीक से याद नहीं।

ढ़ेर सारे लम्बे-चौड़े ग्रन्थों को रोज पढ़ना, लिखना, फिर परिचर्चा करना, ये सारे दृश्य मेरे मानस पटल पर उन विद्वत् मनीषियों के अंकित हैं।

आखिर, वे लोग कौन थे?

श्री जैन रत्न विद्यालय से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, 'साधना भवन' बजाज नगर, जयपुर में प्रवेश हुआ। उस समय छात्रावास, भोपालगढ़ का मैं सबसे सीनियर विद्यार्थी था, क्योंकि विद्याध्ययन के दौरान तीन गृहपति श्री सुकराज जी बम्ब, श्री सुन्दरलाल जी सालेचा एवं श्री दिलीप जी नागौरी का पावन सान्निध्य नानाविध स्मृतियों के साथ आज भी तरोताजा है।

भोपालगढ़ चातुर्मास के पश्चात् मुझे श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में रहते हुए1986 में पीपाड़ सिटी, 1987 में अजमेर एवं 1988 में सवाईमाधोपुर में चातुर्मास के अन्तर्गत दर्शनों का लाभ मिला। वहाँ विद्यार्थियों का स्वाध्याय शिविर में ज्ञार्नाजन एवं दर्शन-वंदन के लिए ले जाना संस्था की प्राथमिकता थी। मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान तैयार करने वाली अनोखी संस्था श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान (जयपुर) में अध्ययन करने का अवसर मिला। ध्यान साधक मनीषी दादा स्वरूप श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा का पावन सान्निध्य एवं साथ ही सुश्रावक श्री टीकमचंद जी हीरावत, श्री श्रीचन्द जी गोलेच्छा, श्रीमान् हीराचन्द जी हीरावत, श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, श्री पूनमचंद जी, श्री हरीशचन्द जी बडेर, सम्माननीय श्री डी.आर. मेहता आदि कई गणमान्य मनीषियों का आवागमन संस्थान के विद्यार्थियों के लिए नई प्रेरणा, नव-उत्साह का सृजन करता था।

जयपुर विद्याध्ययन के दौरान सन् 1989 में कोसाना, 1990 में पाली चातुर्मास में संस्थान के विद्यार्थियों को स्वाध्याय शिविर एवं विभिन्न प्रसंगों पर ले जाना संस्थान की विशेषता थी। छात्रावास व संस्थान में पढ़ाये गये सादगी, अल्प-परिग्रह, परिश्रम, अनुशासन, शिष्टाचार आदि के पाठ ने विद्यार्थियों में जीवन को सुन्दर ढंग से जीने की सोच पैदा की। दुबले-पतले साधक मनीषी गुरुजी कन्हैयालाल जी लोढ़ा को बजाज नगर से लाल भवन उपाश्रय तक साइकिल पर आगे बिठाकर रविवार को प्रायः प्रवचन ले जाया करता था। सेवा शुश्रूषा से जीवन आनंद की हिलोरे खाता था।

संस्थान में प्रवेश लेने के बाद बाल-मन पूर्णतः खत्म नहीं हुआ था, कुछ शरारती आदतें यहाँ भी जारी थीं। अन्तिम चातुर्मास पाली के दौरान दोपहर में गुरुदेव ने स्वाध्यायियों की कक्षा ली। उस समय वृद्धावस्था के कारण बहुत धीमी गति से प्रवचन दे रहे थे.....गुरुदेव की वाणी के हुबहू आवाज में कुछ अंश विद्यार्थियों को सुनाता था....... सभी सुनकर हंसी का ठहाका मारते थे।

संस्थान में जब 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' पढ़ने का अवसर मिला उस समय मेरी स्मृतियों में भोपालगढ़ चातुर्मास की याद ताजा हो गई। पूज्य श्री के पास वे दो मनीषी श्री प्रेमचन्द जी बोगावत एवं श्री गजसिंह जी राठौड़ थे जो ज्ञान की गंगा में सदैव इतिहास को नया रूप दे रहे थे...।

छात्रावास एवं संस्थान का संक्षिप्त वर्णन करने के बाद मन में बार-बार विचार आता था इन संस्थाओं के संस्थापक व प्रेरणास्रोत कौन हैं? जिनमें हजारों-हजार विद्यार्थी विद्याध्ययन कर अपनी प्रतिभा से देश-विदेश में सर्वत्र फैले हुए हैं।

स्वप्नदर्शी, दूरदर्शी, बहु आयामी महापुरुष आचार्य हस्ती के उपदेशों से ऐसी नानाविध संस्थाओं का संचालन हुआ तथा सैकड़ों लोगों को प्रकाश प्राप्त हुआ। आज हम सभी उनके शताब्दी वर्ष को 'अध्यात्म चेतना वर्ष' का रूप देकर भगवान महावीर की परम्परा के श्रेष्ठ श्रमण, प्रतिभाशाली पट्टधर के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए छोटा सा प्रयास कर रहे हैं। ऐसे दुर्लभ गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान को पाकर जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार विजेता मानता हूँ।

-सिकन्द्राबाद

स्वास्थ्य विज्ञान

विधिवत् गुरुवंदन से स्वास्थ्य-लाभ

डॉ. चंचलमल चोरडिया

विधिपूर्वक वंदन प्रभावशाली

जब कभी हम संत मुनिराज के पास जाते हैं अथवा मुनिराज हमें सामने आते दिखते हैं तो हम तिक्खुत्तो के पाठ का उच्चारण कर वंदन करते हैं। ऐसा क्यों करते हैं? वंदन तो शांत, बिना बोले भी किया जा सकता है। तिक्खुत्तो के उच्चारण के साथ किया गया विधिपूर्वक भाव वंदन क्यों प्रभावशाली हो जाता है। शोध का विषय है।

गुरु वंदन का पाठ एवं उसका भावार्थ

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि, वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।

भावार्थः– भगवन्! दाहिनी ओर से प्रारम्भ करके आपकी तीन बार प्रदक्षिणा करता हूँ। आपको मैं वंदना करता हूँ, नमस्कार करता हूँ, आपका सत्कार करता हूँ, सम्मान करता हूँ। आप कल्याण रूप हैं, मंगल रूप हैं, देव स्वरूप हैं, चैत्य स्वरूप यानी ज्ञान स्वरूप हैं। मैं आपको मस्तिष्क झुकाकर आपके चरण कमलों में मन, वचन और काया से सेवा भक्ति अर्थात् पर्युपासना एवं वंदना करता हूँ।

तिक्खुत्तो के पाठ में चयनित शब्दों का रहस्य

गुरु वंदन हेतु , अभिव्यक्ति के लिए तिक्खुत्तो के पाठ में विनय के सूचक चार शब्द हैं। 'नमंसामि' का मतलब है– मैं शरीर से झुकता हूँ। 'वंदामि' का अर्थ है– मैं वाणी द्वारा आपके गुणों का आदर करता हूँ। मन से गुरु के प्रति 'सक्कारेमि' अहोभाव का सूचक है तो 'सम्माणेमि' का मतलब गुरु को देखकर उनके प्रति सम्मान का भाव है । इस प्रकार के सही भावपूर्वक वंदन करने से मन, वचन और काया तीनों का तालमेल हो जाता है। वाणी से गुरु का गुणगान करने एवं उनको कल्याणकारी, मंगलकारी, देव स्वरूप कहने से उनके प्रति श्रद्धा, आदर, बहुमान की अभिव्यक्ति होती है और मन चुम्बक की भांति गुरु के प्रति आकर्षित होने लगता है। जिससे वंदन करने वाले में भावात्मक बदलाव आ जाता है। इसके साथ

ही उसमें रेकी और प्राणिक हीलिंग के सिद्धान्तानुसार गुरु की ऊर्जा एवं आशीर्वाद की तरंगों का प्रवाह होने लगता है। फलतः व्यक्ति की अशुभ लेश्याएँ शुभ में परिवर्तित होने लगती हैं। आभा मंडल शुद्ध होने लगता है। दूसरों के जिन-जिन गुणों एवं दोषों का हम बखान करते हैं, वे हमारे अंदर भी विकसित होने लगते हैं। अर्थात् गुणानुवाद से वंदन कर्ता में भी सद्गुण बढ़ने लगते हैं। परिणाम स्वरूप वंदन-कर्ता भय, तनाव, दुःख, नकारात्मक सोच आदि भावों से मुक्त होने लगता है एवं उसमें अभय, संतोष, प्रसन्नता तथा उत्साह का प्रादुर्भाव होने लगता है। आत्मा कर्मों के आवरण से मुक्त एवं हल्की होने लगती है। हल्की वस्तु ऊपर उठती है। अतः सही विधि द्वारा भावपूर्वक गुरु वंदन पाठ से नीच गोत्र का बंध नहीं होता। आगम इस बात का प्रमाण देता है कि एक बार श्री कृष्ण ने भगवान अरिष्टनेमि के संत मुनिराजों को बिना किसी कामना से वंदन कर अपने भव-भव के बंधन तोड़ दिए। वंदन करते समय दृष्टि गुरु की तरफ, भावों में गुरु के प्रति श्रद्धा एवं विनय तथा वाणी में गुरु के गुणों के प्रति प्रमोदभाव की अभिव्यक्ति हो। वंदन बिना किसी स्वार्थ एवं कामना के अहोभाव पूर्वक होना चाहिए, अन्यथा वह मात्र द्रव्य वंदन ही होगा, जिससे अपेक्षित लाभ नहीं मिलेगा। चिन्तनपूर्वक समझकर की गई धार्मिक क्रियाओं से लाभ बहुत बढ़ जाता है। तिक्खुत्तो के पाठ में उच्चारित प्रत्येक शब्द के रहस्य का चिंतन करते हुए यदि शारीरिक क्रिया करें तो वह क्रिया कभी भार स्वरूप नहीं लगती। रोग भी दुःख, तनाव, भय, अशांति का प्रमुख कारण है। गुरु वंदन से कषाय मंद होते हैं। प्रमाद दूर होता है और संयमित जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। फलतः अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त होता है और रोगों से मुक्ति मिलती है।

विनय का गुण विकसित

मानसिक स्तर पर नमस्कार विनय का प्रतीक है। ज्ञान का आधार है। अतः गुरु-वंदन से अज्ञान रूपी अन्धकार दूर होता है। तिक्खुत्तो का उच्चारण स्वाध्याय का ही रूप है। अतः इसके उच्चारण से ज्ञानावरणीय अशुभ कर्मों का क्षय होता है एवं स्मरण शक्ति अच्छी होती है।

वंदन करने से अहं दूर होता है। विनयवान् व्यक्ति की बात प्रत्येक व्यक्ति सहर्ष बिना आनाकानी स्वीकार करने लगता है, जिससे उसको मानसिक शांति प्राप्त होती है। मानसिक तनाव ही रक्तचाप, मधुमेह, हृदयाघात आदि रोगों का मुख्य कारण होता है। यही मानसिक शांति एवं स्वास्थ्य का मूलाधार होती है।

वंदन तीन बार क्यों?

गुरुदेव को जितना वंदन करें, कम है। गुरुदेव 27 गुणों के धारक होते हैं। अतः यदि उनके एक-एक गुण के लिए एक-एक बार भी वंदन करें तो भी 27 बार वंदन करना चाहिए, जो प्रायः संभव नहीं होता। इसी कारण उनके ज्ञान, दर्शन, चारित्र के प्रतीक के रूप में कम से कम तीन बार तो वंदन करना ही चाहिए।

गुरुवंदन की विधि में समाया हमारा स्वास्थ्य

गुरुवंदन हेतु जब दोनों हाथ जोड़कर पैर मिलाकर खड़े होते हैं तो दोनों पगथलियों में दबाव पड़ने से एक्यूप्रेशर की सुजोक एवं फुट रिफ्लेक्सोलॉजी के सिद्धान्तानुसार सभी अंगों उपागों से संबंधित प्रतिवेदन बिन्दुओं पर भी दबाव आता है। फलतः उनसे संबंधित शरीर के भागों में चेतना का प्रवाह बराबर होने लगता है एवं उनकी कार्य क्षमता बढ़ने लगती है। हम प्रायः अनुभव करते हैं कि सोने के आसन की अपेक्षा बैठने एवं बैठने की अपेक्षा खड़े रहने पर व्यक्ति अधिक सक्रिय होता है। प्रमाद अपेक्षाकृत कम आता है।

नमस्कार के साथ तीन बार आवर्तन करने से कंधों में आयी जड़ता दूर होने लगती है और कंधे स्वस्थ एवं सक्रिय होने लगते हैं। कंधों से गुजरने वाले हृदय, मस्तिष्क (पेरिकार्डियन), फैंफड़ों, छोटी आंत, बड़ी आंत और ट्रिपल वार्मर (मेरुदण्ड) आदि से संबंधित मेरेडियन की ऊर्जा प्रवाह में आया अवरोध दूर होने लगता है और ये सभी अंग सक्रिय होकर कार्य करने लगते हैं जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

पंचांग नमस्कार से शरीर के सभी प्रमुख जोड़ों में खिंचाव आता है। गले में खिंचाव से थायरायड ग्रन्थि, कमर में खिंचाव से पेट एवं प्रजनन अंग, घुटनों को मोड़ने से घुटनों का जोड़, पगथली में एडी के पीछे खिंचाव से लसिका तंत्र (जिसका कार्य शरीर के विभिन्न भागों में उत्पन्न विजातीय तत्त्वों को हटाना होता है) एवं अंगुलियों पर खिंचाव से पूरा नाड़ी तंत्र सजग एवं सक्रिय होता है। 'वंदामि से मत्थएणं वंदामि' तक सीधी कमर बैठने से वज्रासन होता है। जिससे वीर्य विकार दूर होते हैं एवं शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ती है। प्रथम नमस्कार के पश्चात् पुनः खड़े होते ही सारे शरीर में सक्रियता का अनुभव होने लगता है। यही प्रक्रिया दूसरे एवं तीसरे नमस्कार के बाद भी की जाती है।

नमस्कार करते समय हाथ जोड़ने पर, दोनों हथेलियों के स्पर्श होने से

चन्द्र और सूर्य स्वर सम होने लगता है और सुषुम्ना स्वर चलने लगता है। फलतः वात, कफ और पित्त आदि विकारों पर अंकुश लगने लगता है। आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार वात, कफ एवं पित्त के असंतुलन से ही रोगों की उत्त्पति होती है। दोनों हाथ जोड़ने एवं पैरों का आपस में स्पर्श होने से शरीर के बायें एवं दाहिने भाग का आभा मंडल संतुलित होने लगता है, जिससे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने लगती है और वंदन कर्ता पर संक्रामक रोगों का अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ता है।

हथेली में सुजोक एवं हैण्ड रिफ्लेक्सोलॉजी एक्यूप्रेशर के सिद्धान्तानुसार शरीर के प्रत्येक भाग के प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं और जब दोनों हथेलियों को मिलाते हैं तो सभी अंगों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होने लगता है, आवेग शांत होने लगते हैं। मन की चंचलता शांत होती है, श्वास की गति मंद हो जाती है। जिससे अहं का विसर्जन एवं क्रोध शांत होता है। सकारात्मक सोच विकसित होने लगती है। इसी कारण हमारे यहाँ एक लोकोक्ति है- ''हाथ जोड़ो-गुस्सा छोड़ो'' अर्थात् हाथ जोड़कर क्रोध नहीं किया जा सकता।

हथेली की पाँचों अंगुलियाँ पंच महाभूत तत्त्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) का प्रतिनिधित्व करती हैं। अतः हाथ जोड़ने से बायें-दायें पंच तत्त्वों का संतुलन होने लगता है। पंच तत्त्वों का असंतुलन ही अधिकांश रोगों का मूल कारण होता है।

उग्रविहारी श्रद्धेय श्री गुणवंत मुनि जी महाराज के कथनानुसार वंदन करने से चलने की थकावट दूर होती है। जैन साधु पैदल यात्रा ही करते हैं और विहार के पश्चात् थकान होना स्वाभाविक है। यदि वे गंतव्य स्थान पर पहुँचने के पश्चात् अपनी शक्ति के अनुसार विधिपूर्वक वंदन कर लें तो उनकी थकान शीघ्र दूर हो जाती है।

इस प्रकार सही विधि एवं सही उच्चारण के अनुसार समझकर तिक्खुत्तो के पाठ से वंदन करने से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकार दूर करने में सहायता मिलती है और व्यक्ति स्वस्थ रहता है।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर,
थार हैण्डलूम के सामने, जोधपुर-342003(राज.)
E-mail - cmchordia.jodhpur@gmail.com
Website: www.chordiahealthzone.com

बाल-स्तम्भ

दो सार्थवाह

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अक्टूबर 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

वसुमती नगरी का वणिक् धनमित्र एक छोटी-सी दुकान करके अपनी आजीविका चलाता था। उसकी दुकान पर प्रायः भोले-भाले ग्रामीण स्त्री-पुरुष सौदा लेने आते थे। एक दिन एक भोली-भाली ग्वालिन धनमित्र की दुकान पर आयी और उसने उसके हाथ में दो रुपये देते हुए कहा- "मुझे दो रुपये का कपास दे दीजिए।" धनमित्र ने दो रुपये लेकर उसे एक रुपये का कपास दो बार तोलकर दे दिया। भोली-भाली ग्वालिन धनमित्र वणिक् की इस चालाकी को समझ न सकी। उसने समझा कि 'बनिये ने कपास दो बार तोला है, इसलिए मुझे दो रुपये का ही कपास दिया है।" वह कपास लेकर घर चली आयी।

उसके चले जाने पर वणिक् ने सोचा- 'आज का दिन मेरे लिए बहुत ही भाग्योदय का है कि मुझे मुफ्त का एक रुपया मिला है। अतः आज मैं इस रुपये का उत्तम भोजन बनाकर उपभोग करूँगा।' उसने उस एक रुपये के घी, शक्कर आदि सामग्री लेकर अपने घर भेजी और अपनी पत्नी को कहलाया कि-"आज इस सामग्री से घेवर बनाना।" पत्नी ने घेवर तैयार कर दिये। इतने में उसका दामाद अपने मित्रों के साथ किसी कार्यवश उसके यहाँ आ गया। वणिक्-पत्नी ने अपने दामाद तथा उसके मित्रों की थाली में घेवर परोस दिये। दामाद और उसके मित्र घेवर का भोजन करके तुरन्त

वहाँ से चले गये।

यथासमय धनमित्र वणिक् अपने घर भोजन के लिए आया। वह रसोईघर में भोजन की थाली पर बैठा तो पत्नी ने उसकी थाली में प्रतिदिन की तरह साधारण भोजन परोस दिया। यह देखकर वणिक् ने पूछा-"क्या आज घेवर नहीं बनाए?" उसकी पत्नी ने कहा- "बनाये तो थे, किन्तु दामाद अपने इष्ट मित्रों के साथ आ गये थे, उन्हें तत्काल जाना था, इसलिए मैंने उनकी थाली में सभी घेवर परोस दिये थे।" यह सुनकर धनमित्र ने सोचा-"अरे! व्यर्थ ही मैंने उस ग्वालिन को ठगा। मुझे तो उसका कुछ भी लाभ नहीं हुआ।" उसके चिन्तन की धारा आगे बढ़ी- "ओ हो! मैं कितना मूर्ख हूँ कि मैंने यह सोचकर वंचन का पाप किया था कि चलो, इस मुफ्त में आये हुए रुपये का माल उड़ाऊँगा। परन्तु मुझे तो कुछ भी हाथ न लगा, सिर्फ पाप ही मेरे सिर चढ़ा, जिसका फल उदयकाल में मुझे ही भोगना पड़ेगा, उसमें दूसरा कोई भी हिस्सेदार नहीं होगा।"

यों चिन्तन करता-करता वणिक् धनमित्र घर से बाहर निकल गया। ग्रीष्मऋतु का समय था, मध्याह्नकाल था। बहुत तेज धूप पड़ रही थी। वह शरीर चिन्ता से निवृत्त हुआ और गर्मी से घबराकर वहीं एक वृक्ष की ठंडी छाया में विश्राम पाने के लिए बैठ गया। इसी समय एक मुनि वहाँ से निकल रहे थे तो वणिक् ने उनसे कहा-"मुनिवर! थोड़ी देर इस वृक्ष की छाया में बैठकर विश्राम ले लीजिए।' मुनि ने कहा-"मुझे अपने एक आवश्यक कार्य के लिए शीघ्र जाना है, इसलिए मैं विश्राम नहीं लूँगा।" मुनिराज के वचन सुनकर वणिक् ने पूछा-"मुनिवर! दुनिया में क्या कोई व्यक्ति पर-कार्य के लिए भी उद्यम करता है? ज्ञानी मुनिराज ने कहा- "हाँ, संसार में अनेक जीव ऐसे हैं, जो पर के निमित्त से नाना दुःख उठाते हैं। तुम भी अपने स्वजनों के लिए जो दुःख उठा रहे हो, वह सब पर का ही तो कार्य है।"

मुनिराज के ये मार्मिक वचन सुनकर धनमित्र वणिक् के हृदय की आँखे खुल गयी। वह प्रतिबुद्ध हो गया।

उसने मुनिवर से कहा-"पूज्यवर! आप कहाँ ठहरे हैं?" मुनि ने

कहा "यहीं निकटवर्ती उद्यान में!" यह कहकर मुनिराज आवश्यक कार्य से निवृत्त होकर वापस लौटे तब वणिक् उनके साथ-साथ उद्यान में पहुँचा। वहाँ मुनिराज से उसने धर्मोपदेश सुना तो उसका अन्तःकरण वैराग्य से परिपूर्ण हो गया। उसने मुनिराज से कहा- "गुरुदेव! मुझे अब संसार से, स्वजन, धन एवं भोग साधनों से विरक्ति हो गयी। मुझे आपके चरणों में दीक्षित होना है। अतः मैं अपने स्वजनों की अनुमति लेकर आता हूँ, तब तक आप यहीं विराजे रहें।"

घर आकर धनमित्र वणिक् ने अपनी पत्नी और स्वजनों से कहा-" मुझे यहाँ इस दुकान से बहुत ही थोड़ा लाभ हो रहा है, अतः परदेश जाकर कोई बड़ा व्यापार करना चाहता हूँ ताकि मुझे विशेष लाभ हो। यहाँ मुझे दो सार्थवाह मिले हैं। उनमें से एक सार्थवाह तो ऐसा है, जो हमें मूल पूँजी देता है, और यथेच्छ स्थान पर पहुँचा देता है तथा उस पूँजी से व्यापार करने पर जो लाभ होता है, उसमें से कुछ भी नहीं लेता। जबकि दूसरा सार्थवाह ऐसा है, जो हमें मूल पूँजी नहीं देता तथा साथ में रहकर समस्त उपार्जित द्रव्य को वही हड़प जाना चाहता है। अब आप सब बताएँ कि मुझे इन दोनों सार्थवाहों में से किस सार्थवाह के साथ जाना चाहिए?" सबने एक स्वर से कहा-"इसमें पूछने की क्या बात है? आपका पहले सार्थवाह के साथ जाना ही उचित है।"

इस पर वह वणिक् समस्त स्वजनों को लेकर उस उद्यान में आया, जहाँ मुनि विराजमान थे। उसने मुनि को बताकर स्वजनों से कहा-"देखो, ये मुनिराज मुक्तिपुरी के सार्थवाह हैं। ये अपना धर्मरूप मूलधन देकर मुमुक्षु मनुष्यों से धर्म का व्यापार करवाते हैं और मुक्तिपुरी को ले जाते हैं। ये उपार्जित धर्मधन में से कुछ भी हिस्सा नहीं माँगते, न लेते हैं। अतः मैं इन्हीं के साथ सिद्धपुरी जाना चाहता हूँ। दूसरे सार्थवाह- ये स्त्री-पुत्रादि स्वजन हैं जो पूर्वोपार्जित धर्मधन को भी हरण कर लेते हैं तथा अपना कुछ भी नहीं देते। आप सबने मुझे पहले सार्थवाह के साथ जाने की अनुमति दे दी है। अतः मैं आप सबके कथनानुसार अपने स्वजनों के मोह ममत्व को त्यागकर इन मुनिरूप मुक्तिपुरी के सार्थवाह का आश्रय लेता हूँ।"

इस प्रकार धनमित्र वणिक् ने स्वजनों की अनुमति पाकर उक्त

मुनिवर से मुनिधर्म की दीक्षा ग्रहण करके स्व-पर कल्याण किया।

जिस प्रकार धनमित्र वणिक् ने बन्धु-बान्धवों के मोह का परित्याग कर मुनिधर्म अङ्गीकार करके दोनों लोकों में स्वाधीन आत्मसुख प्राप्त किया, उसी प्रकार प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति को स्वजन-मोह परित्याग करके शुद्ध-धर्म की आराधना करके परमसुख को प्राप्त करना चाहिए।

-उत्तराध्ययन सूत्र, भाग 1 से साभार

प्रश्न :-

1. धनमित्र ने ग्वालिन को कैसे ठगा?
2. घेवर का नहीं मिलना धनमित्र के लिए कैसे प्रेरणादायी बना?
3. क्या आप पर के निमित्त से दुःख उठाते हैं, कैसे?
4. दो सार्थवाह कौन थे?
5. अर्थ बताइए- वणिक्, इष्ट मित्र, उदयकाल, मार्मिक वचन, प्रतिबुद्ध, सार्थवाह।
6. संधि-विच्छेद कीजिए- पूर्वोपार्जन, पुत्रादि, कथनानुसार, भाग्योदय, उपार्जित, धर्मोपदेश, स्वाधीन।
7. धर्मधन से क्या तात्पर्य है?

बाल-स्तम्भ [जुलाई-2010] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'देह सौन्दर्य से आत्म-सौन्दर्य की ओर' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 32 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	उत्कर्ष जैन-हिण्डौन सिटी	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	श्रेया मेहता-किशनगढ़	19
तृतीय पुरस्कार- 150/-	कृतिक जारोली-उदयपुर	18.75
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	18.75
	नरेश जैन-नदबई	18.25
	सुजल जैन-जयपुर	18
	बुद्धिप्रकाश जैन-मंदसौर	17.75
	अंजलि जैन-हिण्डौन सिटी	17.75

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित
'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (26) का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई, 2010 अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (26) में 320 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के अप्रेल से जून, 2010 के अंकों पर आधारित थी। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार हैं-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	शशिकांता जैन-भरतपुर	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	कांता अरुणकुमार भंडारी-अहमदाबाद	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	रीमा जैन-लुधियाना	(50)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

अनिल जैन-कोटा	(50)	अकलकंवर मोदी-जोधपुर	(50)
नथमल कोठारी-बालोद	(50)	सुमित्रा नाहर-जोधपुर	(50)
संगीता जैन-कुण्डेरा	(50)	पुष्पा गोलेच्छा-ब्यावर	(50)
पी.सी.जैन-गोटन	(50)	अणचीबाई धाड़ीवाल-पाली	(50)
कमलेश जैन-जोधपुर	(50)	इचरज देवी-जयपुर	(50)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	श्वेता लोढ़ा-दुर्ग	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	सुनील जैन-आचीणा	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	समता ललवानी-सिकंदराबाद	(50)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

रागिनी जैन-हा.बो.स.माधोपुर	(50)	संजना दरड़ा-गोटन	(50)
रोहन लुणावत-इंदौर	(50)	पुलकित कुम्भट-ब्यावर	(50)
भारती मूधा-अमरावती	(50)	चित्रा जैन-आलनपुर	(50)
सिद्धि शुभेन्द्र बाफना-जोधपुर	(50)	माधुरी जैन-बूँदी	(50)
महेन्द्र जैन-इंदौर	(50)	योगेश जैन-जयपुर	(50)

50 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:-त्रिलोकचन्द जैन-आचीणा, नेणचन्द बाफणा-जोधपुर, स्नेहलता पी शाह-बेलगाम, सुनीलचंद डागा-जयपुर, संजना लुणावत-आचीणा, रीना कोठारी-बालोद, पदमचंद मुणोत-जयपुर, पारसमल रतन बोहरा-बालोद, हेमलता जैन-ब्यावर, हेमराज सुराना-जयपुर, निर्मला बाफना-जोधपुर, सिद्धि कोठारी-बालोद, प्रियंका नाहर-जोधपुर, किरण कुम्भट-जोधपुर, धर्मेन्द्र

जैन–हा0बो0सवाईमाधोपुर, ललित जैन–जयपुर, अनिता जैन–सवाईमाधोपुर, अंकित जैन–जयपुर, अरूणा कटारिया–पाली, नेहा जैन–कुण्डेरा, उपमा चौधरी–अजमेर, सुनीता चौपड़ा–आचीणा, सपना आर. जैन–अमरावती, शैली कुम्भट–जोधपुर, आयुषी लुणावत–आचीणा, प्रीति जैन–भरतपुर, पूर्णिमा गांधी– जोधपुर, पुष्पा लुणावत–पांचलासिद्धा, हेमन्त जैन–जयपुर, विपुल जैन–जोधपुर, शिल्पा गांधी–जोधपुर, प्रियंका गांधी–जोधपुर, प्रियंका जैन–सवाईमाधोपुर, किरण दरड़ा–गोटन, मनीष जैन–आचीणा, मधुबाला जैन–आचीणा।

49 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:–लक्ष्मीचंद छाजेड़–बालोतरा, गणपत सुराणा–जोधपुर, अनीता दुग्गड़–धुले, अशोक बाबूलाल जैन–सूरत, आशा अग्रवाल–जयपुर, अंजलि मेहता–नई दिल्ली, अरूण कुमार भंडारी–अहमदाबाद, जौहरीमल छाजेड़–जोधपुर, दर्शिका टाटिया–जलगांव, उषा जी चोरडिया–दिल्ली, सुनीता नवलखा–कोटा, सुनंदा लोढ़ा–धुले, सुरेश खीवंसरा–जोधपुर, सुरेखा भडारी–पिंपलगांव, सोनू जैन–होशियारपुर, सरोज रूणवाल–धुले, शोभा कोठारी–धुले, शशि जैन, गूगलिया–लश्कर, रेखा जैन–कोटा, रेणु बोहरा–दिल्ली, राजेश लुणावत–आचीणा, राजुल कोठारी–धुले, राज जैन–दिल्ली, प्रेमलता चौधरी–भीलवाड़ा, प्रवीणचंद जैन–हिण्डौन, पुष्पा जैन–पाली, निर्मला जैन–अलवर, विजयमल मेहता–जोधपुर, विमला मादरेचा–भीलवाड़ा, किस्तूरमल गांग–जोधपुर, मीना चोरडिया–चैन्नई, मंगला सिघंवी–दिगरशिवर, मंजू श्री सुराणा–जोधपुर, कल्पना घाकड़–गुडगाँव, कंवलराज मेहता–जोधपुर, बाबुलाल जैन–शिवनगर, इन्दरचंद गांधी–जोधपुर, गौरव जैन–कोटा, गरिमा जैन–कोटा, अल्फा सुराणा–जोधपुर, अनीता रांका–अजमेर, अजय भंडारी–अहमदाबाद, अश्विनी दुग्गड़–धुले, अर्मिला कांकरिया–जोधपुर, अमिता जैन–धुले, अंजलि जैन–हिण्डौन, अरूणा मेहता–जोधपुर, अरूणा बैद–अमरावती, नवरत्न ओस्तवाल–गोटन, नरेश बाफना–जोधपुर, नीतू जैन–बूंदी, जयमाला कांकरिया–पाली, चांदनी जैन–इंदौर, श्वेता जैन–कोटा, दीपमाला–जोधपुर, दीपिका बया–बम्बोरा, सुधा जैन–इंदौर, संजय भंडारी–अहमदाबाद, शशिबाई रतनबोहरा–बालोद, प्रवीण जैन–आचीणा, प्रकाश गादिया–हैदराबाद, पायल जैन–जोधपुर, पंकज गांग–जोधपुर, हेमलता कोठारी–धुले, हेमा जैन–जयपुर, हेमा भण्डारी–जोधपुर, निशा लुकंड़–कोटा, निर्मला आर. बोहरा–इचलकरंजी, विमलचंद चोरडिया–पीपाड़, दिलीप नागौरी–उदयपुर, किरण बाघमार–हैदराबाद, मनीषा जैन–सूरत, मोनिका गोलेच्छा–ब्यावर, मोहिनी चोरड़िया–पीपाड़, कु.मयूरी एस. जैन–धुले, बबीता जैन–भरतपुर, इंदिरा बाघमार–हैदराबाद, ऋषभ जैन–इन्द्रगढ़, योगिता कर्नावट–अहमदनगर, रूचिका लुणावत–जोधपुर।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:– लता आंचलिया–धुले, गुणमाला जैन–चित्तौड़गढ़, गीता जैन–जालंधर, अनिला भडारी–ब्यावर, नौरतमल चंगेरिया–अजमेर, वीरेन्द्र कुम्भट–जोधपुर, देवेन्द्रनाथ मोदी–जोधपुर, डॉ. कोमल कोठारी–बड़ौदा, उषा बरडिया–धुले, स्नेहलता जैन–इंदौर, सुनीता दुस्साज–जयपुर, सुशीला इ. रांका–जलगांव, सरला कांकरिया–जलगांव, सरोज खाबिया–मैसूर, सीमा जैन–कोटा, संगीता खाबिया–मैसूर, शांतिलाल महात्मा–सेंती, शकुन्तला जैन–इंदौर, राजुला कोठारी–जयपुर, राजकुमारी लोढ़ा–जयपुर, राज प्र. मेहता–पुणे, रश्मि राहुल झांबड–औरंगाबाद, प्रमिला पोखरना–धुले, पुखराज सेठिया–मसूदा, पुष्पा गांधी–जोधपुर, पदमा एस. मुणोत–भंडारा, पारसमल दौलतराम जी बाधमार–बालोतरा, हीरा रमेश जी कर्नावट–अहमदनगर, निर्मला देवी सुराणा–बीकानेर, निक्की जैन–कुण्डेरा, विजयलक्ष्मी मुणोत–जयपुर, विमलाबाई बरडिया–बोदवड़, प्रिया धामानी–अहमदाबाद, महावीर प्रसाद जैन–कोटा, कमला सेठिया–मसूदा, बसंती बाई कठेवर–धुले, बाबूलाल कटारिया–हैदराबाद, ललिता जैन–हैदराबाद, गौरव जैन–जयपुर, आशी कवाड़–पाली, अर्चिता जैन–सवाईमाधोपुर, अश्विनी आनंद जैन–जालना, नीलम कांकरिया–नागौर, नीव कवाड़–पाली, चंचल गोलेच्छा–जयपुर, दीपेश जैन–अलवर, दीप्ति जैन–कोटा, दीप्ति भंडारी–जोधपुर, सुनील जैन–मैसूर, सुधा विराणी–दापोड़ी, सोनाली वेद्मूथा–धुले, साधना गुगके–इचलकरंजी, सपना जैन–आलनपुर, सीमा कटारिया–जलगांव, शोभा कवाड़–पाली, रचना भंडारी–जोधपुर, राजुला भंडारी–पीपाड़, राकेश भंडारी–पीपाड़, प्रमिला कांकरिया–जोधपुर, प्रमिला बोहरा–जैतारण, पल्लवी जैन–जोधपुर, पूजा जैन–समीधी, निकिता कांकरिया–नागौर, शिखा जैन–दिल्ली, किरण जैन–आलनपुर, एकता कोठारी–जयपुर।

47 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:– लीलाबाई कोठारी–अहमदनगर, अनिलकुमार शाह–उज्जैन, अरूणा जैन–भंडारा, नोरतमल मेहता–अजमेर, चुकी देवी जैन–जोधपुर, चंदनमल पालरेचा–जोधपुर, सुरेशचंद जैन–खेरली, सुखराज दरड़ा–जोधपुर, सरोज नाहर–दिल्ली, शोभा कोठारी–धुले, रतनलाल रांका–अजमेर, रमणलाल छाजेड़–धुले, प्रसन कोठारी–जोधपुर, पूजा आर. जैन–धुले, पुष्पा मेहता–पीपाड़, चित्रा डागा–बूँदी, विमला हीरावत–जयपुर, विद्या संघवी–बदनावर, मोहनलाल जैन–अजमेर, मंजू कांस्टिया–कोलकाता, युगल नेमीचन्द रांका–अहमदाबाद, गौतमचंद जैन–रतकूड़िया, आभा जैन–खेरली, अंजना डोसी–ब्यावर, नेहा जैन–शिमोगा, नवकार लुणावत–पांचलासिद्धा, नीलम जैन–भरतपुर, वनमाला विक्रम राठौड–धुले, उज्जवला जैन–जोधपुर, सुधा डागा–बीकानेर, श्रेया जैन–शिमोगा, राखी लोढ़ा–भायंदर,

रमेश भंडारी–जोधपुर, पल्केश कटारिया–पाली, नितिन कुमार जैन–जयपुर, दिशा चतर–इंदौर, मदनमोहन जैन–हिण्डौन, मोनिका देशलहरा–सिकंदराबाद, मांगीलाल सुराणा–नागौर, महेन्द्र पुष्पा गोलेच्छा–ब्यावर, महिमा जैन–जोधपुर, मयंक लुंकड़–कोटा, मधुबाला बोरा–इचलकरंजी, कोमल जैन–धुले, कविता मेहता–शिमोगा।

46 या इससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- अनाम–बदनावर, आशा ओस्तवाल–पीपाड़, सुगनचंद छाजेड़–जोधपुर, सुरेश बी. मुणोत–भंडारा, सौ. जवेर नरेन्द्रशाह–बेलगांव, सौ. राणूलाल कोचर–नासिक, प्रवीण बरडिया–धुले, पारसचंद जैन–भरतपुर, विमला बाई खींवसरा–धुले, मोतीलाल फिरोदिया–भंडारा, मंगला वेदमूथा–सांगली, कल्याणमल जैन–झालरापाटन, इन्दिरा पोखरणा–चिदबंरम, सरोज जैन–शेरपुर, सरिता बाबेल–इचलकरंजी, रमीला कर्नावट–वणी, भारती सुरपुरिया–इचलकरंजी, पिस्ता गोलेच्छा–जयपुर, मनीला पारख–जयपुर, मंजू कटारिया–अजमेर, बसंती गांधी–चन्द्रपुर, गौतममल गांग–जोधपुर, छगनचंद जैन–खोह, प्रेमलता लोढ़ा–जयपुर, निर्मला कोठारी–दूदू, मुन्नालाल भंडारी–जोधपुर, बसंता संकलेचा–नरड़ाणा, देवीलाल भाणावत–कानोड़, रजनी भडारी–गुड़गांव, पुष्पादेवी मुणोत–भटिण्डा, विजयलक्ष्मी छाजेड़–धुलिया, दिलरूपचंद भंडारी–जोधपुर, बाबूलाल जैन–भरतपुर, चंचल भंडारी–जोधपुर, शकुंतला खींवसरा–मांडल, निर्मला हीरावत–जयपुर, अमीता राजेश जैन–इंदौर, नूतन भंडारी–इचलकरंजी, नमन कटारिया–पाली, जया खींवसरा–जोधपुर, दीपक कटारिया–भीलवाड़ा, सुधा संचेती–मसूदा, सोनम गोलेच्छा–ब्यावर, समता छाजेड़–समदड़ी, संगीता दरडा–जोधपुर, रेखा आंजना–मरजीवी, राशि रांका–भडगांव, राकेश कांकरिया–जोधपुर, विद्या संचेती–जोधपुर, शिल्पा जैन–रतकूड़िया, खुशी लुणावत–जोधपुर, लालचंद गोगड़–बेल्होगंल, नीरज जैन–हरसाना, सीमा जैन–हा0बो0सवाईमाधोपुर, विनिता जैन–हा0बो0 सवाईमाधोपुर, लक्ष्मी जैन–चौथ का बरवाड़ा, शायरी जैन–भरतपुर, प्रियंका जैन–जयपुर, मनोज कुमार जैन–सवाईमाधोपुर, आरती कवाड़–धुले, निशा जैन–अलीगढ़, चंद्रकला सिंघवी–धुलिया, शोभा सुराना–चेन्नई, प्रवीण सुराणा–चेन्नई, देवेन्द्र छाजेड़–मुकटी, राहुल जैन–मुकटी।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (26) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1. यौवन	अप्रेल/8	2. संत	जून/88
3. शिशुनाग	मई/3	4. उदारता	मई/92
5. मृत्यु	जून/15	6. माला	मई/32
7. धर्मसभा	जून/102	8. शान्ति	अप्रेल/5
9. दूसरे	अप्रेल/11	10. संसरण	मई/5
11. केवलज्ञान	जून/9	12. शरीर	अप्रेल/19
13. मैं	जून/62	14. उपपात	मई/9
15. प्रशमसुख	अप्रेल/46	16. ज्ञायिक	जून/28
17. निरभिमानी	अप्रेल/135	18. तर्क	अप्रेल/6
19. गधा	अप्रेल/12	20. सम्यक्त्वी	मई/80
21. लोकैषणा	जून/7	22. संकोच	अप्रेल/49
23. शैशवकाल	मई/10	24. अन्तर्मन	अप्रेल/4
25. साधना	जून/93	26. जीवन	जून/41
27. वैराग्य	मई/5	28. परीक्षा	मई/19
29. महावीर	अप्रेल/109	30. दीक्षा	जून/95

31. 3	मई/59	32. 10	अप्रेल/13
33. 16	जून/36	34. 13	मई/71
35. 120	अप्रेल/75	36. 14	अप्रेल/41
37. 32	मई/54	38. 50	जून/64
39. 8	अप्रेल/108	40. 12	जून/72
41. नहीं	अप्रेल/5	42. हां	जून/8
43. नहीं	जून/40	44. हां	अप्रेल/63
45. नहीं	अप्रेल/44	46. हां	जून/43
47. हां	अप्रेल/59	48. हां	अप्रेल/28
49. नहीं	जून/13	50. नहीं	अप्रेल/64

हावड़ा ब्रिज पर गुटखे का प्रभाव

जो रसायन हावड़ा ब्रिज के पुराने और मजबूत इस्पात को भी गला सकते हैं, वे इंसान की आंतों में पहुँचकर कितना घातक असर करते होंगे?

कोलकाता का हावड़ा ब्रिज शहर की वैसे ही पहचान है जैसे दिल्ली का इंडिया गेट या मुम्बई का गेटवे ऑफ इंडिया। इस्पात से बने इस पुल का निर्माण 1937 में शुरु हुआ और 1943 में यह परिवहन के लिए खोल दिया गया। यह कोलकाता और हावड़ा को जोड़ने वाली महत्त्वपूर्ण और उपयोगी इस्पात की कड़ी है और हुगली नदी पर तीन और बड़े पुलों के बनने के बाद भी उसका महत्त्व कम नहीं हुआ है। लेकिन इस पुल को एक बहुत आम-सी दिखने वाली चीज से खतरा है। पुल की देखरेख करने वाले लोग कहते हैं कि आते-जाते लोग पुल के खंभों पर गुटखा खाकर थूकते हैं। गुटखे में कुछ अम्लीय रसायन होते हैं, जिनसे इन खंभों का लोहा गल जाता है। यह गलना गुटखे से ही हुआ है इसका प्रमाण यह है कि पैदल चलने वाले रास्ते पर जो खंभे हैं, उनका लोहा ज्यादा गला है। तीन साल पहले इन खंभों के नीचे की लोहे की परत इस वजह से गलकर आधी रह गई थी और इसे बदलना पड़ा था, लेकिन गुटखा खाने वाले वीरों ने इस लोहे को भी गला डाला है।

दरअसल गुटखा बनाने में तमाम नुकसानदेह रसायनों का प्रयोग किया जाता है, यह जानकार बताते हैं। सस्ते गुटखों में सुपारी को नर्म करने के लिए भी अम्ल का प्रयोग किया जाता है। इसलिए हमें उन लोगों की आंतों की मजबूती की दाद देनी होगी, जो उस गुटखे तक को पचा जाती हैं, जिसने हावड़ा ब्रिज के अस्तित्व को भी संकट में डाल दिया है। ऐसे ही लोगों के चलते गुटखे का चलन लगातार बढ़ता जा रहा है। कई राज्यों ने उस पर प्रतिबंध भी लगाया, फिर भी कुछ नहीं हुआ और हमारी सड़कों, दीवारों, सीढ़ियों को गंदा होने से बचाना नामुमकिन हो गया।

(हिन्दुस्तान, 31 मई, 2010 से साभार)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (9)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह नवमी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglorė-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अक्टूबर 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 475 से 574 तक से प्रश्न)

(अ) रिक्त स्थान की पूर्ति आगे सारिणी (टेबल) में दिये गये अक्षरों को ढूंढ कर, उसमें से आड़ी, तिरछी, खड़ी लाइन से उजागर कीजिए, उसको ऐसे उभारिए कि उसमें आपको कुछ आकार दिखाई पड़े।

1. कुमार! ऐसी..............किस काम की।
2. अभिग्रह ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने...............से विहार किया।
3. सुवर्णबाहु ने चादर के छोर से...............को हटाकर कन्या को भयमुक्त किया।
4. पाँच तीर्थंकरों को ....कहा है।
5. देवकुमारों के साथ क्रीड़ा करते हुए..........में चन्द्र की तरह चमक रहे थे।

ब	त	हि	चू	शु	भ	श्रा	व	क	म	हा	वि	दे	ह	क्षे
ला	र्व	मा	लि	भा	ने	सं	यो	ग	प्र	न	म	स्र	का	र
गु	प	ल	का	ल	न	प्सा	न्न	री	ल	मु	न	त	म	स्त
ल	रु	य	ड्ड	र्श	लि	प	र	र्त	सू	पा	ख	भ	र	त
म	मे	ने	द	ति	सं	आ	का	श	व	द्र	द्र	प्र	रा	त्री
क	ल	व	त	ण	चा	हा	व	री	ज्ञा	रि	मु	मु	मु	श्री
हि	दे	सं	गु	पृ	रि	र	न	र	न	त	प	स	स	ख
जी	माँ	र्व	ण	थ्वी	त्र	पा	र्श्व	ना	थ	प	म्	र्भ	स्त्री	गु
र्ण	स	र्म	र	कु	मा	र	प्र	व्र	जि	त	क	र्ह	ग	ण
व	का	ह	ल	ज्ञा	त	ख	ण्ड	उ	द्या	न	मु	षा	अ	पू
स्त्र	श	श	न	न्द्र	भौं	त	प	स्वी	सो	आ	त	हू	य	जा
व्र	कु	ह	च्र	प	रो	भ	द	र	मा	श	र्त	व	र्त्त	ता
त	स	न्त	दो	छ	ल	द	या	स	व	क	ज्या	थ्या	स्र	न
धा	प्र	का	प	ख	उ	ग	शू	घ	अ	ण	व्र	न	न	सी
रि	का	ने	ष्टा	य	ड्ड	र	न्य	ल	न्त	व	प्र	य	रौ	दा
यो	श	अ	अ	न	ग	का	य	र	र्ग	ध	दु	न	द्र	उ
वै	रा	ग्य	पू	र्ण	ण	गं	भी	र	त	त्र	पु	त्य	मा	अ

6. भगवान महावीर का जन्मस्थान कुंडपुर के.........क्षत्रियकुंड ग्राम है।

7. कुमार! प्रसेनजित की.............पुत्री प्रभावती से विवाह करलो।

8. बिना जल के नदी की तरह..........धर्म निस्सार है।

9. भगवान तो दयालु है, पर मैं इस तरह.............नहीं करूँगा।

10. आर्यघोष गणधर राजगृह नगर के निवासी.............थे।

11. महात्मा बुद्ध के काका स्वयं भगवान पार्श्वनाथ के.................थे।

12. यह तो मात्र.................का ही परिवार है।

13. आपके ज्ञान..............उपदेश से तप का सही रूप निखर आया।

14. सोमिल! तेरी प्रव्रज्या ठीक नहीं है.............हैं।

15. भगवान पार्श्वनाथ के तीसरे पट्टधर आर्य......................हुए।

16. जाति-पूजा और वेष-पूजा ने..............को भुला रखा है।

17. त्रिपृष्ठ ने शेर के जबड़े अपने दोनों हाथों से पकड़ लिए और...........की तरह चीर डाला।

18. भगवान महावीर के '27' भव केवल............भव हैं।

19. समवायांग सूत्र में 83 वें समवाय में..................का उल्लेख मिलता है।

20. करकंडु एक ऐतिहासिक नरेश थे, वे तीर्थंकर..............के तीर्थ में हुए थे।

21. दस लाख..........का बल एक बलदेव में होता है।

22. मेरे.............से माता अतिशय कष्टानुभव करती हैं।

23. उसके पिता राष्ट्रकूट नामक युवक से साथ................का विवाह करेगा।

24. तीर्थंकर ....बोध प्राप्त होते हैं?

25. आर्या सुभद्रा अपनी............को शान्त करने का प्रयास करती थी।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (7) का परिणाम

जिनवाणी जुलाई, 2010 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 307 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्त विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती राजुल रमेश जी कोठारी-धुलिया (महा.)

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती दर्शिका कंवरलाल जी टाटिया-जलगांव (महा.)

तृतीय पुरस्कार-श्रीमती सुधा जी डागा-सादुर्लगंज-बीकानेर (राजस्थान)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्री बाबूलाल जी जैन-जयपुर (राजस्थान)
2. सुश्री शैली विरेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर (राजस्थान)
3. श्री सुनील जी जैन-मैसूर (कर्नाटक)
4. श्री पारसमल जी डी. बाघमार-बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राजस्थान)

5. श्रीमती अभिलाषा जी हीरावत-मुम्बई (महा.)

25 अंक प्राप्त कर्ता- Anil Kumar Jain-Kota, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Anita Satishchandji Duggar-Dhulia, Anju Jargad-Jaipur, Anu Anil Jain-Ludhiana, Basantibai Parakh-Durg, chattisgarh, Beena Mehta-Jodhpur, Buddhi Prakash Jain Bhesodamandi, mandsor (M.P), Chameli Jain-Durg, chattisgarh, Chetna Bothra-Mumbai, Chuki Devi Darda-Jodhpur, Dasarathmal chordia-Bangalore, Deepmala Singhvi-Pali, Dharmesh Punamiya jain-Pali, Divya Daga-Jaipur, Garima Jain-Kota, Garima Jain-Bangalore, Hans Raj Mohnot-Jaipur, Hem Raj Surana-Jaipur, Hemalata Jain-Beawar, Janesh Surana-Pali, Jaya Bhandari-Beawar, Jaymala Kankariya-Pali, Jyoti Gandh-ilchalkaranji, Kamla Surana-Pali, Kamladevi Lunkad-Jodhpur, Kanak Jain-Delhi, Kavita Mehta-Shimoga, Kiran Jain-Hoshiarpur, Punjab, Kumkum Jain-sawaimadhopur, KumKum Jain-Jaipur, Kuntal Devi Jain-Jaipur, Kusum Singhvi-Jodhpur, Leelabai Prakashchand Munot-Ichalkaranji, Lilabai Sancheti-Raichur, Madanlal.S.Sancheti-Hydrabad, Mamta Chajjer-Samdari (Barmer), Manila Parakh-Jaipur, Manisha Ravindra Bhandari-Ichalkaranji, Meena Vijay Bora-Mumbai, Mohanlal Jain-Ajmer, Monika Surana-Beawar, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Narendra Bamb-Mumbai, Naveen Daga-Bikaner, Neelam Chiper-Jaipur, Neelam Jain-Ajmer, Neeta Singhvi-Jodhpur, Nilima Yograjji Chopda-Ichalkaranji, Nirmala Kothari-Dudu, Jaipur, Nirmala Rajendraji Bora-ilchalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Nisha Jain-Aligarh, Tonk, Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Pooja Nitin Bora-ilchalkaranji, Prabha Jain- Jalgaon, Pramila Babulalji Pokhran-Dhulia, Pramila Kothari-Jodhpur, Pratibha Pradeepji Gandhi-Pune, Preeti Khincha-Jaipur, Preeti Loonker-Jodhpur, Prem Chand Chaplod-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Priyanka Bagmar-Merta City, Pushpa Devi Munot-Bhatinda, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Pushpa Navlakha-Jaipur, Rajkumari Lodha- Jaipur,Rajul Jain-Sawaimadhopur, Reema Jain-Ludhiana , Rekha Jain-Aligarh, Tonk, Sangita.A.Singavi-Nasik, Santosh kothari-Jaipur, Santra Jain-Sawaimadhopur, Sarika Srikant Bhandari-Ichalkaranji, Sarla Golecha-Beawar, Seema Dhing-Udaipur, Shakuntala Hansraj Bohara-ilchalkaranji, Sharda Bagmar-Merta City, Shashi Chowdhary-Jodhpur, Shashi Prabha Burad-Beawar, Shiraya Mehta-Shimoga, Shobha Nandlalji Gugale-ilchalkaranji, Suman Daga-Bhopal, Sunita Choudhary-Pipar City, Sunita Doshi-Beawar, Sunita Dulaj-Jaipur, Surekha.A.Bhandari-Nasik, Sushila Gulecha-Jodhpur, Sushila Hirawat-Jaipur, Sushila Kantilalji Runwal-Pune, Tara Jain (Sipani)-Mangalore, Trupti Pritam Bora-Ichalkaranji, Ujwala Hiran-Burhanpur (M.P), Vandana Punamiya-Pali, Vibha Bafna-Jodhpur, Vidya Singhvi-Badnawar, M.P, Vikas Bamb-Mumbai, Vimala jain-Jaipur, Vimala Surana-Bewar, Vimla Raunlal Kochar-Nasik, Vimlabai khinvasra-Dhulia.

24.5 अंक प्राप्त कर्ता- Chandan Mal Palrecha-Jodhpur, Kanta Betala-Jaipur, Kusum Pareshji Punamiya-Ichalkaranji, Lalita Ganeshchand Surana-

Solapur, Mayank Lunawat-Beawar, Pista Golecha-Jaipur, Pramila Bohra-Jaitaran, Sudha Sancheti-Ajmer, Vijaya.R.Bagmar-Dharwad.

24 अंक प्राप्त कर्त्ता-Aarti Rajendrakumarji Mutha-Amravati, (M.H), Abha Jain-Alwar, Anila Bhandari-Beawar, Ankit Jain-Jaipur, Anu Jain-Hoshiarpur, Punjab, Aruna Jain-Hoshiarpur, Punjab, Aruna katariya-Pali, Aruna.P.Baid-Amravati, (M.H), Ashok D Jain-Udaipur, Babulal Katariya-Hyderabad, Basanti Champalal Bhatewera-Dhule, Bharati sunilji surpuriya-Ichalkaranji, Chanchal Bai Devada-Bangalore, Chandabai Mohanlalji Dhoka-Jalgaon, Chandra Pokhran-Ajmer, Chhaya.M.Mutha-Satara, Chirag Jain-Gangapur City, Dharmendra Jain-Jaipur, Gunmala Jain-Chittorgarh, Heerabai Rameshchand Karnawat-Ahemadnagar, Hema Bagmar-Secundrabad, Hemant Manoharlal Nahar-Chittorgarh, Icheraj Banthiya-Nagapattnam T.N, Indira Bagmar-Hyderabad, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Johari Mal Chajjed-Jodhpur, Kamla Singhvi-Jaipur, Kamla Devi Satia-Ajmer, Kamla Lodha-Jaipur, Kanhaiyalal Jain-Bhilwara, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Kavita Bhandari-Jodhpur, Kiran Kothari-Jaipur, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Kiran Prakashchand Kothari-Bodwad (M.H), Lalchand Gogad-Bailhongal, Madhubala Pramodji bohra-Ichalkaranji, Mamta Kripalchand Jain-Sawaimadhopur, Manisha Lalchandji Gogad-Bailhongal, Manju Jain-Hindaun City, Manju Sandeep Mutha-Ichalkaranji, Manjulata Jamer-Jaipur, Maya Alijar-Secundrabad, Meena Jain-Sawaimadhopur, Milap Parasmal lunawat-Ahmedabad, Mohanlal Motilal Jogad-Pilkhod, Jalgaon, Monali Mishrilal Pipada-Ichalkaranji, Monika Deshlehra-Secundrabad, Monu Mehta-Pipar City, Nainchand Bafna-Jodhpur, Nathmal Kothari-Durg, chattisgarh, Neelu Jain-Ludhiana, Nilam Kankaria-Nagaur, Nirmala Surana-Bikaner, Prabha Gulecha-Bangalore, Prakash Chand Nahar-Kawardha(C.G), Prakashmal Jain-Chennai, Pramila mehta-Dudu, Jaipur, Pramila Prakash Mehta-Ajmer, Pramila Sajjanrajsa Mehta-Bangalore, Prasan Kothari-Jodhpur, Pravina Kothari-Jaipur, Prerit Jain-Jaipur, Priti Jain-Bharatpur, Rajasthan, Priyanka Jain-Jaipur, Priyanka Mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Lunawat-Nagaur, Pushpabai Prakashchand Bafna-Chennai, R.chandra Bothra-Chennai, Raj Prakashchandji Mehta-Pune, Rajeshwari Bohra-Banawar, Karnataka, Rajmal Jain Pichholiya-Gangapur, Bhilwara, Ramesh.D.Kumar Bohra-Banawar, Karnataka, Ratan Karnawat-Jaipur, Ritu giriya-Secundrabad, Ruchika Lunawat-Jodhpur, Sadhana Gugale-Ichalkaranji, Sangeeta Darda-Jodhpur, Sangeeta Khabiya-Mysore, Sangeetha Baid-Chennai, Sapna.R.Jain-Amravati, (M.H), Sarita Manojji Babel-Ichalkaranji, Saroj Nahar-Delhi, Seema Dineshkumarji Ostwal-Jalgaon, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shakuntala Hinger-Pali, Shilpa Gandhi-Jodhpur, Shiraomani Jain-Shajapur (M.P), Shobha Dharamchandji kothari-Dhule, Shobha Kawad-Pali, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Nilesh Muthiyan-Ichalkaranji, Snehlata Pravinji Shah-Belgaum, Subhash chand Mohanji Dhadiwal-Mumbai, Sugan Chand Chhajer-Jodhpur, Suganbai Manakchandji Sand-Jalgaon, Sunanda Lodha-Dhule, Sunita Kankariya-Ahmedabad, Sunita Mehta-

Jodhpur, Sunitha Y Singhvi-Chennai, Suraj Bohra-Jodhpur, Sureshchand Jain-Alwar, Susheela Bhandari-Chennai, Sushila Gang-Jodhpur, Sushila Sumatilal Surana-Nasik, Tara Bafna-Chennai, Upma Choudhary-Ajmer, Urmila Mehta-Jaipur, Usha Lunawat-Ajmer, Usha surana-Jaipur, Vasant Kiran Bagmar Jain-Hyderabad, Vimala Bohra-Jaipur, Vimla N Mehta-Jodhpur, Vimla surana-Jaipur.

23.5 अंक प्राप्त कर्ता- Aarti Jain-Hoshiarpur, Punjab, Kamla Surana-Jodhpur, Kanchanbai Lodha-Nasik, Madhubala Jivankumarji Ostwal-Nasik, Manju Bhandari-Beawar, Manju Kanstiya-Kolkata, Padam chand munot-Jaipur, Pushpa Mehta-Pipar City, Renumal Jain-Jodhpur,Sangita Ravindra Chajjed-Chalisgaon, Jalgaon, Shanta Chamanji Pitaliya-Amravati(M.H), Vimla G Jain-Bodwad (M.H).

23 अंक प्राप्त कर्ता- Anita Anil Jain-Dhule, Anjana Katkani-Dewaj (M.P), Asha Ostwal-Pipar City, Bimla Kumari Heerawat-Jaipur, Chandrakala Dilipraj Ranka-Bhadgaon, Jalgaon, Chandralata Mehta-Jaipur, Chot Kanwar Singhvi-Pali, Darshana Lunawat, Kamala Modi-Jodhpur, Laxmi Sancheti-Raichur, Manju Dilip Jain-Mumbai, Naintara Ratanlal Bafna-Jalgaon, Nirmala Heerawat-Jaipur, Parasmal Ratan Bohra-Balod, Chattisgarh, Prasan Gang-Mumbai, Praveen Chand Jain -Karauli, Premkanta Kothari-Jaipur, Premlata Lodha-Jaipur, Premlathabai Mutha-Raichur, Priyanka Gogad-Belgaum, Ranulal kochar-Nasik, Sanju Lata Jain-Jaipur, Sarla Shantilalji kakariya-Jalgaon, Saroj Khabiya-Mysore, Sasi kankaria-Chennai, Seema Ajinder Jain-Ludhiana, Shakuntala Kushalchand Khinvarsa-Jalgaon, Sumat Jain-Karauli, Surekha Rajeevji Choradia-Jalgaon, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Bhandari -Bangalore, Sushila Inderchand Ranka-Jalgaon, Yugal.N.Ranka-Ahmedabad.

22.5 एवं उससे कम अंक प्राप्त कर्ता -Indira Bohra-Beawar, Kanchanbai Basantilal Dangi-Jalgaon, Pushpa Golecha-Beawar, SajjanDevi Tated-Secundrabad, Shobabai Sagarmalji Kothari-Dhule, Anita Jain-Jaipur, Chandrakala Mehta-Bangalore, Hemlata Kherada-Bhilwara, Kiran Tated-Dewaj (M.P), Lad Hirawat-Mumbai, Leelabai Champalalji Khinvasara-Dhulia, Mamta Dilipji Rakhecha-Buldana (M.H), Manju Choudhary-Pipar City, Neeru Jain-Kanpur, Padma.R.Bohra-Raichur, Pramila Kankariya-Jodhpur, Pushpa Prakashchand Kankariya-Raichur, Rakesh Kankaria-Jodhpur, Sunita Navlakha-Kota, Ugama Doshi-Secundrabad, Urmila Kankariya-Jodhpur, Chandanbala Chordia-Chennai, Angur Bala Jain(Asha Surana)-Sahidabad, Jambu Kumar Jain-Aligarh, Tonk, Jyoti Bhansali-Bangalore, Pinki Jain-Jaipur, Prakashbai Bhurawat-Bhandara, Rajkumari Jain-Delhi, Rekha Daga-Indore, Shakuntala Katariya-Jalgaon, Sweety Golecha-Beawar, Kamlesh Kumar Jain-Bundi, Basanta Madanlal Sanklecha-Dhulia, Shobha Rajendrakumar Karnad-Aurangabad, Kamala Singhvi-Bhadgaon, Jalgaon, Mamta Bhandari-Nagaur.

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

ओसवंशः उद्भव और विकास- (चतुर्थ खण्ड- ओसवाल जाति की कुलदेवियाँ)- डॉ. महावीरमल लोढ़ा, ***प्रकाशक***- लोढ़ा प्रकाशन, सी-7, भागीरथ कॉलोनी, चौमू हाउस, जयपुर-302001, दूरभाष-0141-2362334 ***पृष्ठ***-6+394, ***मूल्य*** 400 रुपये मात्र, ***सन्***-2010

डॉ. महावीरमल लोढ़ा ओसवाल जाति के इतिहास पर कार्य कर रहे हैं। 'ओसवंशः उद्भव और विकास' के तीन खण्ड पूर्व में प्रकाशित हो चुके हैं। यह चतुर्थ खण्ड ओसवाल जाति की कुलदेवियों के विवेचन से सम्बद्ध है। पुस्तक में सच्चियाय माता, सुसवार्ण माता, सुंधामाता आदि 22 कुलदेवियों का परिचय दिया गया है, उनके फोटो भी प्रकाशित किए गए हैं तथा यह भी दर्शाया गया है कि किस गोत्र से सम्बद्ध कौनसी कुलदेवी है। ओसवाल कुलदेवियों पर प्रकाशित अब तक की पुस्तकों से यह अधिक विस्तृत एवं विशिष्ट है। पुस्तक 25 अध्यायों में निबद्ध है तथा परिशिष्ट में गोत्रानुसार कुलदेवियों की सारिणी दी गई है।

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह(भाग-7)- प्रकाशक- अगरचन्द भैंरोदान सेठिया, जैन पारमार्थिक संस्था, मरोठी सेठिया मौहल्ला, बीकानेर-334005 (राज.), फोन : 0151-2543516, ***पृष्ठ***-275 , ***मूल्य***-70 रुपये, ***सन्***-2010

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के विभिन्न भाग जैनागम के अनेक विषयों का संख्या के आधार पर निरूपण करते हैं। इनमें अंग, उपांग, निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य आदि का अलम्बन लिया गया है। सातवें भाग में 31 से 57 की संख्या के बोल संगृहीत हैं, जिनमें साधु की 31 उपमाएँ, ब्रह्मचर्य की 32 उपमाएँ, तैंतीस आशातनाएँ, चौंतीस अतिशय, पैंतीस सत्यवचनातिशय, आचार्य के छत्तीस गुण आदि वर्णित हैं। जैनविद्या का संक्षेप में बोध कराने की दृष्टि से ये बोल संग्रह अत्यन्त उपयोगी हैं।

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर के पाली चातुर्मास में अपूर्व उत्साह एवं धर्माराधन का ठाट

संघशिरोमणि-संघनायक पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 के चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के साथ ही ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग, साधना-आराधना की गतिविधियां प्रारम्भ हो गईं। सामायिक-स्वाध्याय भवन में प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्र-वाचन, प्रतिक्रमण सभी दैनिक कार्यक्रम सुव्यवस्थित रूप से चल रहे हैं। प्रातः प्रार्थना श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. करवाते हैं। प्रातः 9.15 बजे से प्रवचन प्रारम्भ हो जाता है। प्रवचन हेतु विशाल प्रांगण में लगभग सभी भाई-बहन सामायिक व्रत में रहते हैं। श्रद्धेय श्री यशवंतमुनि जी म.सा. आचारांग सूत्र के माध्यम से साधना के सोपानों का क्रमवार अपनी मधुर एवं सरल भाषा में विवेचन फरमाते हैं। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रेरक एवं प्रभावी प्रवचनामृत का उपस्थित जन समुदाय तन्मयता से पान करता है। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. सारगर्भित प्रवचन के माध्यम से अपनी अमृतमयी वाणी की वर्षा कर रहे हैं। पूज्य आचार्यप्रवर प्रायः रविवार एवं विशिष्ट दिवसों पर प्रवचन फरमाते हैं। तथापि व्रत-प्रत्याख्यान एवं मांगलिक हेतु प्रतिदिन (सोमवार अवकाश) प्रवचन सभा में पधारने की कृपा करते हैं। पूज्य गुरुदेव का प्रवचन अत्यन्त मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी होता है। आपके प्रेरक प्रवचनों के श्रवण हेतु सभी को आतुरता रहती है। प्रवचन सभा में संचालन आगम पीपासु वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री मांगीलाल जी चौपड़ा धर्म-प्रेरणा के साथ करते हैं। दोपहर 2 से 3 बजे तक पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य एवं सभी मुनिराजों की उपस्थिति में श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ठाणांग सूत्र का वाचन-विवेचन फरमाते हैं। उपस्थिति उल्लेखनीय रहती है। पूज्य गुरुदेव की पावन प्रभावी प्रेरणा से व्रत-नियम, शीलव्रत खंद एवं तपश्चर्याओं में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। पूज्य गुरुदेव की महती प्रेरणा से अनेक युवकों ने प्रतिक्रमण सीखना प्रारम्भ कर दिया है।

श्रद्धेय प्रमोदमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में श्रावक-श्राविकाओं की

ज्ञान-चर्चा का कार्यक्रम प्रतिदिन चल रहा है। श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. से युवा ज्ञान-ध्यान एवं प्रतिक्रमण सीख रहे हैं।

चातुर्मास के प्रथम माह की प्रमुख उपलब्धियाँ

1. दो बहनों के मासक्षपण तप सम्पन्न।
2. दस भाई-बहनों के अठाई तप सम्पन्न हो चुके हैं। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री कल्पेश जी लोढ़ा ने सपत्नीक अठाई तप किया है।
3. प्रतिदिन आयम्बिल, एकाशन, उपवास, बेले, तेले की लड़ी जारी है।
4. एक सतरंगी तथा दो पचरंगियों का आयोजन हो चुका है।
5. दयाव्रत के मासक्षपण-3, एकासन के मासक्षपण-8, एकान्तर तप-3हो गए हैं।
6. उपवास, बेला, बड़ी तपश्चर्या, दयाव्रत तथा संवरव्रत के प्रत्याख्यान प्रतिदिन हो रहे हैं।
7. आजीवन शीलव्रत खंद-20, चार माह के लिए शीलव्रत खंद-175 से अधिक हुए हैं।
8. महिलाओं के लिए आयोजित धार्मिक शिक्षण शिविर में लगभग 100 महिलाओं ने भाग लिया।
9. युवाओं के लिए सात दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर 22.8.2010 से प्रारम्भ हुआ।
10. प्रत्येक रविवार को ज्ञान परीक्षा का आयोजन हो रहा है।
11. पूज्य श्री सागरमल जी म.सा. एवं पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की पुण्य तिथियाँ त्याग-तप, धर्म-ध्यान एवं साधना-आराधना के साथ मनाई गईं। दोनों अवसरों पर पूज्य गुरुदेव ने इन महापुरुषों के जीवन-परिचय के साथ पावन प्रवचनामृत का पान कराया।
12. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की तीन दिवसीय कार्यशाला 13, 14 एवं 15 अगस्त को सानन्द सम्पन्न हुई। परिषद् के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा एवं कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेच्छा के कुशल नेतृत्व में युवारत्नों ने गुरुदेवों के दर्शन-वन्दन-श्रवण के साथ-साथ कार्यशाला में विभिन्न विषयों पर उपयोगी चर्चा की।
13. शासन सेवा समिति के सदस्यगण, संघ एवं सहयोगी संस्थाओं के

पदाधिकारीगण यथा न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, वरिष्ठतम श्रावक श्री नथमल जी हीरावत, प्रखर स्वाध्यायी श्री पी.एस. सुराणा, पूर्व संघाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, पूर्व संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना, कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना आदि तथा मुम्बई, चेन्नई, बैंगलोर, बंगारपेट, जलगाँव, जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर, ब्यावर, बालोतरा, गोटन आदि अनेक स्थानों के श्रावक-श्राविकाओं ने व्यक्तिगत/सामूहिक रूप से पधारकर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया। अनेक स्थानों से भाई-बहिनों का प्रायः प्रतिदिन पधारना हो रहा है।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.) फोन-02932-250021

आवास व्यवस्था- (1) सुराणा सराय, पुराना बस स्टेण्ड के पास, पाली, फोन-02932-250944 (2) श्री जैन रत्न हितैषी छात्रावास, आनन्द नगर, मण्डिया रोड, पाली, फोन नं. 02932-230452 (विशेष वाहनों के लिए)

सम्पर्क सूत्र- (1) श्रीमान ताराचन्दजी सिंघवी, 7-गाँधी कटला, पाली-306401, फोन-02932-222005 (2) श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, बी-60, केशर कुंज, वीर दुर्गादास नगर, पाली- 306401, फोन-02932-220603/94141-22304

उपाध्यायप्रवर के गोटन चातुर्मास में तपस्या का ठाट

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 के गोटन चातुर्मास में धर्म-ध्यान एवं तपस्या का ठाट लगा हुआ है। एकासन, आयम्बिल, उपवास, बेले, तेले के साथ 25 अठाई तप तथा 5 ग्यारह की तपस्या पूर्ण हो चुकी है। श्री पवन जी पुत्र श्री रतनलाल जी कोठारी-गोटन ने मासखमण तप पूर्ण किया है तथा श्रीमती मधु जी धर्मपत्नी श्री राजेश जी लुणावत-आचीणा ने 21 की तपस्या की है। मुकेश जी ओस्तवाल तपस्या में आगे बढ़ रहे हैं। दया-उपवास की पचरंगी हो चुकी है। चार-पांच अठाई तप चल रहे हैं। श्रीमती प्रकाशदेवी जी बाफना धर्मपत्नी श्री चैनरूपचन्द जी बाफना ने 1 सितम्बर को 48 दिवसीय तप के

प्रत्याख्यान किए हैं। तपस्या में अभी आगे बढ़ने के भाव हैं। आचार्यप्रवर के चेन्नई चातुर्मास में भी उन्होंने 121 की तपस्या की थी। प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञान-चर्चा, चौपाई, प्रतिक्रमण आदि अनुष्ठानों में उत्साहपूर्वक श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले रहे हैं।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी, गोटन 342902 (जिला-नागौर) राज.

सम्पर्क सूत्र- (1) श्री भैरूलालजी ओस्तवाल, रसाली स्टोर, पो.-गोटन-342903 (जिला-नागौर) राज., फोन-01591-230135/94141-18701/94144-84911 (2) श्री चैनरूपचन्दजी बाफना, स्टेशन रोड़, पो.-गोटन-342902 (जिला-नागौर) राज., फोन-94131-69889

महासती मण्डलों की सन्निधि में धर्म प्रभावना

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा 6 घोड़ों का चौक स्थानक में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। महासती मण्डल के विराजने से ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप का ठाट लगा हुआ है। एकासन, उपवास, आयंबिल, दया, संवर, पौषध आदि की आराधना निरन्तर चल रही है। अब तक श्रावक-श्राविकाओं में कुल पांच पचरंगी हो गई है। दया के मासखमण-7, नीवीं का मासखमण-1, एकासन के मासखमण-13, अठाई-3, नौ-एक, तेले-35 हो गए हैं। नित्यप्रति कई संवर हो रहे हैं। प्रतिदिन एक घंटा नवकार महामंत्र का जाप चल रहा है। सामूहिक नीवीं एवं एकासन का कार्यक्रम भी चल रहा है। प्रश्नोत्तरी ज्ञान-चर्चा एवं परीक्षाओं का नियमित आयोजन हो रहा है। प्रतिदिन प्रातः प्रवचन के पश्चात् उत्तराध्ययन सूत्र के प्रथम अध्ययन का विवेचन शासनप्रभाविका जी कर रही हैं, जिसका लगभग 50 लोग लाभ ले रहे हैं। कतिपय श्रावक गाथाएँ कण्ठस्थ कर रहे हैं, जिनमें स्थानीय संघाध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना अग्रणी हैं। प्रत्येक रविवार को प्रातः 7 बजे युवकों की कक्षा होती है जिसमें लगभग 125 युवक सामूहिक सामायिक में उपस्थित रहते हैं। श्री मनीषजी लोढ़ा पुत्र श्री माधोमलजी लोढ़ा के 15 की तपस्या के प्रत्याख्यान हुए हैं। सोनू जी मेहता ने 21 के प्रत्याख्यान किए हैं। मासखमण के भाव हैं।

गुलाबपुरा- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 गुलाबपुरा में धर्म-ध्यान की महती प्रभावना कर रहे हैं। एकासन, आयंबिल,

उपवास के साथ-साथ संवर-सामायिक, पौषध-प्रतिक्रमण की आराधना चल रही है। तेले की लड़ी के क्रम के साथ पचरंगी आदि का कार्यक्रम भी चल रहा है। अब तक दो अठाई एवं 2 ग्यारह उपवास की तपस्या हो चुकी है। महासतीवृन्द के सान्निध्य में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तपस्या निरन्तर चल रही है।

चाँगोटोला- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 मध्यप्रदेश के चाँगोटोला में सुखशांति पूर्वक विराजमान हैं। महासतीवृन्द के विराजने से धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। उपवास, एकासन, दया, संवर, पौषध व्रत की नियमित आराधना चल रही है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही तेले की लड़ी, एकान्तर उपवास, दो अट्ठाई एवं एक नौ की तपस्या हो चुकी है।

सरस्वती नगर- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 जोधपुर के उपनगर सरस्वती नगर में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। महासतीवृन्द के विराजने से धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। अभी तक 2 पचरंगी हो गई है। उपवास की लड़ी निरन्तर चल रही है। सात श्राविकाओं के एकान्तर की तपस्या चल रही है। बड़ी तपस्या में तेरह, ग्यारह, नौ-तीन और चार अठाई हो चुकी हैं। तेले, चोले, पचोले, छह एवं सात की तपस्याएँ भी हुई हैं। पाँच-छह एकाशन प्रतिदिन हो रहे हैं। प्रत्येक रविवार को परीक्षाओं का आयोजन होता है। महासतीजी के मुखारविन्द से श्री सम्पतराजजी पालरेचा ने सजोड़े शीलव्रत ग्रहण किया है। 15 अगस्त से 22 अगस्त, 2010 तक बहुओं का शिविर आयोजित हुआ।

गांधीनगर- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 के विराजने से यहाँ धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप की अच्छी प्रभावना हो रही है। उपवास, एकासन, दया, संवर, पौषध व्रत की नियमित आराधना चल रही है। श्राविकारत्न श्रीमती शान्ताबाई कोठारी मासखमण तप से भी आगे बढ़ रही है। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. एवं श्री सागरमल जी म.सा के पुण्यदिवस पर उपवास एवं एकासन के तेले हुए। श्री गुणवन्त भाई शाह ने अठाई तप किया है। प्रत्येक मंगलवार को श्राविका मंडल एवं प्रत्येक रविवार को बालकों के धार्मिक-शिक्षण का कार्यक्रम चलता है। नियमित रूप से सुखविपाक सूत्र एवं उत्तराध्ययन सूत्र पर व्याख्यान हो रहे हैं। मध्याह्न में जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति का वाचन चल रहा है। पहले श्री शान्ताकंवर जी म.सा. व्याख्यान फरमाते हैं, फिर श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. गुजराती में व्याख्यान फरमाते हैं। श्री गम्भीरसिंह जी भावसिंह जी पढेरिया, सेवानिवृत्त एस.पी. नित्य प्रवचन श्रवण करते हैं। पाँचों तिथियों पर आनुपूर्वी का एक जाप चलता है। सम्पूर्ण चातुर्मास का साधर्मि वात्सल्य लाभ श्रावकरत्न श्री

किशोरमल जी छाजेड़ परिवार ले रहा है।

सवाईमाधोपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 पोरवाल क्षेत्र के सवाईमाधोपुर शहर में त्याग-तप के साथ ज्ञान-ध्यान की महती प्रभावना कर रहे हैं। एकासन, उपवास, बेले, तेले , पचोले के साथ 9 अठाई, 9 उपवास के दो पचक्खाण हुए हैं। सामायिक-स्वाध्याय का क्रम भी निरन्तर चल रहा है।

सोजत रोड़- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 6 जैन स्थानक सोजत रोड़ में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। महासतीवृन्द के विराजने से धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। प्रार्थना, प्रवचन, चौपाई एवं प्रतिक्रमण आदि अनुष्ठानों में श्रावक-श्राविकाएं उत्साह से भाग ले रहे हैं। एकासन, आयंबिल, उपवास एवं अठाई की तपस्या हुई है। प्रत्येक रविवार को बच्चों का शिविर चल रहा है। 18 अगस्त 2010 को सामूहिक एकासन का आयोजन रखा गया।

नागौर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 5 सामायिक-स्वाध्याय भवन, नागौर में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। एकासन, आयंबिल एवं तेले की लड़ी चल रही है। इसमें सभी बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। दिनांक 25.7.2010 को 50 एकासन व 15 दया हुई। 22 अगस्त को नवदीक्षिता महासती श्री तितिक्षा श्री जी म.सा.के मासखमण की तपस्या का पूर सम्पन्न हुआ है। इस अवसर पर उपस्थित दर्शनार्थियों ने प्रत्याख्यान कर तप का अनुमोदन किया। 8, 9 एवं 10 अगस्त को एकासन, आयंबिल, उपवास, दया की लड़ी में लगभग 165 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। दिनांक 1.8.2010 से सप्त दिवसीय महिला धार्मिक शिविर में 45 महिलाओं ने भाग लिया। श्रीमती रेखाजी सुराणा के 15 की तपस्या सम्पन्न हुई।

मेड़तासिटी- सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा 4 स्वाध्याय भवन मेड़तासिटी में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। श्राविकाओं में एक पचरंगी का कार्यक्रम हुआ। एकासन, आयंबिल, उपवास की लड़ी चल रही है। तेले 7 हुए, एक 6 की तपस्या हुई। प्रत्येक रविवार को 2 से 3 बजे तक महिला शिविर एवं 3 से 4 बजे तक बालिका मण्डल का शिविर चल रहा है। प्रार्थना के पश्चात् कक्षा में सामायिक-प्रतिक्रमण का अभ्यास चल रहा है। प्रतिदिन 2 से 3 नवकार महामंत्र का जाप चल रहा है।

मैसूर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 6 जैन स्थानक महावीरनगर मैसूर में सुख शाति पूर्वक विराजमान हैं। महासती मण्डल के

विराजने से संघ में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप का ठाट लगा हुआ है। पचरंगी के साथ सामायिक, आयंबिल एवं तेले की लड़ी निरन्तर चल रही है। अठाई व 9 की तपस्याएं भी उत्साह से चल रही हैं। श्रीमती सुनीताजी धर्मपत्नी श्री श्रेणिककुमारजी धोका के मासखमण तप पूर्ण हो गया है। श्रीमती कल्पनाजी धर्मपत्नी श्री राजेशकुमारजी सेठिया ने 25 की तपस्या की। दिनांक 7.8.2010 से 15.8.2010 तक ज्ञान उपासना शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 125 श्राविकाओं एवं बालिकाओं ने भाग लिया। प्रतिदिन प्रातः 8 से 9 'एक कदम धर्म की ओर' नामक विशेष कक्षा में युवक -युवतियां उत्साह से भाग ले रहे हैं। महासती भाग्यप्रभा जी सरल भाषा में धर्म का मर्म समझाते हैं। प्रवचन में भी लगभग 500 की उपस्थिति रहती है ।चातुर्मास प्रारम्भ से अब तक 3 आजीवन शीलव्रती बने हैं । 3 मासखमण हो गए हैं ।

के.जी.एफ.- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5
जैन स्थानक के.जी.एफ. में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। महासतीवृन्द के विराजने से धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। नियमित आयंबिल की लड़ी चल रही है। अभी 9 की 3 एवं 11 की 1 तपस्या हुई है साथ ही श्रीमती सुभद्राजी धर्मपत्नी श्री मदनलालजी बांठिया के 21 की तपस्या चल रही है। प्रत्येक रविवार को परीक्षा चल रही है। प्रार्थना के पश्चात् 7 से 8 विशेष कक्षा लगती है। 26 से 30 अगस्त तक ज्ञान उपासना-शिविर आयोजित हुआ ।

नीमच- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5
नीमच में चौधरी मौहल्ला स्थित जैन स्थानक में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। महासतीजी के विराजने से धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप का ठाट लगा हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही एकासन, आयंबिल एंव तेले की लड़ी चल रही है। अभी तक 2 पचरंगी एवं दिन भर का नवकार महामंत्र का जाप चल रहा है। नवदीक्षिता महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. के आठ की तपस्या सानन्द सम्पन्न हुई है। अनेक भाई-बहिन सामायिक-प्रतिक्रमण सीख रहे हैं। दोपहर में सामायिक, प्रतिक्रमण एवं थोकड़े सिखाने का क्रम चल रहा है ।

पीपाड़ शहर- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4
शरदचन्द्रिका मुणोत भवन, पीपाड़शहर में सुखशांतिपूर्वक विराजमान हैं। महासती मण्डल के विराजने से धर्म-ध्यान, त्याग-तप का अपूर्व ठाट लगा हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ से अब तक एक पचरंगी हो गई है। 7-8 सदस्यों के एकासन के मासखमण चल रहे हैं। 20 श्रावक-श्राविकओं के दो महीने का एकान्तर तप चल रहा है। एक 11 की एवं एक नौ की तपस्या हो गई है। सुश्राविका श्रीमती विनीताजी

धर्मपत्नी श्री पपैयालालजी मूथा के 25 की तपस्या चल रही है।

भोपालगढ़- व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 यहाँ सामायिक-स्वाध्याय भवन में सुख शांति पूर्वक विराजमान है। महासतीवृन्द के विराजने से धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ। अब तक दया, उपवास की एक पचरंगी हुई है। नौ श्रावक-श्राविकाओं के एकान्तर की तपस्या चल रही है। प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण एवं ज्ञान-चर्चा का कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहा है।

अमरावती- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 अमरावती में सकारण सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। महासतीवृन्द के विराजने से धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप की महती प्रभावना हो रही है। दोपहर में वाचनी का कार्यक्रम निरन्तर चल रहा है। जिसमें भाई-बहिन उत्साह से लाभ ले रहे हैं। कई भाई-बहिन सामायिक, प्रतिक्रमण सीख रहे हैं।

संघ एवं मण्डल की कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी बैठक रविवार 29 अगस्त 2010 को श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत अतिथि गृह, पाली (राज.) में संघ कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल की अध्यक्षता में हुई, जिसमें सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी सहित संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

संघ कार्यकारिणी बैठक में प्रायः सभी सदस्यों को अलग-अलग समितियों में कार्य दायित्व प्रदान कर संघ-सेवा में सदस्यों को जोड़ने का प्रयास किया गया। अध्यात्म चेतना वर्ष में सम्पन्न अब तक के कार्यों की समीक्षा की गई एवं शताब्दी वर्ष के अवशेष समय में प्रमुख योजनाओं की जानकारी तो सदन में रखी ही गई, कार्य-योजना की क्रियान्विति में शीर्ष पदाधिकारियों से विचार-विमर्श कर उचित निर्णय करने के लक्ष्य की सूचना भी दी गई। बैठक में वित्तीय वर्ष समाप्ति 31.03.2010 तक के वास्तविक आय-व्यय एवं प्रस्तावित बजट का अनुमोदन किया गया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की प्रवृत्तियों-गतिविधियों की समीक्षा के अनन्तर जिनवाणी के घाटा-पूर्ति में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् मुम्बई ने घाटा-पूर्ति का जिम्मा अपने पर लिया।

संघ व मण्डल के सदस्य महानुभावों ने संघहित में अनेक सुझाव भी रखे।

संघ की वार्षिक साधारण सभा एवं सम्मान समारोह 8 से 10 अक्टूबर तक

संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा एवं सम्मान-समरोह कार्यक्रम 8,9 एवं 10 अक्टूबर को सम्पन्न होंगे। आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, शुक्रवार, 8 अक्टूबर, 2010 को मध्याह्न 1 बजे अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन आयोजित होगा। अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों की चिन्तन बैठक सायं 8 बजे से रखी गई है।

संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा आश्विन शुक्ला द्वितीया, शनिवार, 9 अक्टूबर, 2010 को मध्याह्न 1 बजे रखी गई है। जिसमें अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सदस्य भी सम्मिलित होंगे। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन सायं 8 बजे से होगा।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा आश्विन शुक्ला तृतीया, रविवार, 10 अक्टूबर, 2010 को सम्मान-समारोह पाली में मध्याह्न 1 बजे आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान, युवा प्रतिभा शोध साधना सेवा सम्मान, विशिष्ट स्वाध्यायी, महिला स्वाध्यायी एवं युवा स्वाध्यायी सम्मान, गुणी अभिनन्दन के अन्तर्गत तप-साधकों, समाज-सेवियों एवं विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान होगा।

आचार्य हस्ती स्वाध्याय प्रतियोगिता के उत्तर भेजने की समय-सीमा बढ़ाई

'नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ पर आधारित आचार्य श्री हस्ती स्वाध्याय खुली किताब प्रतियोगिता परीक्षा की उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 22 सितम्बर 2010 से बढ़ाकर 30 सितम्बर 2010 कर दी गई है। प्रतियोगियों से निवेदन है कि निर्धारित समय-सीमा में अपनी उत्तरपुस्तिकाएँ

भिजवाने का श्रम करें। उत्तरपुस्तिका भिजवाने हेतु पता-**संयोजक, आचार्य हस्ती स्वाध्याय प्रतियोगिता, सामायिक-स्वाध्याय भवन,** घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- सुशीला बोहरा-संयोजक, 9414133879, धर्मचन्द जैन- सह संयोजक, 9351589694, कार्यालय-0291-2630490।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी 'अध्यात्म चेतना वर्ष'

आचार्य हस्ती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भाषण प्रतियोगिता

इस युग में आचार्य हस्ती एक महान् अध्यात्मयोगी, युगप्रभावक आचार्य हुए हैं। उनकी साधना का तेज सर्वविदित है। ध्यान, मौन, जप, आदि के साथ आत्म-निर्मलता हेतु वे सदैव सन्नद्ध रहे। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व आज भी सबको प्रेरणा प्रदान करता है। कई श्रद्धालुभक्त आज भी उनका स्मरण कर स्वयं को उपकृत अनुभव करते हैं। सामायिक और स्वाध्याय का संदेश आचार्य हस्ती का पर्याय बन गया। आगम, इतिहास और प्रवचनों के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा की छाप अमिट है।

प्रज्ञापुरुष, वचन सिद्धि के धनी, आचारनिष्ठ, तेजस्वी साधक सन्त आचार्य हस्ती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई के सौजन्य से भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। देश-विदेश में जहाँ भी संघ एवं संघ से सम्बद्ध संगठनों की शाखाएँ एवं उपशाखाएँ हैं वहाँ इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रस्तावित है। प्रतियोगिता में अधिक से अधिक बालक-बालिका, किशोर-किशोरियाँ, युवक-युवतियाँ और श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले सकते हैं।

भाषण प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतियोगी को 5 से 7 मिनिट का समय दिया जाएगा। विषय-वस्तु, भाषा शैली एवं प्रभावी प्रस्तुति के आधार पर प्रथम तीन प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता समिति द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ निर्णायकों द्वारा प्रदत्त निर्णय सर्वमान्य होगा। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहने वाले को क्रमशः 1100 रु., 800 रु. एवं 500 रु. पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए जाएँगे।

कम से कम 10 प्रतियोगी होने पर ही किसी शाखा पर प्रतियोगिता

आयोजित की जाएगी। बड़ी शाखाओं में न्यूनतम 15 प्रतिभागी होने चाहिए। सभी स्थानों पर विजेता रहे प्रतिभागी की एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समापक प्रतियोगिता आयोजित कराई जाएगी। समापक प्रतियोगिता में विजेता घोषित होने वाले को आकर्षक पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

जो शाखाएँ या उपशाखाएँ इस प्रतियोगिता का आयोजन कराना चाहती हैं उनसे निवेदन है कि वे प्रतियोगिता का आयोजन 31 अक्टूबर तक अवश्य करा लें। आयोजन से पूर्व निम्नांकित पते पर 5 अक्टूबर तक सम्पर्क स्थापित करें तथा प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी स्थानीय अध्यक्ष, मंत्री, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित करें।

विरदराज सुराणा, मंत्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

दूरभाष : 0141-2575997, फैक्स : 0141-2570753, मो. 9314012415

ईमेल : **jinvani@yahoo.co.in, sgpmandal@yahoo.in**

पाली में युवारत्नों की त्रि-दिवसीय कार्यशाला 'युवारत्न प्रगति सोपान' सम्पन्न

आध्यात्मिक चेतना वर्ष के अन्तर्गत अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्यक्रमों, आयोजनों व दिवस विशेषों को अधिक प्रभावी बनाने तथा पदाधिकारी युवारत्नों, सदस्यों के आचरण व ज्ञान पक्ष को सुदृढ़ करने की दिशा में युवारत्नों की त्रि-दिवसीय कार्यशाला **'युवारत्न प्रगति सोपान'** का आयोजन पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं मुनिमण्डल के सान्निध्य में पाली (राजस्थान) में 13,14 व 15 अगस्त, 2010 को सम्पन्न हुआ। युवारत्न प्रगति सोपान कार्यशाला का उद्घाटन संघाध्यक्ष महोदय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने किया।

कार्यशाला में प्रतिदिन सामूहिक रूप से प्रातःकाल प्रार्थना एवं गुरु भगवन्तों के सेवा-सान्निध्य तथा व्याख्यान-श्रवण के पश्चात् पहले दिन चतुर्विध संघ-सेवा, समाज सेवा एवं धार्मिक अनुष्ठान, सामायिक-स्वाध्याय व आओ स्वाध्याय करें कार्यक्रम पर विचार किया गया। दूसरे दिन धार्मिक शिक्षण व शिविर कार्यक्रम स्वधर्मि-वात्सल्य, छात्रवृत्ति योजना व प्रचार-प्रसार कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। अन्तिम दिन व्यक्तित्व विकास-कार्यक्रम आकर्षण का

केन्द्र रहा। आमसभा में पुरस्कार एवं सम्मान व संचार माध्यम आदि पर विचार विमर्श हुआ। कार्यशाला में केन्द्रीय कार्यकारिणी के लगभग सभी पदाधिकारी एवं सदस्यजन तो उपस्थित रहे ही, विभिन्न शाखा क्षेत्रों के शाखा पदाधिकारी एवं सदस्य युवारत्नों की उपस्थिति भी रही। कार्यक्रमों की कार्यशैली एवं प्राप्त सुझावों आदि पर तथ्यपरक व्यापक चिन्तन व विचार विमर्श हुआ।

कार्यशाला में संघाध्यक्ष महोदय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर, श्री कैलाश जी हीरावत-पूर्व संघाध्यक्ष, जयपुर तथा संयोजक, शासन सेवा समिति श्री रतनलाल जी बाफना-जलगांव एवं अतिरिक्त महामंत्री श्री नौरतनमल जी मेहता-जोधपुर ने अपने उद्बोधन में युवारत्नों को प्रभावी व अनुभवी मार्गदर्शन प्रदान कर नई जागृति का संचार किया। कार्यशाला की समाप्ति पश्चात् केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक भी सम्पन्न हुई, जिसमें व्यापक विचार-विमर्श व मन्थन पर उपजे निर्णय को एकमत से मूर्तरूप देने हेतु महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। पूज्य आचार्यप्रवर की प्रेरणा से परिषद् की सभी शाखाओं में 12 व्रत धारण करने सम्बन्धी शिविर लगाने एवं इसके माध्यम से अधिकाधिक संख्या में युवारत्नों को 12 व्रत अंगीकार करने हेतु प्रेरणा करने का महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाया।

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 9 जनवरी को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा आगामी परीक्षा 9 जनवरी 2011, रविवार को दोपहर 12.30 से 03.30 बजे तक कक्षा 1 से 8 तक के लिए आयोजित की जायेगी। विगत दस वर्षों से चल रहे चौदह कक्षाओं के पाठ्यक्रम का सरलीकरण करके बारह कक्षाओं में विभाजित किया गया है। संशोधित पाठ्यपुस्तकें शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रकाशित की जा रही हैं, जिसे परीक्षा के परिणाम के साथ भिजवाने की व्यवस्था की गई है। संशोधित पाठ्यक्रम शिक्षण बोर्ड कार्यालय अथवा निकट के केन्द्राधीक्षकों से प्राप्त किया जा सकता है।

सवाईमाधोपुर के युवकों द्वारा एक वर्ष तक रात्रि भोजन त्याग के नियम

श्री जैन रत्न युवक परिषद् सवाईमाधोपुर के युवारत्न बन्धु दिनाँक 31 अगस्त, 2010 को परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., प्रभृति मुनिपुंगवों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण की भावना से पाली

उपस्थित हुए। पैंतीस युवारत्न बन्धुओं ने पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से एक वर्ष तक रात्रि भोजन नहीं करने के प्रत्याख्यान अंगीकार किए।

-महासचिव, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

मैसूर एवं के.जी.एफ में ज्ञान-उपासना शिविर

मैसूर- मधुर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री भाग्य प्रभा जी म.सा आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य में 7 से 15 अगस्त तक ज्ञान उपासना शिविर का आयोजन किया। इसमें आगम, उच्चारण, शुद्धि, तत्व-आराधना का भावरूप गहराई से समझाया गया। प्रतिदिन प्रतियोगिताओं के द्वारा शिविरार्थियों की प्रतिभा को विकसित करने का प्रयास किया गया। शिविर के अन्त दिवस में 'त्रिशला नन्दन की दुकान' के माध्यम में लगभग 1008 विशिष्ट प्रत्याख्यान हुए। ज्ञान उपासना शिविरार्थियों में से 'ज्ञान उपासिका' का चयन किया गया। सभी बालिकाओं ने अन्तर्जातीय विवाह न करने तथा माता-पिता से भी कभी कुछ न छुपाने के प्रत्याख्यान किए तथा श्राविकाओं ने जिनशासन की सेवा में यथावसर सेवा देने, कभी भी परिवार में भेद न पड़ने देने, घर की निन्दा बाहर न करने का भी संकल्प लिया। इसमें दिनेश जी भंसाली, राकेश जी जैन, जिनेन्द्र जी जैन, विनोद जी जैन, सुनील जी जैन, श्रीमती सीमा जी भंसाली ने स्वाध्याय सेवा दी।

22 अगस्त को युवकों की 'कदम-कदम बढ़ाएँ जा' एक दिवसीय कार्यशाला हुई, जिसमें लगभग 200 युवकों ने भाग लिया। इसके प्रमुख विषय मेरा जिनशासन महान, सकारात्म विचार शैली, "MONEY AND MANAVA'- How is the master (सामूहिक चर्चा) To Transfrom From "I TO WE" पर प्रकाश डाला गया। सभी ने अपनी शक्ति का सदुपयोग जिनशासन में किसी न किसी रूप में करने का संकल्प किया।

के.जी.एफ.- तपस्विनी महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 26 से 30 अगस्त 2010 तक 'ज्ञान उपासना शिविर.2010' का आयोजन हुआ, जिसमें होसपेट, के.जी.एफ., बैंगलोर, कून्नूर आदि स्थानों से लगभग 60 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में आगम, उच्चारणशुद्धि 9 तत्त्व का संक्षिप्त स्वरूप, पुण्यवानी के 10 बोल, 25 बोल, भव-भ्रमण आदि के साथ-साथ सामायिक, संवर, अनर्थदण्ड, धोवन पानी, जमीकंद, जूठन का त्याग, अंजना सती की कहानी आदि अनेक ज्ञानवर्धक विषयों को समझाया गया। प्रतिदिन

प्रतियोगिताओं के माध्यम से शिविरार्थियों की प्रतिभा को विकसित किया गया। शिविर में सभी महासती मंडल का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। शिविर के दौरान शिविरार्थियों ने झूठन छोड़ने का त्याग, जमीकंद की मर्यादा, अन्तर्जातीय विवाह का त्याग, साधु-संतों की सेवा करना इत्यादि प्रत्याख्यान किए एवं शिविर के अन्तिम दिन कई शिविरार्थियों ने जीवन में लगे पापों की आलोचना कर आत्मशुद्धि की। शिविर में ज्ञान उपासिका-2010 का चयन किया गया। शिविर में भूसे से अपने बर्तन साफ करना, भोजन की परोसकारी करना, संवर आदि की व्यवस्था करना आदि कार्य शिविरार्थियों से स्वयं करवाकर स्वावलंबी जीवन जीने की प्रेरणा दी गई। शिविर उपवास, एकासन, संवर, दया, स्नान त्याग आदि के साथ आयोजित हुआ। शिविर में दिनेश जी भंसाली, विनोद जी जैन, सुनिल जी जैन, श्रीमती सीमा जी भंसाली, राकेश जी जैन ने अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की।

पंजाब, हरियाणा एवं हिमाचल में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम सम्पन्न

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में पंजाब, हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश के जालन्धर, बंगा, नवांशहर, लुधियाना, अहमदगढ़, रायकोट, जगरावा, नकोदर, शाहकोट, सुलतानपुर, पट्टी, जंडियालागुरू, अमृतसर, टांडा-अहियापुर, मुकेरियां, गडदीवाला, चण्डीगढ़, रोपड़, नादौन, होशियारपुर आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम 17 अगस्त से 23 अगस्त 2010 तक आयोजित किया गया। प्रचार कार्यक्रम में शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, क्षेत्रीय संयोजक श्रीमती किरण जी जैन-होशियारपुर, प्रचारक श्री महावीरप्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी ने पूरे समय उपस्थित रहकर अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। स्वाध्याय संघ; जोधपुर के संयोजक श्री नवरतन जी डागा-जोधपुर ने 20 से 23 अगस्त तथा शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर ने 17 से 21 अगस्त तक अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान कीं। प्रचार कार्यक्रम के दौरान बंगा, नवांशहर, अहमदगढ़, रायकोट, जगरावा, सुल्तानपुर, पट्टी, जंडियालागुरु, अमृतसर, अहियापुर, चण्डीगढ़, रोपड़, गडदीवाला में शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्र प्रारम्भ करने का विश्वास प्राप्त हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में विराजित सन्त-सतियों ने भी अपने-अपने क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं को शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेने हेतु

प्रेरित कर उदारता का परिचय दिया।

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार दीपचन्द जी गार्डी को

अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर का सर्वाधिक प्रतिष्ठित 'आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार' प्रख्यात समाजसेवी, उदारमना, दानवीर श्री दीपचन्द जी गार्डी, मुम्बई को प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। संघ द्वारा यह पुरस्कार उस व्यक्ति को प्रदान किया जाता है जिसके जीवन में समता के भाव आत्मसात् हों। श्री दीपचन्द जी गार्डी का जीवन जीवदया, करुणा एवं समता से ओत-प्रोत है। 95 वर्षीय गार्डीजी आज भी सक्रिय हैं।

राजस्थान में प्लास्टिक कैरी बैग पर प्रतिबन्ध

जयपुर- राजस्थान सरकार ने सम्पूर्ण प्रदेश में प्लास्टिक कैरी बैग (थैली) पर 1 अगस्त 2010 से पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा दिया है। प्लास्टिक की थैलियां जहाँ नालियों को अवरूद्ध करती हैं, वहाँ स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती हैं एवं गायों की मौत का कारण बन रही हैं। इनसे पर्यावरण प्रदूषित होता है। सरकार ने इस प्रतिबंध को सख्ती से लागू करने के लिए आर्थिक दण्ड की व्यवस्था की है। इस प्रतिबंध का प्रभाव बाजार में दिखाई दे रहा है। दूध या अन्य खाद्य सामग्री के पैकिंग पर अभी रोक नहीं है कैरी बैग पर रोक है।

कतिपय प्रमुख चातुर्मास

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	**– पाली–मारवाड़ (राज.)**
उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	**– गोटन (नागौर) राज.**
आचार्य श्री शिवमुनि जी म.सा.	**– अरिहन्त नगर, दिल्ली**
गच्छाधिपति श्री प्रकाशचन्द्र जी म.सा.	**– रतलाम (म.प्र.)**
आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.	**– राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)**
आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.	**– हॉसपेट (कर्नाटक)**
आचार्य श्री ज्ञानचन्द्र जी म.सा.	**– मुम्बई**
आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा.	**– गोविन्दगढ़ (राज.)**
महास्थविर श्री प्रकाशचन्द्र जी म.सा.	**– पीतमपुरा, दिल्ली**
आचार्य महाश्रमण जी	**– सरदारशहर (राज.)**

संक्षिप्त समाचार

धन्धा सीखने वालों के लिए अवसर

मुम्बई- 'सीखने की चाह, बनायेगी राह' उक्ति को साकार करने के लिए पदमचन्द चन्द्रावल देवी हीरावत चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा एक नवीन योजना के अन्तर्गत न्यूनतम आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ जैन परिवार को अर्थोपार्जन में समर्थ बनाने हेतु सहयोग प्रदान करने का कार्य प्रारम्भ किया गया है। कम्प्यूटर, सिलाई, टेक्निकल प्रशिक्षण आदि किसी भी कार्य को सीखने वाले इच्छुक व्यक्ति नाम, पता, फोन नम्बर आदि की प्रामाणिक सूचना के साथ आवेदन करें। अपने ग्राम/शहर में कार्य सिखाने वाली एक से तीन संस्थाओं के नाम-पता, फोन नम्बर सहित लिखकर निम्नांकित पते पर भेजें-**पदमचन्द चन्द्रावल**, देवी हीरावत चेरिटेबल ट्रस्ट, फ्लेट नं.1, बिल्डिंग नं.2, माटूंगा नवजीवन सोसाइटी, एस.बी. रोड़, माटूंगा (पश्चिम), मुम्बई-400016, फोन : 022-24380713, फैक्स- 022-24370713, Email- shirawat@hotmail.com

बैंगलोर -श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, बैंगलोर के तत्त्वावधान में 'रक्तदान शिविर' का आयोजन हुआ, जिसमें श्रावक संघ एवं युवक संघ का भी सहयोग रहा। शिविर में 45 सदस्यों ने रक्तदान किया। भ. महावीर जैन अस्पताल में फल एवं बिस्किट के पैकेट बनाकर जरूरतमंद रोगियों व कर्मचारियों में बांटे गये। 75 विद्यार्थियों के स्कूल फीस की भी व्यवस्था मण्डल द्वारा की गयी।

इन्दौर -भारतीय जैन संघटना, इन्दौर द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर समग्र जैन समाज हेतु 2 अक्टूबर 2010 को रवीन्द्र नाट्य गृह में उच्च शिक्षित युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु प्रविष्टि फार्म इन्दौर कार्यालय भारतीय जैन संघटना, रतन 16/2, साउथ तुकोगंज, ढक्कन वाला कुएं के पास, इन्दौर से या स्थानीय मंदिर, स्थानक इत्यादि से भी प्राप्त किये जा सकते हैं।

इन्दौर -आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के सान्निध्य में दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका के नये संस्करण का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। प्रस्तुत संस्करण में 225 तीर्थों की अद्यतन जानकारी देने के साथ ही देश के 44 प्रमुख नगरों एवं पर्यटन स्थलों में स्थित धर्मशालाओं एवं अतिथि निवासों की जानकारी भी संकलित की गई है। निर्देशिका का यह संस्करण 70 रुपये (पोस्टेज 30/- रुपये

अतिरिक्त) में निम्नांकित पते पर उपलब्ध है। -श्री हंसमुख जैन गांधी, 211, देवधर कॉम्प्लेक्स, छावनी, इन्दौर-452001 (म.प्र.), मो. 09302103513

दिल्ली -श्री लालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ, मानित विश्वविद्यालय के जैन दर्शन विभाग में वीरशासन जयन्ती के अवसर पर समयसार स्वाध्याय कक्षा का उद्घाटन उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। सप्ताह में दो दिन सोमवार व मंगलवार को 3 से 4 बजे तक चलने वाली इस कक्षा में कोई भी कभी भी प्रवेश ले सकता है तथा शंकाओं का समाधान कर सकता है। इस स्वाध्याय कक्षा के संयोजक डॉ. अनेकान्त कुमार जैन हैं।

उदयपुर- नवकार महामंत्र के सामूहिक महाजाप से प्रारंभ 'उपाध्याय पुष्कर मुनि जन्म शताब्दी वर्ष' का गौरव समारोह 10 अक्टूबर 2010 को भव्य रूप से उदयपुर में प्रवर्तक गणेश मुनि जी के सान्निध्य में सम्पन्न होगा। इस समारोह में गुणानुवाद सभा एवं अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। 69 वर्ष तक देश भर में अहिंसा, सत्य, व्यसन-मुक्ति आंदोलन जैसे कई रचनात्मक कार्य एवं साथ ही 135 आगम-पुस्तकों के लेखक इस महान् संत की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए उनके नाम पर समाधि स्थल (स्मारक) 'गुरु पुष्कर पावन धाम' उदयपुर के शास्त्री सर्कल पर भव्य रूप में बनाया गया है। उपाध्याय पुष्कर मुनि जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत देश भर में सेवा, अहिंसा एवं स्वाध्याय के विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

-गणेशलाल गौखरू

कोलकाता- आचार्य श्री हस्ती अध्यात्म चेतना वर्ष के अवसर पर रतन-रिखभ भंसाली चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 22 अगस्त 2010 को महावीर सदन में निःशुल्क जाँच-परीक्षण एवं नेत्र शल्यचिकित्सा शिविर का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें 300 लोग लाभान्वित हुए। शिविर का उद्घाटन श्री जैन रत्न हितैषी श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मधु जी सुराणा एवं श्रीमान रिखबराज जी भंसाली के कर कमलों से हुआ। 13 जून को हुई गुरुहस्ती भजन गीत गायन प्रतियोगिता के प्रथम तीन प्रतियोगिता को भी पुरस्कृत किया गया।

बधाई/चुनाव

डॉ. गोलेच्छा को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

डॉ. महावीर गोलेच्छा (मूल निवासी बालोतरा, राजस्थान) को ग्रीस में आयोजित 9वीं यूरोपियन एपिलेप्सी कांग्रेस में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से पुरस्कृत

किया गया। कोपेनहेगन, डेनमार्क में आयोजित 16 वीं विश्व कांग्रेस में भी उन्हें मस्तिष्कीय रोगों के उपचार के उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए युवा वैज्ञानिक बर्सरी अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. गोलेच्छा के अनुसार आंवले के प्रयोग से मस्तिष्क एवं हृदय रोगों से बचाव किया जा सकता है। इस पुरस्कार को वे पूज्य हस्तीमल जी म.सा. की कृपा का फल मानते हैं। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को डॉ. गुलेच्छा पत्र में लिखते हैं- "आचार्यप्रवर आपके बालोतरा चातुर्मास के समय आपने जो बाल्यकाल में प्रेरणाएँ दी थीं, तथा जो संस्कार के बीज बोये थे, यह सब उसका ही फल है। उन्हीं संस्कारों व प्रेरणाओं का असर है कि आपका यह महावीर विपरीत वातावरण में रहकर भी अपने धर्म, संस्कारों, मर्यादाओं और रत्नवंश के सिद्धान्तों को नहीं भूला है।" वर्तमान में वे भारत सरकार के कई महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। जैन संगठन दिल्ली प्रदेश की युवक विंग के अध्यक्ष तथा विश्व स्वास्थ्य संघठन की टास्क फोर्स के सदस्य हैं। उनका सम्पूर्ण परिवार रत्न संघ के प्रति समर्पित है।

ब्यावर - श्री यशवन्त कुमार गोलेच्छा सुपुत्र श्रीमती पुष्पा हस्तीमल जी गोलेच्छा

ने M N I T जयपुर से इंजीनियरिंग पूर्ण कर Deloitte Consulting India Pvt. Ltd, हैदराबाद में Business Technology Analyst पद पर ज्वाइन किया है। उनकी आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति है। उनको सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल एवं दशवैकालिक के चार अध्ययन कण्ठस्थ हैं।

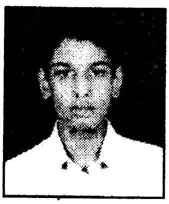

धुलिया- श्री स्वप्निल बोरा पुत्र डॉ. इन्दरचन्द जी बंशीलाल जी बोरा ने मेडिकल सी.ई.टी में 200 में से 189 अंक अर्जित किए हैं। आपने G. S. Medical College मुम्बई में प्रवेश लिया है।

नसीराबाद- प्रतीक मुणोत सुपुत्र श्रीमती शीला मनीषकुमार मुणोत ने सी.ए. के दोनों ग्रुप प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण किए हैं। एतदर्थ बधाई।

जोधपुर- सुश्री कणिका मेहता ने बी.ई. सिविल एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर से आनर्स श्रेणी में उत्तीर्ण की। सुश्री निशा मेहता ने C.A.PCC दोनों ग्रुप की परीक्षा में प्रथम

प्रयास में सफलता अर्जित की तथा जोधपुर में पाँचवां स्थान प्राप्त किया। आप दोनों श्रीमती स्नेह व श्री रमेश जी मेहता की पुत्रियाँ हैं एवं श्रीमती कानकंवर व विजयमल मेहता की सुपौत्रियाँ हैं।

जोधपुर- सुश्री राजुल बोहरा सुपुत्री श्रीमती संध्या-अनिल जी बोहरा, सुपौत्री श्रीमती सुशीला बोहरा द्वारा जी.एन.एल.यू. अहमदाबाद से बी.कॉम., एल.एल.बी. ऑनर्स में उत्तीर्ण कर अमरचन्द मंगलदास, मुम्बई (कॉरपोरेट लॉ फर्म) में नियुक्ति प्राप्त करने पर बधाई।

ब्यावर- सुश्री रिया बावेल सुपुत्री श्रीमती बीना-दिलीप जी बाबेल ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा में पंचमी ग्रेड बिन्दु औसत अंक 09.4 प्रतिशत प्राप्त किए। आप संघ रत्न सुश्रावक श्रीमान् शांतिलाल जी सुराणा की दौहित्री हैं।

जोधपुर- सुश्री कोमल भंसाली सुपुत्री श्रीमती कान्ता एवं श्री विरेन्द्र जी भंसाली

पूर्व युवा अध्यक्ष एवं सहमंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने C.S. Inter की परीक्षा में सम्पूर्ण भारत में 9वां स्थान प्राप्त किया है। आपने पूर्व में भी सीनियर सैकण्डरी परीक्षा में राजस्थान में छठा स्थान, सी.ए. फाउण्डेशन (CPT) में भारत में 21 वीं रेंक तथा B.Com (Hons.) में स्वर्ण पदक अर्जित किया है। आपने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की चतुर्थ कक्षा तक की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जयपुर- सुश्री गरिमा मेहता सुपुत्री श्रीमती सरोज-रविन्द्र कुमार मेहता ने

सी.बी.एस.ई. की दसवीं की परीक्षा में ए-1 ग्रेड के साथ 10.00 प्रतिशतांक से एम.जी.डी. स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आप सुश्रावक स्व. श्री शिवकरण जी मेहता की सुपौत्री हैं।

थाणे- श्री किथ (पीयूष) पुत्र श्री प्रेमचन्द जी जैन ने बी.फार्मेसी के बाद अमरीका से M.S. की पढ़ाई पूर्ण की है। एतदर्थ बधाई।

जलगाँव- सुश्री कल्पिता सुपुत्री श्रीमती सुधा राजेन्द्र जी सांखला ने S.S.C. में 91 प्रतिशत अंक अर्जित किए हैं। आप श्री सागरमल जी सांखला की पौत्री हैं।

श्रद्धाञ्जलि

आचार्य हेमेन्द्रसूरीश्वर जी का देहावसान

पालीताना (गुजरात)- श्री राजेन्द्रसूरि त्रिस्तुतिक गच्छ के आचार्य श्री विजय हेमेन्द्रसूरि जी का 29 अगस्त, 2010 को तीर्थभूमि पालीताना में देवलोक गमन हो गया। अभिधानकोष के निर्माता श्री राजेन्द्रसूरि जी के वे षष्ठ पट्टधर थे। 93 वर्ष की वय में दिवंगत सन्त की पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार मोहनखेड़ा में किए जाने की सूचना है।

कुशालपुरा- श्रद्धेया महासती श्री उमरावकंवर जी म.सा. की शिष्या तपस्विनी महासती श्री उम्मेदकुंवर जी म.सा. का चातुर्मास काल में 9 अगस्त 2010 को यहाँ देवलोकगमन हो गया। आपने महासती कंचनकंवर जी एवं महासती डॉ. सुप्रभा जी म.सा. आदि सती मण्डल के सान्निध्य में संथारा ग्रहण किया। आपने 41, 31, 21, 11 उपवास एवं कर्मचूर की आठ अठाइयां, सिद्धि तप, सर्वतोभद्र तप आदि अनेक तपस्याएँ कीं। आपने पिछले 33 वर्षों से अन्न त्याग कर रखा था।

जलगाँव- अनन्य गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं सेवाभावी सुश्रावक

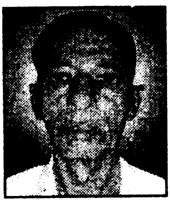

श्री कल्याणमल जी बाफना मूल निवासी भोपालगढ़ का 27 जुलाई 2010 को स्वर्गगमन हो गया। भोपालगढ़ के सुज्ञ श्रावकों में आपका प्रमुख नाम था। आपने अपनी ईमानदारी एवं प्रामाणिकता के कारण व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आपने भोपालगढ़ संघ के मंत्री के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान कीं तथा भोपालगढ़ में पधारने वाले ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। परमश्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पावन प्रेरणा से आप श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी बने। आपने वर्षों तक पर्युषण में विभिन्न क्षेत्रों में पधार कर अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ संघ को प्रदान कीं। आप जोधपुर स्वाध्याय संघ के वरिष्ठ एवं चिन्तनशील स्वाध्यायी होने के साथ संघ-समर्पित सेवाभावी श्रावकरत्न थे। श्री शुभेन्द्रमुनि जी म.सा. के स्थिरवास तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के भोपालगढ़ चातुर्मास में आपकी सेवाएँ उल्लेखनीय रहीं। आप नवदीक्षित साध्वियों को अध्यापन भी कराते थे। आप अपने पीछे तीन पुत्र एवं चार पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गये

थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सूरत पधारने पर आपने ज्ञानचर्चा एवं धर्माराधन का पूरा लाभ लिया।

जलगाँव- कुमारी यज्ञा सुपुत्री श्री कमलकिशोर संघवी (सुपौत्री श्री गुलाबचन्द जी

संघवी) का 30 जुलाई 2010 को 20 वर्ष की लघुवय में हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया। उन्हें प्रतिक्रमण, भक्तामर स्तोत्र कण्ठस्थ थे तथा ग्यारह वर्ष की वय में 9 उपवास किए थे। वे अच्छी गायिका, गिटार-वादक एवं चित्रकार थीं। कई देशों की यात्राएँ कर लेनी वाली दिवंगता का परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

आकोला- धर्मपरायणा सुश्राविका निर्मला बाई धर्मपत्नी श्री चम्पालाल जी

खटोड़ का 70 वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। सामायिक, प्रतिक्रमण करना आपके प्रतिदिन का नियम था। आपने 3 वर्ष स्वाध्यायी के रूप में भी सेवाएँ दी तथा अठाई तप के साथ ही वर्षीतप की आराधना भी की। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ, तपस्विनी सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री

ताराचन्द जी पारख लूणी वाले का शतायु में संथारापूर्वक 15अगस्त 2010 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन 5 से 7 सामायिक करती थीं तथा विगत 50 वर्षो से चौविहार कर रही थीं। आपने दो वर्षीतप और 20 अठाई तप की आराधना की।

जोधपुर- श्रीमती किरणकंवर धर्मपत्नी श्री भभूतराज जी मोहनोत का 72 वर्ष की

उम्र में 20 जून 2010 ज्येष्ठ शुक्ला नवमी को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहजता, सरलता, सेवाभावना एवं सादगी से परिपूर्ण था। मिलनसारिता का गुण होने से आप परिवारजनों में प्रिय थी तथा परिवारजनों की सेवा में हमेशा तत्पर रहती थी। आपकी सबसे छोटी बहिन दीक्षा ग्रहण कर जिनशासन की प्रभावना कर रही है। दीक्षा के अवसर पर आपने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के श्रीमुख से 23 वर्ष पूर्व आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया था। आप अष्टमी एवं चतुर्दशी को हरी सब्जियों एवं रात्रि-भोजन का त्याग रखती थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

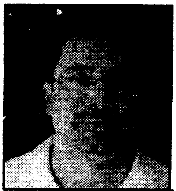

भीलवाड़ा- श्री देवेन्द्र बोहरा (सी.ए.) सुपुत्र श्री धनपतलाल जी बोहरा(सी.ए.) का 42 वर्ष की वय में 24 जुलाई 2010 कोआकस्मिक निधन हो गया। वे धर्मनिष्ठ थे।

सिकन्द्राबाद- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुशीलाकंवर जी मकाणा का 19 जुलाई 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप एक आदर्श श्रमणोपासिका थीं। नित्यप्रति सामायिक-स्वाध्याय के साथ व्रत-प्रत्याख्यान करने वाली सुश्राविका सन्त-सतियों की श्रमणोचित सेवा भक्ति में अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे पुत्र सोहनलाल जी एवं पौत्र विक्रम सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

सोलापुर- तपसाधिका श्रीमती सुन्दरबाई धर्मपत्नी श्री कन्हैयालाल जी लुणावत

मूथा का 5 दिवसीय संथारे के साथ समाधिमरण हुआ। आपने 27 वर्षी तप, 30,27,25,23,21,16,15,11 की तपस्याएँ की हैं। इसके साथ सिद्धि तप, एकाशन से कनकावली आदि तप भी किए। आप नित्य 11 से 15 सामायिक व उभयकाल प्रतिक्रमण करती थीं।

जयपुर- तपाराधिका धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमला देवी धर्मपत्नी श्री

चन्द्रसिंह जी बोथरा का 28 अगस्त 2010 को स्वर्गवास हो गया। आपने अपने जीवनकाल में अठाई, मासक्षपण, ओलीपर्व-आराधन आदि कई तप किये। सम्पूर्ण बोथरा परिवार की रत्न संघ के संत-सतीवृन्द के प्रति पूर्ण श्रद्धा-भक्ति है। आप आपने पीछे सुपुत्र श्री सरदारसिंह जी, ताराचन्द जी बोथरा का भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

जोधपुर- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष श्री पारसमल जी टाटिया का 30 अगस्त 2010 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, सेवानिष्ठ एवं गुणों से ओत-प्रोत टाटिया जी का सम्पूर्ण जीवन संघ एवं समाज को समर्पित रहा। विभिन्न गोशालाओं एवं अहिंसा के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं को आप मुक्तहस्त से सहयोग करने में तत्पर रहते थे। प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय की आराधना करने के साथ आप नवकारसी, पौरसी, रात्रि-भोजन त्याग आदि नियम करते थे। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता

आदि सद्‌गुणों से युक्त था।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

निन्दा-प्रशंसा से रहें अप्रभावित

श्री दर्शन जैन

संसार में गुण देखने वाले भी होते हैं अवगुण देखने वाले भी, स्तुति करने वाले भी होते हैं और निंदा करने वाले भी। अतः हमें लोगों की निन्दा-स्तुति से हमेशा मुक्त रहने का अभ्यास करते रहना चाहिए। आज निन्दा करने वाले कल स्तुति करने लग जाते हैं और आज स्तुति करने वाले कल निन्दा कर सकते हैं। यदि इनसे हम प्रभावित होते रहे तो हमारी स्थिति उस कठपुतली के समान हो जाएगी जो नचाने वाले के अनुसार नाचती है। लोगों द्वारा की गई निन्दा स्तुति के डोरे के आधार से नाचते रहेंगे, सुख-दुःख के जाल में छटपटाते रहेंगे तो सुख-दुःख से अतीत जीवन का आनन्द प्राप्त नहीं कर सकेंगे। हमें चिंतन करना चाहिए कोई हमारी प्रशंसा करे तो क्या हमारे गुण बढ़ते हैं? क्या निन्दा से हमारे गुण नष्ट हो जाते हैं? नहीं, ऐसा कुछ नहीं होता है। हम यदि अच्छे हैं तो निन्दा से बुरे नहीं हो जाते और यदि बुरे हैं तो स्तुति से अच्छे नहीं बन जायेंगे। कहने वालों का अपना-अपना दृष्टिकोण होता है। प्रायः ऐसा होता है कि जिन लोगों को हमारे द्वारा लाभ पहुँचता है, वे हमारे प्रशंसक बन जाते हैं और जिनकी इच्छाओं की पूर्ति हमारे द्वारा नहीं होती वे हमारे निन्दक बन जाते हैं। छद्मस्थों के द्वारा की गई निन्दा-प्रशंसा से प्रभावित होकर हम अपने जीवन का अमूल्य समय नष्ट करते हैं साथ ही राग द्वेष के परिणामों से कर्मों का बंध करते हैं। यदि हम आनन्द में रहना चाहते हैं तो अपने गुण-अवगुण का स्वयं अवलोकन करें, क्योंकि दूसरों की अपेक्षा हम स्वयं अपने बारे में ज्यादा जानते है। हमारा यही पुरुषार्थ हो कि हमारे अवगुण दूर होवे और गुणों में वृद्धि हो। हम स्वयं अपने जीवन के निर्माता हैं। लोग हमारा मूल्यांकन व्यवहार के आधार पर करते हैं, उसमें वास्तविकता होना जरूरी नहीं है। इसमें हम भ्रमित हो जाते हैं। इस भ्रम से ऊपर उठकर हम निन्दा-प्रशंसा से प्रभावित न होकर सम्यक् पराक्रम करें।

'लोंकोशाह क्रान्ति' से साभार

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा क्रियान्वित

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक,इतिहास मार्तण्ड, युग प्रवर्तक, युगमनीषी, आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष 2011 को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई। इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है।

इस योजना के माध्यम से गत चार वर्षों से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही हैं। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार हैं-

नियमावली

卐 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

卐 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

卐 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

卐 आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा।

卐 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

卐 चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेगें। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।

卐 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकुलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए। **आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-** B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.- 044-42728476 ,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.com

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर है। आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है। आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन पत्र Download कर सकते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

720 श्री खीम जी आर. शाह, विले पार्ले(वेस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12721 Smt. Kalpanaji Katariya,Ilkal, Distt. Bijapur (Karnataka)
12722 Shri Mahaveer Chand ji Baghmar, Mysore (Karnataka)
12723 श्री बलवीर जी जैन, एन-485, सेक्टर नं. 25, जलवायु, नोयडा (उत्तरप्रदेश)
12724 श्री रणधीर जी जैन, आर.जेड.जी 127, सीतापुरी पार्ट द्वितीय, नई दिल्ली
12725 श्री उमेश जी जैन, जैन इलेक्ट्रोनिक्स,सिक्को 86, सेक्टर नं. 40 सी,चण्डीगढ़ (पंजाब)
12726 सुश्री तनुजा जी जैन, द्वारा : किंग स्ट्रेलर कोर्ट, नोयडा (उत्तरप्रदेश)
12727 श्री अजीत प्रसाद जी जैन, बी-48, न्यू गुप्ता कॉलोनी, दिल्ली
12728 श्री भरतेश जी जैन, जी 26/133, सेक्टर 3, रोहिणी, नई दिल्ली
12729 श्री शैलेश जी जैन, 1/71, सेक्टर-2, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद (उत्तरप्रदेश)
12730 Shri Nirmal Kumar ji Dhoka, Chennai (Tamilnadu)
12731 श्री सुशील कुमार जी जैन, नसिया कॉलोनी, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
12732 श्री नीतिन जी जैन, सेठ हाउस, साईनाथ खिडकिया, करौली (राजस्थान)
12733 श्री दिनेशचन्दजी जैन(अध्यापक), सूरजपोल गेट के पास, गोपालगढ़, भरतपुर (राज.)
12734 श्री भूपेशकुमार जी जैन, ए.डी.एम. कॉलोनी, मु.पोस्ट–रेणकूट,जिला–सोनभद्र (उ.प्र.)
12735 श्री अरिहंतकुमार जी जैन, न्यू जैन कॉलोनी,वर्धमाननगर, हिण्डौनसिटी, करौली (राज.)
12736 श्री शशांकजी जैन, वर्धमान नगर, जैन मंदिर के पास, हिण्डौनसिटी, करौली (राज.)
12737 श्री धीरज जी जैन, जैन मंदिर के पास, वर्धमान नगर, हिण्डौनसिटी, करौली (राज.)
12738 श्री नीतेश कुमार जी जैन, पोस्ट–पहरसर, तहसील-नदबई, जिला–भरतपुर (राजस्थान)
12739 श्री विपुल जी जैन, पुराना बयाना बस स्टैण्ड, वकील कॉलोनी, भरतपुर (राजस्थान)
12740 श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन,157 ए/1,वेस्ट अर्जुननगर,न्यू वे स्कूल के पास,आगरा(उ.प्र.)
12741 श्रीमती प्रेमलता जी जैन, मोहन गौरव पार्षद के पीछे, कटरा, भरतपुर (राजस्थान)
12742 श्री बलवीरचंद जी मेहता, 247 ए, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर (राजस्थान)
12743 श्री महावीर कुमार जी रांका, सदर बाजार, पोस्ट–बोहेडा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
12744 श्री प्रदीप जी धींग, पोस्ट–बोहेडा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
12745 श्री संजय सिंह जी पारख, टी-14, महावीर नगर, जयपुर (राजस्थान)
12746 श्रीमती अंजलि जी पीतलिया, 11-ए, मोक्ष मार्ग, अशोक नगर, उदयपुर (राजस्थान)
12747 श्री संजय कुमार जी जैन, मूडिया साद, तहसील–वैर, जिला–भरतपुर (राजस्थान)
12748 श्री अरविन्दकुमार जी जैन (व्याख्याता), इन्दिरापुरम्, जिला–गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश)
12749 श्री विकास कुमार जी ढेडिया, ब्रह्मानन्द मार्ग रोड़, ब्यावर, जिला–अजमेर (राजस्थान)
12750 श्री माणकचन्द जी नाहर, मुकाम–चांगोटोला, नगरवाडा, जिला–बालाघाट (म.प्र.)
12751 श्री इन्द्रचन्द जी वैद्य, मुकाम–चांगोटोला, पोस्ट–नगरवाडा, जिला–बालाघाट (म.प्र.)

12752 श्री शांतिलाल जी मोहनोत, डी-120, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार

4100/- श्री मनोज कुमार जी रमेशचन्द जी कोठारी, जलगाँव, सुश्री कोमल जी कोठारी की जैन भागवती दीक्षा दिनांक 15 मई 2010 को आचार्यश्री के मुखारविन्द से सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री मदनराज जी मेहता, जोधपुर (हाल निवासी बैंगलोर), अपने सुपौत्र एवं श्री कमलराज जी मेहता के पुत्र श्री बबलु का दिनाँक 30.07.2010 की पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- सुश्री राजुल जी बोहरा सुपुत्री श्री अनिल जी बोहरा एवं सुपौत्री श्री सुशीला जी बोहरा, जोधपुर की नियुक्ति अमरचन्द मंगलदास, मुम्बई (कारपोरेट लॉ फर्म) में होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सरदारसिंह जी, ताराचन्द जी बोथरा, जयपुर, मातुश्री श्रीमती कमलादेवी जी बोथरा धर्मपत्नी श्री चन्द्रसिंहजी बोथरा का 28 अगस्त को स्वर्गगमन होने पर उनकी स्मृति में सादर भेंट।

1500/- श्री आनन्द जी कनिका जी भंसाली, अमेरिका (यू.एस.ए.), सुपुत्र एवं पुत्रवधू श्रीमान् विजयराज जी भंसाली द्वारा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली चातुर्मास में दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1111/- श्री बोथरा जी, तालोढ़ा सप्रेम भेंट।

1101/- श्री माधुमल जी लोढ़ा सुपुत्र श्री माणकमल जी लोढ़ा, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री मनीष जी लोढ़ा के 16 उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री भभूतराज जी मोहनोत, जोधपुर, धर्मपत्नी श्रीमती किरणकँवर जी मोहनोत का स्वर्गवास दिनांक 20.06.2010 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री शान्तिलाल जी राजेन्द्रकुमार जी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), जोधपुर, श्रीमती मंजूकँवर जी धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी ओस्तवाल के द्वारा अठाई की तपस्या के पच्चक्खाण आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से ग्रहण के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती चुकीकँवर जी धर्मपत्नी श्री माँगीलाल जी गोलेच्छा (गिरिवाले), ब्यावर, सुपौत्र श्री यशवन्त जी गोलेच्छा सुपुत्र श्रीमान् हस्तीमल जी गोलेच्छा के डिलाइट कन्सल्टिंग इण्डिया लिमिटेड, हैदराबाद, बिजेनस टैक्नोलाजी अनिलिस्ट के पद पर नियुक्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती विमला देवी जी बाफना, चेन्नई, श्री त्रिलोकचन्द जी की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री सागरमल जी छाजेड़, चेन्नई, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं सती मंडल के दर्शन लाभ प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री लेखराज जी पारख, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री शिखा पारख के नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी से लॉयर बनने तथा मुम्बई में मजुमदार इण्टरनेशनल फर्म में सलेक्शन होने पर भेंट।

1100/- श्री कनकमल जी, कुशलराज जी, पदमचन्द जी कोठारी-निमाज-पाली, चि. महावीर

जी कोठारी का शुभ विवाह दिनाँक 19 जुलाई, 2010 को सौ. प्रियंका सुपुत्री श्री दौलतराज जी बोहरा, पीपाड़सिटी के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री प्रेमराज जी, भीकमचन्द जी, रतनचन्द जी, धनराज जी, सायरचन्द जी, राजेन्द्र जी पारख, जोधपुर, अपनी माताजी श्रीमती शांतिदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री ताराचन्द जी पारख का 15 अगस्त, 2010 को संथारापूर्वक देवलोक गमन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री विजयमल जी, रमेश जी, रवि जी मेहता, जोधपुर, सुश्री कनिका के बी.ई. ऑनर्स श्रेणी से तथा सुश्री निशा सुपुत्री श्री रमेश जी मेहता के सी.ए.के पी.सी.सी. ग्रुप में प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण होने तथा कुणाल मेहता सुपुत्र श्री रवि जी मेहता के सी.बी.एस.ई.दसवीं बोर्ड में 82 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण करने की खुशी में भेंट।

1011/- श्रीमती कुसुम जी धर्मपत्नी श्री पी.एम.कुम्भट, जोधपुर, अपनी नाती श्री नयन सुपुत्र श्रीमती बेला धर्मपत्नी श्री सुभाष जी पारख (सुपौत्र स्व. श्री पारसमल जी प्रसू.) के सी.ए. इन्टर परीक्षा में 33 वीं रेंक आने की खुशी में भेंट।

1001/- श्रीमती सरोज जी दिलीप जी भंडारी, रत्नागिरि, स्व. श्रीमान् सुगनचन्द जी भंडारी (जोधपुर वाले) की पुण्य स्मृति दिनांक 17 अगस्त, 2010 के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्रीमती कौशल्या जी रंगरूपमल जी एवं माधुरी जी चोरड़िया, चेन्नई, श्री रंगरूपमल जी चोरड़िया सपरिवार द्वारा पाली में विराजित आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं सन्त-सती मंडल के दर्शन लाभ प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

600/- श्री प्रकाशचन्द जी पगारिया, अपर ज़िला एवं सेशन न्यायाधीश, बांसवाड़ा, सहायतार्थ सप्रेम भेंट।

501/- श्री सुरेशमल जी, नरेशमल जी गांग, जोधपुर, अपने पिताजी श्री सोहनमल जी गांग की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री आयुष जी बोहरा, दिल्ली, अपनी पड़दादी स्व. श्रीमती बदनकंवर जी बोहरा धर्मपत्नी श्री बस्तीमल जी बोहरा की प्रथम पुण्य तिथि दिनाँक 09 जुलाई 2010 पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री धर्मीचन्द जी ओस्तवाल, गोटन (राज.), श्रीमती रिंकु धर्मपत्नी श्री धर्मीचन्द जी ओस्तवाल के नौ की तपस्या एवं श्री नेमीचन्द जी ओस्तवाल के आठ की तपस्या में राजेश कुमार जी, धर्मीचन्द जी गोटन वालों की तरफ से भेंट।

500/- श्री त्रिलोकचन्द जी, शांतिचन्द जी, विजयकुमार जी लुणावत-अणीचा (इन्दौर), श्रीमती मधुबाला धर्मपत्नी श्री रमेशचन्द जी के 21 की तपस्या, श्रीमती सीता देवी, ओमप्रकाश जी ओस्तवाल के 15 की तपस्या, श्रीमती सुन्दर देवी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्द जी दूढडा के आठ की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री जयेश जी बोथरा, दिल्ली, अपनी पड़नानी स्व. श्रीमती बदनकंवर जी बोहरा धर्मपत्नी श्री बस्तीमल जी बोहरा की प्रथम पुण्य तिथि दिनाँक 09.07.2010 पर पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती विजया जी मेहता, होसपेट, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास काल में पाली में दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री धनपतलाल जी बोहरा, भीलवाड़ा, प्रिय देवेन्द्र जी बोहरा (सी.ए.) का आकस्मिक

स्वर्गवास दिनांक 24.07.2010 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री सुभाषमल जी सुमित कुमार जी लोढ़ा, चेन्नई, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली चातुर्मास में दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री सरदारमल जी उमरावमल जी ढढ्ढा, जयपुर, श्रीमती लाडकँवर जी ढढ्ढा का स्वर्गवास दिनांक 07.08.2010 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री सोहनलाल जी विक्रम कुमार जी मकाणा, सिकन्दराबाद, पूजनीया श्रीमती सुशीला कँवर जी धर्मसहायिका श्रीमान् सम्पतराज जी मकाणा की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री अमरचन्द जी एवं श्रीमती सुकनकंवर जी सदावत मेहता, जोधपुर, पूज्य आचार्यप्रवर, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा के सरस्वती नगर पधारने पर दर्शन लाभ एवं महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सरस्वती नगर में चातुर्मास हेतु प्रवेश के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, श्री लोकेन्द्र जी मोदी, जोधपुर, श्रीमती विमला बाईसा धर्मपत्नी श्री रणजीत सिंह जी भंडारी की 21 वीं पुण्य स्मृति में सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

25000/- श्री आनन्द जी चौपड़ा (जोधपुर वाले), जयपुर, पूर्व न्यायाधिपति श्रीमान् जसराज जी चौपड़ा की पुस्तक 'अध्यात्म की ओर' के पुनः मुद्रण हेतु अर्थ सहयोग प्राप्त।

1500/- श्री प्रकाशचन्द जी पगारिया, अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश, बांसवाड़ा, सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार

500/- श्री ज्ञानराज अबाणी सेवा ट्रस्ट, जोधपुर, की ओर से भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

1,32,000/- श्री प्रमोदजी, राजकंवर जी महनोत, जयपुर (राज.), रत्नसंघ में मई-जून-2010 में हुई दीक्षा के शुभ अवसर पर भेंट।

36,000/- श्री रतनराज जी भण्डारी, कांदिवली-मुम्बई (महा.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री बंसत जी मोदी, नीमच (म.प्र.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री हरकचंदजी, विरेन्द्रजी, राकेशजी सदावत मेहता, जोधपुर (राज.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, ब्यावर (राज.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्रीमती प्रेमकंवर मिलापचन्द जी बुरड़, ब्यावर (राज.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्रीमती कमलेशजी, जयन्तीलालजी, आशीषजी, अमितजी मेहता, जोधपुर (राज.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री प्रकाशचन्द जी, आशीषजी, अमित जी जोशी, चेन्नई (राज.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्रीमती प्रेमकंवर मिलापचन्द जी बुरड़, ब्यावर (राज.), स्व. श्रीमती चंचलबाई जीतमल जी सांखला-कोटा वालों की स्मृति में भेंट।

12,000/- श्री सुरेन्द्र जी, नरेन्द्र जी भण्डारी, बैंगलोर (कर्नाटक), स्व. श्री राजेन्द्र कुमार जी भण्डारी की स्मृति में भेंट।

12,000/- श्री पी.एम.चोरडिया(मैसर्स अमृतकंवर कल्याणमल चोरडिया ट्रस्ट), चेन्नई(तमि.), आचार्य हस्ती शताब्दी वर्ष को 'अध्यात्म चेतना वर्ष' मनाने के उपलक्ष्य में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

भाद्रपद शुक्ला 5	रविवार	12.09.2010	सम्वत्सरी महापर्व
भाद्रपद शुक्ला 8	बुधवार	15.09.2010	अष्टमी
भाद्रपद शुक्ला 14	बुधवार	22.09.2010	अनन्त चतुर्दशी, पक्खी
आश्विन कृष्ण 8	शुक्रवार	01.10.2010	अष्टमी
आश्विन कृष्ण 14	बुधवार	06.10.2010	चतुर्दशी
आश्विन कृष्ण 30	गुरुवार	07.10.2010	पक्खी
आश्विन शुक्ल 7	गुरुवार	14.10.2010	आयंबिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ल 8	शुक्रवार	15.10.2010	अष्टमी
आश्विन शुक्ल 10	रविवार	17.10.2010	आचार्य श्री भूधर जी महाराज की पुण्यतिथि
आश्विन शुक्ल 15	शुक्रवार	22.10.2010	आयम्बिल ओली पूर्ण

पाठक-प्रतिक्रिया

'जिनवाणी पत्रिका' उत्तम पत्रिका है। इसका मुख्य कारण इस पत्रिका में आगमिक आलेखों का समावेश है। इनके पठन से ज्ञानोपार्जन होता है। अत्यन्त अनुकरणीय एवं लाभप्रद आलेख प्रत्येक अंक में पढ़ने को मिलते हैं। कई आचार्यों, संतों, मुनियों का गहरा अध्ययन प्रशंसनीय है। एक बात और, जिनवाणी मेरे घर नहीं आती, मैं पड़ौसी से लेकर इस पत्रिका का पूरा उपयोग यानी ज्ञानार्जन के साथ कर्म-निर्जरा करती हूँ। एक-एक अक्षर कीमती मोती के समान अमूल्य एवं महत्त्वपूर्ण हैं। आगमों को हम कब पढ़ेंगे, कब समझेंगे? हमारे क्षेत्र में साधु-सन्तों का विचरण नाम मात्र है, परन्तु मैं अपना मन-मलिन नहीं करती, क्योंकि इस बेजोड़ पत्रिका में आगमों, महापुरुषों के जीवन एवं नव-तत्त्व पर सुस्पष्ट मार्गदर्शन प्राप्त होता है। इन्हें सामायिक में पढ़कर ऐसा लगता है जैसे कोई साधु जिनवाणी का प्रत्यक्ष उपदेश दे रहे हैं।

- श्रीमती माया लूनावत, करेली (म.प्र.)

अध्यात्म चेतना वर्ष मनाएँ
बारह व्रती बनें
आओ प्रत्याख्यान ग्रहण करें

मान्यवर,

सादर जय जिनेन्द्र!

युगमनीषी युग प्रभावक परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 **श्री हस्तीमल जी म.सा.** का जन्म-शताब्दी वर्ष पूज्यपाद के सुशिष्य परम पूज्य आचार्यप्रवर **श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, परम पूज्य उपाध्याय प्रवर **श्री मानचन्द्र म.सा.** एवं गुरु भगवंतों तथा पूज्य महासतीवृन्द की प्रेरणा एवं मंगलमय आशीर्वाद से अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

परम पूज्य आचार्य भगवन्त का साधनामय जीवन हमें भी व्रतधारी श्रावक बन कर अपनी अध्यात्म चेतना के रूपान्तरण का संदेश देता है। तीर्थंकर भगवन्तों के श्रावक-श्राविकाओं की गणना व्रतधारी श्रावकों की अपेक्षा से है। जन्मशताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर हम सब व्रतधारी श्रावक बनें, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना में आगे बढ़ें यही हमारी, हमारे आराध्य गुरुवर्य की पावन स्मृति में सच्चा श्रद्धा-समर्पण होगा। हम जीवन पर्यन्त के लिये पूर्ण बारह व्रत ग्रहण कर सकें, यह सर्वश्रेष्ठ होगा, पर कदाचित् प्रारंभ में ऐसा न कर पायें तो-

1. कठिन प्रतीत होने वाले एकाध व्रत के सिवाय शेष व्रत अवश्य अंगीकार करें। युवा साथी भी कम से कम पाँच अणुव्रत अवश्य अंगीकार करें।
2. आगे के व्रतों में प्रारम्भिक तौर पर कुछ आगारों के साथ भी व्रत अंगीकार किये जा सकते हैं।
   (1) पन्द्रह कर्मादान का त्यागः वर्तमान व्यवसाय के अतिरिक्त ऐसे नये व्यापार व्यवसाय का त्याग।
   (2) नवमाँ सामायिक व्रतः अपने ग्राम/नगर में रहते हुए नित्यप्रति एक सामायिक अवश्य करें। किसी दिन न हो सके तो दूसरे दिन पूर्ति करने का लक्ष्य रहे, अन्यथा महीने भर में किसी भी दिन एक से अधिक सामायिक कर पूर्ति अवश्य हो।
   (3) दसवाँ देशावगासिक व्रतः प्रतिदिन प्रातःकाल चौदह नियमों को अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार ग्रहण करना तथा तीन मनोरथ का चिन्तन करना।
   (4) ग्यारहवाँ पौषध एवं दया व्रतः वर्ष में कम से कम दो उपवास के साथ रात्रि पौषध या कम से कम दो दया व्रत (कम से कम सात प्रहर की दया) करना।

प्रति वर्ष अपने द्वारा ग्रहण किये गये व्रतों की समीक्षा कर मर्यादा को सीमित कर व्रताराधना में आगे बढ़ने का लक्ष्य रखें।

अध्यात्म चेतना वर्ष कार्यक्रम व व्रताराधन के बारे में कोई भी सहयोग, समाधान या स्पष्टीकरण अपेक्षित हो तो आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करें।

निवेदक

आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति
एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2636763, 2641445

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

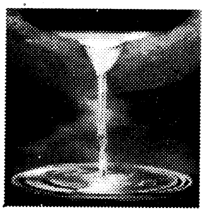

Electric Arc Furnace

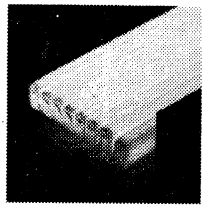

Billets

Rolling Mil

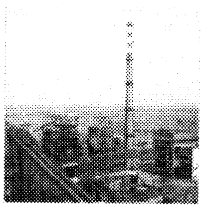

Captive Power Plant

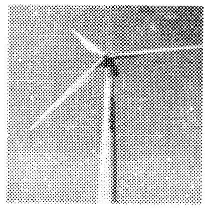

Windmill

With best wishes from

ISO 9001:2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/

Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

NO. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

युवक परिषद् की धार्मिक गतिविधियों की जानकारी के लिए SMS सेवा शुरु की गई है। कृप्या आप अपने सभी परिवारजनों के नाम एवं Mobile No. 09444081237 पर SMS या E-mail (prem9444081237@yahoo.in) करावें। – हरीश कवाड़, चैन्नई (उपाध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्) 09500114455, प्रेम छाजेड़, चैन्नई (संयोजक) 09444081237

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाईये,
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

आप अपने निकटतम क्षेत्र के सभी गुरु भाईयों के प्रति आदर एवं प्रेम के साथ उनके व्यावहारिक एवं धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु इस योजना के आवेदन पत्र भरवाकर इस योजना के उद्देश्यों को सफल बनाने में सहयोगी बनें।

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/– के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (09414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (09414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
7. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगांव (09422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें –

B. Budhmal Bohra

No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.) • Telefax : 044-42728476

नोट – आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, 2010 है।

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 9 ★ मूल्य : 10 रु.
10 सितम्बर, 2010 ★ भाद्रपद, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।